# प्रार्थना :

## क्यों और कैसे करें

कृपाल सिंह

'प्रार्थना :
क्यों और कैसे करें'

मूल पुस्तक :
**'Prayer - Its Nature and Technique'**

**प्रकाशन क्रम :**
प्रथम अंग्रेज़ी संस्करण : 1959

प्रथम हिंदी संस्करण: 2021



---

**मुद्रक :**

# समर्पण

*सर्वशक्तिमान प्रभु को,*
*जिसकी प्रभु-सत्ता आज दिन तक आए*
*पूर्ण पुरुषों द्वारा काम करती रही*
*और*
*श्री हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज को,*
*जिनके चरणों में बैठ कर लेखक ने*
*नाम का अमृत रस-पान किया।*

*मेरा कीआ कछू न होइ ॥*
*करि है रामु होइ है सोइ ॥*

— नामदेव जी

# प्रार्थना

**इस** आधुनिक समय में 'आध्यात्मिक प्रार्थनाओं' की यह अत्याधिक विशिष्ट और सहायक पुस्तक है। प्रार्थनाओं के सभी पहलुओं और क़िस्मों को प्राथमिक अवस्था और द्वैत भाव से लेकर अन्तिम अवस्था 'बिना रुके प्रार्थना,' जहाँ सभी कुछ एक प्रार्थना ही है, का विवेचन है। इसके लेखक, जो विश्व विख्यात संत और विश्व सर्वधर्म संगम के अध्यक्ष रहे, ने उस अर्जित ज्ञान, जिसे उन्होंने सैद्धान्तिक तौर पर एक लम्बे अर्से तक धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन से और ब्यास के महान संत बाबा सावन सिंह जी के चरणों में निजी अनुभव के तौर पर प्राप्त किया, का उत्कृष्ट नमूना पेश किया है।

यह पुस्तक उसी अर्जित ज्ञान के फलस्वरूप है। इसमें इसका लेखक प्यार और शान्ति के साथ झलकता है।

पुस्तक के अन्त में सभी धार्मिक परम्पराओं की प्रार्थनाओं का संग्रह दिया गया है, जिसमें अधिकतर प्रार्थनाएँ 'आदि ग्रंथ' से और कुछ अन्य प्राचीन ग्रंथों से ली गई हैं।

परम संत कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा अंकित प्रार्थनाओं का संबंध मानव जाति की महान आध्यात्मिक परम्परा से है और हर एक व्यक्ति इससे मार्ग दर्शन प्राप्त करके अपने दिव्य जीवन के पथ में इसका उपयोग कर सकता है।

— डॉ॰ एनीमारिया सिजमल
प्रोफ़ेसर ऑफ़ इंडो-मुस्लिम कल्चर
हारवर्ड यूनिवर्सिटी

# प्रस्तावना

> मनुष्य रोटी मात्र से ही नहीं, बल्कि उस हर एक शब्द से जीवन पाता रहेगा, जो प्रभु-मुख (संत) से प्रकट होता रहता है।
>
> — पवित्र बाइबिल (मत्ती 4:4)

**प्रार्थना** 'जीवन का नमक' है और हम इसके बिना रह भी नहीं सकते। अपनी हर प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करना इंसानी स्वभाव में शामिल है। हम में से अधिकतर यह नहीं जानते कि हम वास्तव में प्रार्थना किसलिए और किस प्रकार करें, ताकि हमारी प्रार्थना बलवती बन कर, हमें परमात्मा की अपार दया का भागीदार बना दे।

एक सार्थक प्रार्थना का रहस्य न तो प्रार्थना में प्रयुक्त शब्दों में, न ही इसमें प्रयुक्त किसी समय सीमा, और न ही किसी पूरज़ोर कोशिश में निहित है, बल्कि वह तो एकाग्रचित ध्यान की इस अवस्था में है, जो कि आत्मा के अपने निजस्थान (दो भ्रूमध्य आँखों के पीछे) किया जाता है, ताकि हमारी प्रार्थना आत्मिक हो जाए। फलदायक प्रार्थना का सबसे उत्तम कुदरती स्वरूप वह है, जिसमें आत्मा की दर्दभरी पुकार हो, जो मात्र शब्दों का समूह ही न हो, और केवल ज़ुबान या मस्तिष्क की ही उपज न हो, बल्कि सुरत की ज़ुबान हो। इस तरह की प्रार्थना एक आध्यात्मिक ऊर्जा (शक्ति) को उत्पन्न करती है और प्रसारित करती है– जिससे कि सारी ब्रह्मांडीय शक्तियाँ खिंच कर एक हो जाती हैं और हमारे हर काम को अच्छे से अच्छा रूप प्रदान करती हैं।

एक सच्ची प्रार्थना लगातार चलने वाली प्रक्रिया है, जो उसकी बनावट, समय और स्थान से बंधी नहीं होती। अन्तत्वोगत्वा यह सहज अवस्था (सम्पूर्ण एकरसता) और संतुष्टि को प्राप्त होती है, जिससे सभी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। प्रार्थना की यह सबसे ऊँची अवस्था है। प्रार्थना

यहाँ प्रार्थना नहीं रहती, बल्कि इसमें हमारी अवस्था धीरे–धीरे आन्तरिक चेतन मंडलों से होती हुई महाचेतन आन्तरिक मंडलों में जाग उठती है, जिसमें प्रभु–इच्छा पूर्णतया अपने आपको उसके समक्ष प्रकट कर देती है। यही प्रार्थना का सार है और इसकी प्राप्ति की जानकारी ही इसका उद्देश्य है।

पुस्तक के अन्त में विभिन्न संतों और धर्म–ग्रन्थों से प्रार्थना के नमूने जो कि वर्गीकृत रूप में हैं, परमार्थाभिलाषियों के लाभार्थ दिए जा रहे हैं।

— कृपाल सिंह

**1** जुलाई, **1959**

# विषय सूची

# प्रार्थना

> प्रार्थना वह ख़ास कुंजी है, जो प्रभु की बादशाहत का रास्ता खोलती है।

**प्रार्थना** आत्मा की एक दर्द भरी पुकार है जो पीड़ा या helplessness की स्थिति में, अपने से अधिक समर्थ और उच्च हस्ती के आगे, सुख और शान्ति के लिए की जाती है। आमतौर पर यह प्रभु या सत्स्वरूप हस्ती (वक्त के गुरु), जो कि जीवन की दुखदाई स्थितियों में मन को धैर्य और शान्ति प्रदान करने में समर्थ है, के समक्ष की जाती है।

*प्रार्थना शुद्ध अभिलाषा है हृदय की,*
*कही गई हो या रहे अनकही,*
*इक छुपी आग का वेग है ये,*
*है अन्तःकरण में हलचल ये।*

— वाइकाउन्ट मॉन्टगोमेरी (भजन)

इस वैज्ञानिक युग में एक सांसारिक बुद्धिजीवी, मानव जीवन को दूसरी मशीनों की भाँति ही समझता है, जो कि अंधाधुंध 'कार्य–कारण के नियम' ('Principle of Cause & Effect') के अनुसार चलती जाती हैं और जिनके पीछे कोई मार्गदर्शक हाथ प्रतीत नहीं होता। लेकिन, सृष्टि और इंसान के लिये यांत्रिकी धारणा (mechanistic concept) के साथ एक जैविक धारणा (organic concept) भी है। 'कार्य–कारण' का सिद्धांत जो मानवीय कार्यों में दृष्टिगोचर होता है, नकारा नहीं जा सकता। जैव सिद्धांत के व्याख्याकार इस 'कार्य–कारण' के नियम के पीछे प्रभु के हाथ या प्रभु के नियम का अनुभव करते हैं। अतः प्रभु का नियम ही वह प्राण–शक्ति (motor

power) या अन्तःबल है, जहाँ से सभी विचारणीय सिद्धांतों, वे वैज्ञानिक हों चाहे नैतिक, का निकास होता है और ये सब सिद्धांत उस अदृश्य शक्ति की इच्छा और उद्देश्य के अनुरूप काम हैं। दुर्भाग्यवश हम केवल सतह की धाराओं को देख पाते हैं, उसकी अन्तरीय गहराइयों में नहीं पहुँच पाते हैं।

हम देखते हैं कि संसार में एक भौतिकवादी मनुष्य सारे भौतिक साजो–सामान के होते हुए भी, वास्तव में असहाय रहता है। जितना उसके पास होता है, वह उससे संतुष्ट नहीं होता, बल्कि उससे अधिक प्राप्त करने के लिए वह अन्धाधुंध कार्य करता रहता है। अपनी इस इच्छापूर्ति के लिए वह भले और बुरे सभी साधन अपनाता है; उसकी दौलत, पद, शक्ति, सम्पन्नता और ख्याति उसे किसी भी तरह सन्तुष्टि देने में असमर्थ रहती हैं। बीमारी, कमज़ोरी और मृत्यु का सामना करने में वह अपने आप को पहले से भी अधिक असहाय पाता है। उसका मन हमेशा काल्पनिक और अनकहे डर का शिकार रहता है। जीवन रूपी समुद्र में वह तट को न पाकर बग़ैर पतवार के भटकता रहता है, जिसे न जाने कब कोई तूफ़ान या लहर शिकार बना ले। इस दुख भरी अवस्था में वह या तो आत्मघात की चट्टान पर सिर पटकता है और यदि वह इससे बच भी जाता है तो अत्यन्त दुखदायी स्थिति में पहुँच जाता है, जिसका इलाज फिर वह मौत ही समझता है। लेकिन मौत में भी उसे कोई आराम नहीं दिख पड़ता। अतः वह परिस्थितियों के आधीन हो जाता है, क्योंकि अब इनसे बचने का उसके पास कोई रास्ता नहीं होता। यह एक सांसारिक आदमी की दुख भरी गाथा है।

दूसरी ओर, वास्तविकता को जानने वाला व्यक्ति, पहले व्यक्ति की भाँति सुख–सुविधा के साधन तो जुटाता है, लेकिन वह एक सीमा में रहता है और सुख–सुविधाओं के पीछे पागल नहीं होता। अपने सभी पुरुषार्थों के पीछे वह प्रभु का हाथ अनुभव करता है और अपनी सफलता या असफलता में विचलित नहीं होता। वह परिणाम प्रभु की इच्छा पर छोड़ देता है, क्योंकि अकेले प्रभु ही जानता है कि उसके लिए क्या अच्छा है। यदि फल इच्छानुसार होता है तो उसका उसे गर्व नहीं होता, बल्कि अपने हृदय से कृतज्ञता और आभार प्रकट करते हुए उसे स्वीकार करता है। यदि फल इच्छा के विपरीत हो जाए तो भी वह हतोत्साहित नहीं होता, बल्कि प्रसन्नता पूर्वक अपना सिर मालिक के आगे झुका देता है। वह पग–पग पर परमात्मा से मदद के

लिए याचना करता है, क्योंकि वह जानता है कि वह परमात्मा की दया के बिना कुछ नहीं कर सकता।

वास्तव में प्रार्थना, मन की बाहर फैली हुई वृत्तियों को, मन के केन्द्र पर एकाग्र करने का नाम है। सूर्य की किरणों के जैसे, ये संसार में फैली हुई हैं और उन्हीं के जैसे, इन्हें इनके स्त्रोत पर इकट्ठा किया जा सकता है। जब मनुष्य के मन में कोई ऐसी इच्छा उत्पन्न होती है, जिसकी वह पूर्ति नहीं कर सकता या वह ऐसी मुसीबत में घिर जाता है, जिससे निकलने का कोई रास्ता नहीं मिलता, तो वह अपने पुरुषार्थों में सफलता के लिए या दुख–संताप में ढाढस पाने के लिये परमात्मा की तरफ़ मुख करता है। ऐसी अवस्था में एकचित होकर मदद माँगना ही प्रार्थना कहलाती है। मनुष्य का हृदय प्रभु के रहने की जगह है, यही सच्चा का'बा है।

*कअबा बुंगाहे-ख़लीले-आज़र अस्त,*
*दिल गुज़रगाहे-जलीले-अकबर अस्त।*
*दिल बदस्त आवर किह् हज्जे-अकबर अस्त,*
*अज़ हज़ारां कअबा यक दिल बिहतर अस्त।*

— मौलाना रूम

अर्थात, किसी के दिल को न दुखाओ। यह दिल हज़ारों काबाओं से बेहतर है। काबा तो हज़रत इब्राहीम का बुतख़ाना था, पर यह दिल प्रभु की परिक्रमा करने का स्थान है।

सभी तीर्थ यात्राओं में इंसान के दिल की यात्रा ही सर्वश्रेष्ठ है— मक्का मदीना की हज़ारों यात्राओं से अच्छा ये है कि हम दिलों को जीत सकें।

जैसे ही कोई मनुष्य अपनी चित्तवृत्तियों को एकत्रित करके अपने ध्यान को मन के केन्द्र पर स्थिर करता है, तो वह परमात्मा की दया–मेहर का भागी बन जाता है, जिसके फलस्वरूप वह अपूर्व धैर्य और शक्ति से भर जाता है। यह उसे हर कठिनाई से निकलने के योग्य बना देती है।

जब मन में एक ही तीव्र इच्छा हो तो वह आश्चर्यजनक कार्य करती है। "जहाँ चाह वहाँ राह" एक आम कहावत है। प्रार्थना कुछ नहीं, बल्कि अपनी आत्मशक्ति को एकाग्र करके, उसे उसके स्त्रोत (प्रभु) से जोड़ने का नाम है; वह स्त्रोत, जो कि सभी महान शक्तियों का भंडार है, चाहे वे शारीरिक, मानसिक या आध्यात्मिक हों और कोई भी आवश्यकतानुसार उनसे लाभ उठा सकता है। मनुष्य वास्तव में महान है। वह परमात्मा के साथ उसी के

द्वारा बनाए गए मन्दिर में रहता है। उसकी अपनी आत्मा दिव्य जीवन के महासागर की सिर्फ़ एक बूँद है। परमात्मा और आत्मा के बीच सिवाय मन के पर्दे के, कोई अन्य रुकावट नहीं। अगर यह पर्दा इच्छाओं के वेग से लहराना बन्द कर दे, जैसा कि अभी हो रहा है तो आत्मा सीधे अपने स्त्रोत से ब्रह्मांडीय शक्ति प्राप्त कर सकती है।

"जिसका चिन्तन करोगे उसी का रूप बन जाओगे" एक आम कहावत है। यदि एक अंश अपने अंशी के बारे में सोचता है तो वह धीरे–धीरे उसी के विशिष्ट गुणों को धारण करने लगता है। यही बात हर इंसान की आत्मा पर लागू होती है। हमारी आत्मा का दायरा धीरे–धीरे बढ़ने लगता है, जब तक कि यह अपनी मौजूदा हालत, जो कि संकुचित और सीमित दायरे की है, से पूर्णता वाली स्थिति को प्राप्त नहीं कर लेती। जैसे ही हमारी आत्मा स्थूल, सूक्ष्म और कारण के बंधनों से आज़ाद होती है, तो यह ख़ुशी में पुकार उठती है, 'मैं आत्मा हूँ' या 'जैसा तू है वैसी मैं हूँ' या जैसा क्राइस्ट ने कहाँ है, "मैं और मेरा पिता एक हैं।"

दुनिया में दो क़िस्म के लोग हैं : एक तो वे जो सुरत को अन्तर्मुख ले जाकर अन्तरीय महाशक्ति से प्रेरणा हासिल करते हैं। दूसरे वे जो बहिर्मुखी साधनों, जैसे चर्च, मन्दिर, प्रतिमाओं एवं मूर्तियों पर ही निर्भर हैं और उनकी पूजा करते हैं, उनके सामने प्रार्थना करते हैं।

कुछ लोग प्रकृति की महाशक्तियों जैसे सूर्य, चन्द्रमा से या फिर बर्फ़ानी चोटियों, पवित्र नदियों की जल धाराओं से प्रेरणा लेने की कोशिश में लगे रहते हैं क्योंकि इन सबको वे उस एक प्रतिपालक सत्ता (प्रभु) का विभिन्न रूप समझते हैं। इस तरह की आराधना से इन सबको मन की एकाग्रता और भरोसे के अनुसार फल मिलता है, क्योंकि प्रकृति में कुछ भी नष्ट नहीं होता तथा कोई भी कर्म निष्फल नहीं जाता।

कई लोग परमात्मा के अस्तित्व में यक़ीन नहीं करते और इसलिए उनकी प्रार्थना में कोई आस्था नहीं होती, उन्हें न ही इस बात का अनुभव होता है कि परमात्मा अदृश्य और अगोचर है और इन चमड़े की आँखों द्वारा नहीं देखा जा सकता।

*नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी।।*

— आदि ग्रंथ (मारू की वार म.5, पृ.1100)

वास्तव में सच्चाई यह है कि परमात्मा परम–आत्मा है और केवल आत्मा द्वारा ही उसकी आराधना हो सकती है। हम उसकी आराधना इंसानी हाथों से नहीं कर सकते। इंसानी हाथों से बनाए गए मन्दिरों और गिरजों में भी हम उसकी आराधना कम ही कर पाते हैं। प्रभु मानव की आत्मा की अन्तरतम गहराइयों में निवास करता है। वह हमारी आत्मा की भी आत्मा है। प्रत्येक मूर्त स्वरूप के अन्दर वह विद्यमान है, कोई भी रूप उससे अलग नहीं है। तमाम रंग और रूप, अपनी छवि और आकार, उसी से ग्रहण करते हैं। चाहे हम उसमें विश्वास करें या नहीं, हम वास्तव में उसी में निवास करते हैं और हमारा संपूर्ण अस्तित्व उसी में है।

तो सच्ची प्रार्थना बाहर फैली चित्त–वृत्तियों को, आत्मा के केन्द्र, जो कि दो भ्रू–मध्य आँखों के पीछे स्थित है, पर एकत्रित कर स्थिर करने का साधन है। यहीं पर तमाम पूजाएँ, प्रार्थनाएँ, त्याग, वैराग्य एवं लोक और परलोक का सारा ज्ञान मौजूद है। मुक्ति का रास्ता आंतरिक सत्ता के साथ सीधे जुड़ने में है, न कि इधर उधर की चीज़ों से उलझने में।

"एकं सत्विप्रा बहुधा वदन्ति"– सत्य एक है, विद्वान उसे अनेक प्रकार से वर्णन में लाते हैं। यह उपनिषद् का एक प्रसिद्ध वाक्य है। तो फिर सनातन (सदा रहने वाला) 'सत्' की खोज क्यों न की जाए, जिसके बारे में गुरु नानक देव जी फ़रमाते हैं :

*आदि सचु जुगादि सचु॥*
*है भी सचु नानक होसी भी सचु॥*

– आदि ग्रंथ (जप जी मूलमंत्र, पृ.1)
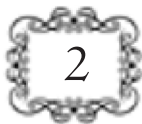
# प्रार्थना : मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति

**प्रार्थना** मनुष्य के स्वभाव में शामिल है। यह चाहे किसी भी रूप में हो, पर कोई भी इसके बग़ैर नहीं रह सकता। इंसान परमात्मा में यक़ीन रखने वाला हो या न रखने वाला हो— मोमिन हो या काफ़िर हो, प्रभु को मानता हो या न मानता हो— पर सभी अपने–अपने तरीक़े से प्रार्थना करते हैं। आमतौर पर प्रार्थना मनुष्य के अन्तर में उस समय जागृत होती है, जब वह दुख, तकलीफ़ या असाध्य रोग का शिकार हो जाए और उनको दूर करना चाहे, अथवा किसी असाधारण शारीरिक या आत्मिक अभिलाषा को पूर्ण करना चाहे या फिर किसी कठिनाई का सामना करना चाहे। जब वह अपने अन्दर अपनी इन आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त शक्ति नहीं पाता है, तब वह किसी शक्तिवान व्यक्तित्व की, जिसे वह समर्थ समझता है, से सहायता के लिए प्रार्थना करता है। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में हम देखते हैं कि जब कोई विद्यार्थी किसी सवाल को हल नहीं कर पाता, तो वह शिक्षक की सहायता माँगता है। इसी प्रकार बीमारी की हालत में हम किसी डॉक्टर या हक़ीम के आगे बीमारी को दूर करने के लिए मदद माँगते हैं, नौकर अपने मालिक की मदद चाहता है। ये सब विभिन्न रंग–रूपों में प्रार्थनाएँ ही हैं।

इसी तरह, रोज़मर्रा की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बच्चे अपने माँ–बाप की ओर तथा स्त्रियाँ अपने पति की ओर देखती रहते हैं।

तमाम परिस्थितियों से जूझते हुए जब हम असफल हो जाते हैं तो प्रार्थना ही हमारे तरकश में अन्तिम हथियार साबित होती है। जहाँ तमाम इंसानी कोशिशें असफल हो जाती हैं, वहाँ प्रार्थना मददगार साबित होती है।

जिन चीज़ों की दुनिया कल्पना करती है, प्रार्थना

के द्वारा उनसे भी कहीं अधिक चीज़ें प्राप्त की जा सकती हैं।.........

अगर इंसान, परमात्मा के अस्तित्व को जानकर भी अपने तथा अपने दोस्तों के लिए मुसीबत पड़ने पर अपने दोनों हाथों को प्रार्थना में न उठाए, तो वह भेड़ बकरियों से किस तरह बेहतर हो सकता है?

— टैनिसन की कृतियाँ [Tennyson's Works] (पृ.465)

जब प्रार्थना 'ज़िन्दगी का नमक' है और हम इसके बग़ैर नहीं रह सकते हैं, तो फिर ऐसे में प्रार्थना किसके आगे की जाए? कुदरती बात है— "एक ही मालिक या प्रभु रूप हस्ती के आगे, जिसमें प्रभु की सत्ता वास करती है और जिसके द्वारा प्रभु अपना काम इस संसार में करता है।" इस बात पर सभी धर्म एकमत हैं कि आत्मा के निज स्थान (दो भ्रूमध्य आँखों के पीछे) पर की गई प्रार्थना, प्रभु की तमाम गुप्त शक्तियों को, जागृत कर देती है। इसके द्वारा हम रूहानी कमाल (आध्यात्मिक परिपूर्णता) प्राप्त कर सकते हैं। प्रार्थना सृष्टि को सृष्टिकर्त्ता से एवं इंसान को प्रभु से जोड़ती है। यह आध्यात्मिक जिज्ञासु का सहारा है और वह इसके बग़ैर नहीं रह सकता है। प्रारंभिक अवस्था से लेकर अन्तिम अवस्था तक जब तक कि वह मालिक में समा नहीं जाता, वह प्रार्थना के द्वारा ही, मन–इन्द्रियों के विकारों से बच पाता है और तब मन निर्मल होकर आत्मा की ज्योति को परावर्तित करने लगता है।

*किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ॥*
*जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ॥*

— आदि ग्रंथ (सिरीराग की वार म.4, पृ.91)

❧

# प्रार्थना किसके आगे की जाए?

जो माँगना है, तो कुल मालिक ही स्वामी से मांगो। वह सब शक्तियों का स्वामी है, तथा सभी कुछ देने में समर्थ हैं।

कबीर साहब फ़रमाते हैं :

*साहिब के दरबार में, कमी काहु की नाँहि।*
*बन्दा मौज न पावहीं, चूक चाकरी माँहि।।*

– कबीर साखी संग्रह (पृ॰153)

गुरु अर्जन देव जी फ़रमाते हैं :

*जाका मीतु साजनु है समीआ।।*
*तिसु जन कउ कहु का की कमीआ।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰186)

विभिन्न देवी–देवताओं का कार्य क्षेत्र और क्षमता सीमित होती है, इसलिए वे किसी सीमा के अन्दर ही काम करते हैं। वे सब उस कुल मालिक से ही शक्ति प्राप्त करते हैं और हमें अपने दायरे की चीज़ें ही दे सकते हैं। वे हमें मुक्ति की दात नहीं दे सकते। एक मुक्त आत्मा ही दूसरी आत्माओं को आज़ाद करा सकती है, अन्य कोई नहीं। गुरु अर्जन देव जी फ़रमाते हैं, कि प्रभु ही तमाम व्याधियों का इलाज कर सकते हैं, चाहे वे किसी प्रकार की हों– जैसे शारीरिक (दर्द, पीड़ा और तमाम प्रकार की बीमारियाँ), सूक्ष्म (अदृश्य और असम्भावित विकट आपदाएँ जैसे बिजली का गिरना, बाढ़ और भूकम्प इत्यादि) या कारण (छुपी हुई बुरी प्रवृत्तियाँ जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार)।

*तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि।।*
*ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जाकी प्रभ आगै अरदासि।।*

– आदि ग्रंथ (टोडी म॰5, पृ॰714)

गुरु गोबिन्द सिंह जी फ़रमाते हैं :

*जागति जोत जपै निसबासुर एक बिना मन नैक न आनै।।*
*पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मड़ी मट भूल न मानै।।*

*तीरथ दान दइआ तप सजंम एक बिना नह एक पछानै।।*
*पूरन जोत जगै घट मै तब खालस ताहि नखालस जानै।।*

– दसम ग्रंथ (33 सवैये, पृ॰712)

आगे गुरु अर्जन देव जी फ़रमाते हैं :

*सुखदाता भै भंजनो तिसु आगै करि अरदासि।।*
*मिहर करे जिसु मिहरवानु ता कारजु आवै रासि।।*

– आदि ग्रंथ (सिरीराग की म॰5, पृ॰44)

*एको जपि एको सालाहि।। एकु सिमरि एको मन आहि।।*
*एकस के गुन गाउ अनन्त।। मनि तनि जापि एक भगवंत।।*
*एको एकु एकु हरि आपि।। पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि।।*
*अनिक बिसथार एक ते भए।। एकु अराधि पराछत गए।।*
*मन तन अंतरि एकु प्रभु राता।। गुरप्रसादि नानक इकु जाता।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी सुखमनी म.1, पृ. 289)

गुरु रामदास जी फ़रमाते हैं :

*कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ।।*
*कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ।।*
*संता संगि निधानु अंमृतु चाखीऐ।।*
*भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ।।*

– आदि ग्रंथ (सिरीराग की वार म॰4, पृ॰91)

गुरु अर्जन साहिब प्रार्थना करते हैं,

*तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा।।*
*कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा।।*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰5, पृ॰383)

*मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि॥*
*मैं होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनन्ती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰4, पृ॰735)

*जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ॥*
*पारब्रहमु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ॥*

– आदि ग्रंथ (गूजरी म॰5, पृ॰497)

कुरान शरीफ़ में यह साफ़–साफ़ आता है कि मदद के लिए केवल अपने रब्ब को पुकारो। फिर यह भी है कि "ख़ुदा को पुकारना ही सच्चा पुकारना है।" हज़रत इब्राहिम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया, "जाओ, मैंने तुम सब को छोड़ा और उन देवताओं को भी छोड़ा, जिनकी तुम पूजा करते हो। मैं सिर्फ़ अपने रब को पुकारता हूँ। मुझे भरोसा है कि मैं ख़ाली हाथ नहीं रहूँगा।"

फिर फ़रमाया है :

ऐ अहले-किताब (विद्वान लोगों), आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरम्यान एक सी है यानी बजुज़ (सिवाय) अल्लाह त'आला के हम किसी और की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएँ और हममें से कोई मासिवल्लाह त'आला के किसी दूसरे को रब्ब न करार देवें।

– कुरान शरीफ़ (9.10)

जब तक हम प्रभु को न देखें, तब तक प्रेम नहीं पैदा होता। जब तक हम परमात्मा की शान या उसकी प्रभुता को न देख लें, तब तक उसके अस्तित्व में पक्का विश्वास नहीं होता और जहाँ पक्का भरोसा ही न हो वहाँ प्रार्थना की सुनवाई कहाँ? गुरु अथवा मुर्शिद के अन्दर रब का प्रकाश होता है, और वहाँ से प्रभु की ज्योति चारों ओर फैलती है। हम उसी भाव से ही गुरु के समक्ष प्रार्थना कर सकते हैं, क्योंकि वह परमात्मा से जुड़ा होता है। क्योंकि वह कुल मालिक की शक्ति से जुड़ा होता है, इसलिए मालिक की तरह ही हमारी सब इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति में सहायक और समर्थ है। कहा गया है :

*साध रूप अपना तनु धारिआ।।*

– आदि ग्रंथ (मारू म॰5, पृ॰1005)

आगे बाइबिल बतलाती है :

यक़ीनन कुल मालिक अपनी इच्छा से कुछ नहीं करता, बल्कि वह अपने रहस्य को अपने भक्तों-अवतारों के द्वारा प्रकट करता है।

गुरुवाणी में आया है :

*प्रभ जी बसहि साध की रसना।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी सुखमनी म॰5, पृ॰263)

एक मुस्लिम दरवेश फ़रमाते हैं :

*गुफ़्ताए-ऊ गुफ़्ताए-अल्लाह बुवद,*
*गरचिह् अज़ हलक़ूमें अब्दुल्ला बुवद।*

– मसनवी मौलाना रूमी (दफ़्तर 2, पृ.213)

अर्थात, यद्यपि मुर्शिद का बोला हुआ वचन, इन्सान के मुख से निकलता हुआ मालूम होता है, वास्तव में यह ख़ुदा का कलाम होता है।

अतएव ज़िन्दा सत्स्वरूप हस्ती से माँगना मालिक ही से माँगना है। मनुष्य को चाहिए कि वह पूरे और पक्के तौर पर अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मुर्शिदे–क़ामिल पर ही निर्भर रहे और उसकी तरफ़ ही तवज्जोह करे।

अतएव प्रार्थना करनी हो तो उसके आगे करो, जो जन्म–मरण की गुत्थी पर अधिकार रखता हो। हमें संत–सत्गुरु (जीता–जागता परमात्मा), जो कि हमारे बीच इंसानी शक़्ल में रहता है, पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए। हमें अपना ध्यान उसी पर केन्द्रित रखना चाहिए। मन में किसी और ख़्याल भी नहीं आना चाहिए। यह उससे एकमेक होने का एक तरीक़ा है।

कबीर साहब फ़रमाते हैं कि गुरु और शिष्य के बीच की दूरी कोई मा'ने नहीं रखती। दोनों के बीच में बेशक़ विस्तृत सागरों का फ़ासला हो, पर मात्र शिष्य अपने सतगुरु की तवज्जोह को निश्चित तौर से खींच लेता है। और शिष्य चाहे कहीं भी रहे, सत्गुरु उसका मार्गदर्शन कर सकता है। विवेकानन्द के बारे में कहाँ जाता है कि जब वह वे शिकागो में विश्व धर्म

संसद की सभा में बोलने के लिए खड़े हुए, तो थोड़ा घबराए कि आगे क्या कहें? तब उन्होंने एक गिलास पानी माँगा तथा एक क्षण के लिए आँखें बन्द की और अपने गुरु (दक्षिणेश्वर के महापुरुष स्वामी रामकृष्ण परमहंस) का ध्यान किया। उसी क्षण एक अविरल धारा का संचार हुआ, जिसके फलस्वरूप उन्होंने एक बेमिसाल और ओजस्वी भाषण दिया, जो कई घंटों तक चला। गुरु शहंशाहों का शहनशाह है, उसके दर पर दुनिया के सभी शहंशाह नम्रतापूर्वक सर झुकाते हैं और अपनी चिरइच्छित तथा अपूर्ण–इरादों के पूरा होने की कामना करते हैं।

इसके बारे में गुरु अर्जन देव जी फ़रमाते हैं :

*जा कै वसि खान सुलतान॥ जा कै वसि है सगल जहान॥*
*जा का कीआ सभु किछु होइ॥ तिस ते बाहरि नाही कोइ॥*
*कहु बेनन्ती अपुने सतिगुर पाहि॥ काज तुमारे देइ निबाहि॥ रहाउ॥*
*सभ ते ऊच जा का दरबारु॥ सगल भगत जा का नामु अधारु॥*
*सरब बिआपित पूरन धनी॥ जा की सोभा घटि घटि बनी॥*
*जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै॥ जिसु सिमरत जमु किछू न कहै॥*
*जिसु सिमरत होत सूके हरे॥ जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे॥*
*संत सभा कउ सदा जैकारु॥ हरि हरि नामु जन प्रान अधारु॥*
*कहु नानक मेरी सुणी अरदासि॥ संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी गुआरेरी म॰5, पृ॰182)

गुरु चारों पदार्थ– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, सब कुछ देने में समर्थ है :

*चारि पदारथ जे को मागै॥ साध जना की सेवा लागै॥*
*जे को आपुना दूखु मिटावै॥ हरि हरि नामु रिदै सद गावै॥*
*जे को अपुनी सोभा लोरै॥ साधसंगि इह हउमै छोरै॥*
*जे को जनम मरण ते डरै॥ साध जना की सरनी परै॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी सुखमनी म॰5, पृ॰266)

उपरोक्त से यह साफ़ है कि हमें मालिक या सत्गुरु से ही प्रार्थना करनी चाहिए और उसके मिलने के बाद हमें सिर्फ़ उसी पर निर्भर रहना चाहिए, अन्य किसी पर नहीं। क्योंकि सिर्फ़ वही मन माया के भंवरजाल से हमें बाहर निकाल सकता है और दुनियावी इच्छाओं से घिरे हमारे घायल हृदय

पर मरहम लगा सकता है। वह निर्बलों का बल है, निर्आसरों का आसरा है। उसकी एक दया भरी नज़र घायल दिलों का इलाज करने वाली है।

भाई नन्द लाल 'गोया' फ़रमाते हैं :

*मुर्शिदे-का़मिल इलाजे-दिल कुनद,*
*ईं इलाजे-दिल बदिल हासिल शवद।*

शिष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह बेझिझक अपने मन का बोझ गुरु के आगे रखे और अपनी अन्तर की व्यथा को गुरु के आगे खोल दे। गुरु चाहे पास हो या दूर हो वह तो समय और दूरी की सीमाओं से परे होता है और शिष्य की दुख भरी व्यथा को सुन सकता है।

*जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि।।*
*छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि।।*

– आदि ग्रंथ (गूजरी की वार म॰5, पृ॰519)

कुरान शरीफ़ में आया है : उसके सिवा और कोई नहीं है जो किसी बेबस और दुखों से लाचार की प्रार्थना को सुने और उसे सांत्वना दे सकें।

हज़रत ईसा मसीह के फ़रमान इस बारे में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं :

जो भी कुछ तुम मेरे नाम पर मेरे पिता से माँगोगे, वह तुमको दे सकता है।

– पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 15:16)

यदि तुम मुझ से मेरे नाम में माँगोगे, तो तुम्हें अवश्य मिलेगा।

– पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 14:14)

प्रार्थना करनी है, तो मालिक के आगे करो या उसके प्रत्यक्ष रूप सत्गुरु के आगे करो, जो सब कुछ देने में समर्थ है; अन्य किसी के आगे नहीं।

# अन्तर्निहित मालिक से सीधी प्रार्थना

**सांसारिक** कार्यों में, हम अपने से अधिक योग्य और समझ वाले व्यक्तियों की सहायता लेते हैं। उसी तरह हम प्रभु से, जो कि सर्वशक्तिमान है, मदद के लिए प्रार्थनाएँ करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह सच्ची युक्ति है, जो हम रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में आने वाली कठिन एवं उलझी हुई समस्याओं के लिए अपनाते हैं। लेकिन उस मालिक या प्रभु को अपने से अलग समझकर उसके आगे ऐसे प्रार्थना करना, जैसे हम किसी दूसरे इंसान के आगे करते हैं, वास्तव में एक बड़ी ग़लती है। वह हमारी आत्मा की आत्मा है और हमारे अन्दर और बाहर हमेशा काम करता रहता है। वास्तव में हम उसी में जीते हैं और उसी के कारण ही हमारा जीवन है। मालिक की अनन्त शक्तियों को अपने अन्दर मानकर उसके आगे प्रार्थना करना ही सफल होने का रहस्य है, क्योंकि ऐसी प्रार्थना अवश्य फलदायक होती है और वह भी बहुतायत से। यदि हम सोचें कि परमात्मा बर्फ़ानी पहाड़ियों पर या फिर पवित्र नदियों की गहराइयों के नीचे या किसी मन्दिर और मस्जिद, चर्च या फिर यहाँ–वहाँ के पवित्र स्थलों में वास करता है, तो अपने और प्रभु के साथ महान अन्याय होगा। जैसा कि हम इस समय, स्थान और कारण की सीमाओं में बन्धे हैं, उसी तरह से हम उस असीम को अपनी कल्पना के तंग दायरों में बांधने की कोशिश करते हैं।

तमाम शक्तियों का भंडार हमारे अन्दर मौजूद है। हम उसके अन्दर डुबकी लगाकर आत्मिक तौर से महान और बलवान बन सकते हैं। जिस प्रकार शारीरिक व्यायाम करने से हमारे अन्दर की भौतिक ताक़त जागती है, उसी तरह आत्मिक व्यायाम (ध्यान–साधना) करने से हमारे अन्दर की छिपी हुई आत्मिक शक्ति जाग उठती है। इसके द्वारा हम अपने कपाटों

को खोलकर अपनी आत्मा को दिव्य धाराओं से भर लेते हैं। जब मनुष्य रूहानी पुरुष बन जाता है तो सारी प्रकृति, जो कि परमात्मा के हुक़्म के अन्दर चलती है, उसके इशारों पर नाचने लगती है तथा उसकी तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति करने लग जाती है।

एक बलवती इच्छा एकाग्रचित्त अवस्था में अपने आप अपने लिए रास्ता बना लेती है। जब हम अपने से अलग किसी दूसरी शक्ति के आगे प्रार्थना करते हैं, तो कभी–कभी हमारी माँगें पूरी हो जाया करती हैं। ऐसी सफलता का कारण हमारी एकाग्रचित्त कोशिश का नतीजा है, न कि किसी बाह्य शक्ति का। इस प्रकार हम सिर्फ़ अपने आपको धोखे में ही नहीं रखते, बल्कि इस धोखे इतना बढ़ा लेते हैं कि कुछ समय बाद वह हमारे जीवन का एक हिस्सा बन जाता है। और तब हम परमात्मा को अपने से अलग समझने लग जाते हैं, जिसका सबसे बुरा नतीजा यह है कि हम अपने अन्दर के दिव्य गुप्त ख़ज़ाने, जो कि हमारी विरासत हैं, से वंचित रह जाते हैं। अन्तर में प्रभु से जुड़ने के बाद ही हम, ब्रह्मांड में उसकी सार्वभौमिकता और शान को सही मा'ने में जान सकते हैं। अन्तर में उसके प्रत्यक्ष अनुभव के बिना, हमारी प्रभु की धारणा मात्र कहाँ सुना या पढ़ा पढ़ाया ज्ञान होता है। अतः यह ग़लत होता है और प्रभु के लिए हमारी प्रार्थनाएँ मात्र निरर्थक शब्द मात्र रह जाती हैं।

# प्रार्थना और पुरुषार्थ

**प्रार्थना** और पुरुषार्थ का चोली–दामन का साथ है। हम परमात्मा से प्रार्थना किसलिए करते हैं? अपने पुरुषार्थों की सफलता के लिए। जब हम किसी वस्तु की कामना करते हैं तो हमें उसकी प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए और पुरुषार्थ के साथ–साथ प्रभु के आगे प्रार्थना भी करनी चाहिए कि वह वस्तु को प्रदान करे। प्रार्थना सबसे आख़िरी हथियार है और यक़ीनन ऐसा है, जो हमारी मदद को आता है। जहाँ तमाम इंसानी पुरुषार्थ निष्फल हो जाते हैं, वहाँ प्रार्थना काम आती है।

> जिन चीज़ों की दुनिया कल्पना करती है, प्रार्थना के द्वारा उनसे भी कहीं अधिक चीज़ें प्राप्त की जा सकती हैं।
>
> – एल्फ़्रेड टेन्निसन (Lord Alfred Tennyson- 'The Passing of Arthur')

जिस प्रकार एक पक्षी सिर्फ़ एक पंख से नहीं उड़ सकता और न ही कोई रथ एक पहिए पर चल सकता है, उसी तरह पुरुषार्थ और प्रार्थना साथ–साथ चलनी चाहिए यदि हम अपने सभी कार्यों में सफलता चाहते हैं। इन दोनों में से कोई भी अकेले उद्देश्य की प्राप्ति में समर्थ नहीं है। जब तक मनुष्य पूर्ण रुप से दिव्य नहीं बनता और उस मालिक की रज़ा को समझकर सचेतन–सहकर्मी (Conscious Co-Worker) नहीं बनता, तब तक वह पुरुषार्थ के बिना नहीं रह सकता, क्योंकि परमात्मा उनकी मदद करता है, जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।

पुरुषार्थ रहित मात्र प्रार्थना, शायद ही फलदायक हो। इस बात को समझने के लिए हम एक बच्चे का उदाहरण लेते हैं, जिसे स्कूल जाने में देर हो गई है। यदि वह सड़क के किनारे बैठ जाए और प्रार्थना करने लग

जाए, हे परमात्मा! हमें देर न हो जाए, तो इस अवस्था में देर बढ़ती चली जाएगी। यदि वह चाहता है कि समय की बचत हो, तो उसे भागना ही होगा। और संभव है कि उसका अध्यापक उसे माफ़ कर दे, क्योंकि समय पर पहुँचने के लिए उसने पुरुषार्थ किया है। किसी वस्तु की तीव्र इच्छा होना और उसकी प्राप्ति के लिए कठिन पुरुषार्थ करना वास्तव में सही प्रार्थना है।

प्रार्थना में पुरुषार्थ शामिल होना चाहिए, क्योंकि केवल ज़ुबान या होठों द्वारा की गई प्रार्थना उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक सहायक नहीं होती। जब कोई निष्कपट भाव से किसी वस्तु को पाने के लिए हृदय से प्रार्थना करता है, तो उसके रोम–रोम से उसकी प्राप्ति के लिए जो प्रार्थना निकलती है, वह सर्वोत्तम है और वह फलदायक है। सभी प्रकार की परीक्षाओं एवं कष्टों में हमें चाहिए कि हमारे अन्दर त्रुटियों और कमज़ोरियों के कारण जो दोष पैदा हो गए हैं, उनको दूर करने के लिए मालिक से मदद की प्रार्थना करें, क्योंकि वही इस कार्य में हमारा मददगार साबित हो सकता है। यही एक सच्चा तरीक़ा है।

क़ुरान शरीफ़ में वर्णन आया है कि जब हज़रत मूसा ने और आरून ने फ़िराउन और उसकी क़ौम पर फतह पाने के लिए दुआ की, तो परमात्मा ने उनकी दुआ को कुबूल फ़रमाया और हुक्म दिया कि अब तुम पुरुषार्थ सहित डटे रहो और उन लोगों के रास्ते पर न चलो, जो हक़ीकत का इल्म नहीं रखते। हज़रत मूसा ने भी अपनी क़ौम से यही कहा कि सच्चे रहो और ख़ुदा से मदद माँगो। मुसीबत के समय, कभी हिम्मत न हारो, ख़ासकर जबकि तुम्हारा आसरा रब्ब है और रब्ब जैसा गुरु है। यह सब होते हुए भी, यदि पुरुषार्थ में तुम असफल हो जाते हो, तो इस असफलता को परमात्मा की तरफ़ से अपने लिए भला ही समझो।

-

# प्रार्थना के आवश्यक अंग

**क्राइस्ट** ने कहा है :

> यदि जब तुम बुरे होकर भी, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो तो तुम्हारा स्वर्ग का पिता अपने माँगने वालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?
>
> – पवित्र बाइबिल (मत्ती 7:11)

कोई भी प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाती, दिल से निकली हुई पुकार को हमेशा सुना जाता है। लेकिन इसकी पूर्ति कब और किस तरह हो, यह प्रभु की इच्छा पर निर्भर करता है।

गुरु अर्जन देव फ़रमाते हैं :

*बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि॥*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰5, पृ॰819)

भक्त की प्रार्थना कभी भी व्यर्थ नहीं जाती।

*जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै॥*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰5, पृ॰403)

*जो मागहि ठाकुर अपने ते सोई सोई देवै॥*
*नानक दासु मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै॥*

– आदि ग्रंथ (धनासरी म॰5, पृ॰681)

गुरु अर्जन फ़रमाते हैं :

*पिता क्रिपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि मांगै सो देना॥*

– आदि ग्रंथ (मलार म॰5, पृ॰1266)

कुरान शरीफ़ में फ़रमाया गया है : रब्ब कहता है,

> मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार कबूल करूँगा।
>
> – कुरान शरीफ़ (2.152)

फिर फ़रमाया है :

हे रसूल! जब कोई मेरा बन्दा मेरे बारे में तुझसे पूछे तो यूँ कह दे कि मैं उनके पास हूँ, और जब वह पुकारता है तो मैं उसकी पुकार को सुनता हूँ और उसको कबूल करता हूँ।

– कुरान शरीफ़ (2.186)

अपने परमात्मा को दीनता से पुकारो। शोर मचाने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि वह सब कुछ जानता है।

– कुरान शरीफ़ (7.205)

बाइबिल में हमें मिलता है :

माँगो, और तुम्हें दिया जाएगा, तलाश करो और तुम उसको पा लोगे, खटखटाओ और तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा, क्योंकि हर कोई भी जो माँगता है, पाता है। जो तलाश करता है वह ढूँढ लेता है और जो कोई खटखटाता है, उसके लिए खोला जाता है।

– पवित्र बाइबिल (मत्ती 7:7,8)

पर देखने में आता है कि हमारी अधिकतर प्रार्थनाएँ पूर्ण नहीं होतीं। इसलिए हमें समझना है कि किस प्रकार की प्रार्थनाएँ प्रभु को स्वीकार होती हैं और वे किस प्रकार की जाती हैं एवं हरेक प्रार्थना स्वीकृत क्यों नहीं होती है। प्रार्थना सफल होने के लिए कुछ गुणों का होना लाज़मी है :

**1.** परमात्मा में पूर्ण विश्वास : परमात्मा में पूर्ण विश्वास का होना सफलता का मूल कारण है। हम अपने इर्द–गिर्द के लोगों को तथा अपने आपको तो धोखा दे सकते हैं लेकिन हम अन्तर की ताक़त–परमात्मा को धोखा नहीं दे सकते। प्रार्थना करते वक़्त हम एक प्रकार की अंधी दौड़ ही दौड़ रहे होते हैं। हम अपने मन, वचन और कर्म से सच्चे नहीं होते हैं। वास्तव में इन तीनों में कोई समता नहीं होती। हम अपनी चतुराइयों, कुशलता तथा योजनाओं पर ही अधिक निर्भर करते हैं। हमें प्रभु और उसकी शक्ति में तो विश्वास नहीं होता और न ही हमारी प्रार्थनाएँ आत्मा की गहराइयों से निकलती है। यह विरह–वेदना की पुकार न होकर मात्र

कुछ शब्दों को यांत्रिकी तौर पर दोहराना होता है। यह प्रार्थना परमात्मा के आगे एक मात्र ज़बानी जमा–ख़र्च की तरह है, जिसका असर दोहराना होता है चमड़ी जितना गहरा भी नहीं होता। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि इस प्रकार से उच्चारित और दिखावटी प्रार्थनाएँ व्यर्थ हो जाती हैं, उनकी सुनवाई नहीं होती। हमें इस बात का अनुभव होना चाहिए कि प्रभु हमारे अन्तरीय विचारों और मन के क्रिया–कलापों को अच्छी तरह जानता है। हमें उसकी उदारता पर पक्का भरोसा होना चाहिए।

गुरु गोबिन्द सिंह जी फ़रमाते हैं :

*घट घट के अंतर की जानत॥ भले बुरे की पीर पछानत॥*

– दसम ग्रंथ (चौपाई 387, पृ॰1387)

**2.** परमात्मा के आगे समर्पण : परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखते हुए अगला क़दम स्वतः ही प्रभु के चरण–कमलों में समर्पण–भाव का होना है। जब हमारी आत्मा परमात्मा से मिल जाती है, तो उसके बाद सारे क्रिया–कलाप प्रभु की रज़ा पर चलते हैं और ऐसी अवस्था में शायद ही प्रार्थना की कोई आवश्यकता हो।

*मन जिउ अपुने प्रभ भावउ॥*
*नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइ गरीबु बुलावउ॥*

– आदि ग्रंथ (देवगंधारी म॰5, पृ॰529)

**3.** प्रभु के लिये प्यार : प्रार्थना की सफलता के लिए, प्रभु के लिए प्यार होना एक ज़रूरी अंग है। इससे पहले कि हम प्रभु से कुछ और माँगें, जो कुछ प्रभु ने हमें बिना माँगे दे रखा है, पहले उसके लिए शुक्राना करना चाहिए। हममें उसके आदेशों के प्रति प्यार और श्रद्धा होनी चाहिए और उसके आदेशों का दृढतापूर्वक पालन करना चाहिए। हम उसके आगे तो हज़ारों बार मत्था टेकते हैं, पर हमारी बदक़िस्मती यह है कि उनके वचनों को गंभीरता से नहीं लेते। हम इस बात का अनुभव नहीं करते हैं कि प्रभु अपने वचनों से अलग नहीं है।

यदि तुम मुझसे प्यार करते हो, तो मेरा कहना मानो।

– पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 14:15)

यदि तुम मेरे हृदय में बस जाओ और मेरे वचन तुम्हारे हृदय में वास कर लें, तो तुम जो चाहो माँगो, वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।

– पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 15:7)

परमात्मा की रज़ा में खुश रहो, और वह तुम्हारी हार्दिक इच्छाओं की पूर्ति कर देगा।

– पवित्र बाइबिल (भजन–संहिता 37:4)

**4.** सही नज़री (विवेक दृष्टि) : प्रभु की दया–मेहर पाने के लिए सही नज़री का होना भी ज़रूरी है। मनुष्य और परमात्मा– दोनों के सम्बन्ध में भी सही नज़री होनी चाहिए।

जो लोग प्रभु के नियम को अनसुना कर देते हैं, उनकी प्रार्थनाएँ भी उसी तरह नापसन्द कर दी जाएगी।

– पवित्र बाइबिल (भजन–संहिता 28:9)

जो कुछ भी हम माँगते हैं, हम उसे पा लेते हैं, क्योंकि हम उनके वचनों को मानते हैं तथा वही चीज़ें करते हैं, जो उसकी नज़रों को भाती हैं।

– पवित्र बाइबिल (I यूहन्ना 3:22)

फिर, यदि हम यह चाहते हैं कि प्रभु हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे, तो हमें भी अपने आपको इस तरह ढ़ालना होगा कि हम दूसरों को आसानी से माफ़ कर सकें।

और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर...

इसलिए यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्ग का पिता भी तुम्हें क्षमा कर देगा।

और यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा।

– पवित्र बाइबिल (मत्ती 6:12,14-15)

**5.** प्रभु का भय : हम प्रभु के भय में ज़िन्दगी व्यतीत नहीं करते। वह हमारी आत्मा का आत्मा है, लेकिन फिर भी हम अकेले में छिप कर

लज्जित कर्म करते हैं और समझते हैं कि इसका उसे पता नहीं है। बच्चों के सामने तो हम कोई पाप कर्म करने में लज्जा का अनुभव करते हैं, लेकिन जो शहंशाहों का शहंशाह हमारे अन्दर विराजमान है, जो न केवल हमारे तमाम कर्मों को देखता है, बल्कि हमारे अवचेतन मन में छुपी हुई प्रवृत्ति व रुझान को भी जानता है, उसके लिए हम उतनी लज्जा भी महसूस नहीं करते। केवल प्रभु का भय ही हमें संसार में निर्भय कर सकता है। दुर्भाग्य वश हम ऐसी हालत में जीते हैं, जहाँ हम सदैव दूसरों का भय अपने मन में बसाए रखते हैं और अपने छोटे–मोटे कार्यों को पूरा करवाने के लिए हम इधर–उधर चापलूसी का सहारा लेते हैं।

> जैसे एक पिता अपने बच्चों पर दया-दृष्टि रखता है, उसी प्रकार परमात्मा उन पर दया करता है, जो उसका भय दिल में बसाए रखते हैं।
>
> – पवित्र बाइबिल (भजन–संहिता 103:13)

> हे परमात्मा! मैं आप पर विश्वास करता हूँ; आप मेरे अविश्वासों को दूर करने में सहायता प्रदान करें।
>
> – पवित्र बाइबिल (मरकुस 9:24)

**6.** पवित्रता : शरीर, मन और आत्मा की पवित्रता प्रभु का प्यार पाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। इसे तीन विभिन्न अवस्थाओं में लिया जा सकता है यानी पश्चात्ताप, क्षमा और बुराइयों से परहेज़।

(क) पश्चाताप : इस दुनिया में कोई भी पूर्ण नहीं है और हम सब की अपनी अपनी कमज़ोरियाँ हैं। मनुष्य को पाप आदम से विरासत में मिला है। इंसान का मन काल–शक्ति का प्रतिनिधि है और यह इंसान को परमात्मा से दूर रखने के लिए, प्रलोभन देने के किसी भी अवसर को नहीं चूकता। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में हम हर क़दम पर फिसलते रहते हैं। जब दुनिया के भोगों–रसों के लालच हमें प्रलोभित करते हैं, तो हमारे बड़े–बड़े इरादे भी हवा हो जाते हैं। यह हमारे लिए संभव नहीं कि बिना किसी की मदद के, हम काल–सत्ता के प्रतिनिधि, मन की ललचाने वाली चालों, सूक्ष्म जाल, तथा बन्धनों से बच जाएँ। सिर्फ़ संत सत्गुरु की रक्षक भुजा ही हमें मन के भयंकर हमलों से बचा सकती है। जब कभी भी हम किसी लालच का शिकार हो जाते हैं, तो उसके बाद हमें अपनी

कमज़ोरी महसूस करनी चाहिये और सच्चे हृदय से उस पर पछतावा करना चाहिये।

(ख) क्षमा : हालाँकि पश्चात्ताप अपने आप में अच्छा है, पर यह बीते हुए समय को नहीं बदल सकता। जाने या अनजाने में किया गया कर्म मन की तख़्ती पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाता है और उसकी प्रतिक्रिया या परिणाम हमें अवश्य भुगतना पड़ता है। इस तरह से अनगनित कर्मों के संस्कार दिन–रात हमारे संचित कर्मों (ऐसे जमा कर्मों का विशाल भंडार, जो अभी फलीभूत नहीं हुए हैं) में जमा हो रहे हैं। इस भारी भयंकर बोझ से कोई नहीं बच सकता, जिसका कि प्रभाव बहुत दूरगामी होता है और कभी–कभी सहस्त्रों जन्मों से भी अधिक होता है। तो फिर क्या कोई ऐसा इलाज नहीं, जो इन कर्मों के बारूदी ढ़ेर को फटने से पहले ही जला कर नष्ट कर दे?

संत हमें बतलाते हैं कि एक रास्ता है, और वो वास्तव में पक्का है। क्षमा के लिए प्रार्थना हम पापियों के हाथ में एक सकारात्मक हथियार हैं। हर पापी से पापी के लिए यहाँ उम्मीद है। पापियों और गुमराह लोगों की मुक्ति के लिए ही संत दुनिया में आते हैं। एक संत–सत्गुरु के साथ सम्बन्ध स्थापित होने से कर्मों का निपटारा करने में बड़ी भारी मदद मिलती है। जब संत–सत्गुरु अपनी कल्याणकारी दया–धारा से हमारी रोज़मर्रा की ग़लतियों को बख़्शते हैं, तो साथ–ही–साथ हमें यह चेतावनी भी देते हैं कि इस तरह की बुराइयों को फिर ना दोहराएँ। उनकी प्यार भरी झिड़की भी यही होती है, "अब तक जो हो गया सो हो गया, ख़बरदार! आगे से नहीं करना, भई", "जाओ और आगे से पाप न करना," क्राइस्ट का अपना तरीक़ा था। हमारे हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज भी इसी तरह अपने शिष्यों से फ़रमाया करते थे, "भई, जहाँ हो वहीं खड़े हो जाओ और आगे से पाप न करो।" पुराने संस्कारों को धोया जा सकता है, बशर्ते कि हम आगे से नए संस्कारों के बीज बोना बंद कर दें।

(ग) बुराइयों से परहेज़ : जब कि पश्चात्ताप और क्षमा क्रियामान कर्मों (रोज़मर्रा के कर्म) के असर से बचाने में हमारी मदद करते हैं, पर भविष्य में हमें उनकी पुनरावृत्तियों के प्रति भी सचेत रहना चाहिए। कोई भी शोधन की प्रक्रिया हमारी मदद नहीं कर सकती, जब तक हम कर्म–चक्र की

अबाध गति को लगाम नहीं देते। कर्म–चक्र हमारे प्रत्येक कर्म से गति पाता है।

एक न्यायाधीश किसी समय अपराध के लिए सज़ा को घटा देता है, पर इससे अभियुक्त की चारित्रिक उन्नति होना आवश्यक नहीं। पर सत्गुरु की व्यवस्था में जहाँ पर बख़्शिश है, वहाँ पर एक सख़्त चेतावनी भी है, जो व्यक्ति को बुरे कर्मों से बचाए रखने के लिए बहुत ज़रूरी है। उसे हर एक पापी को धोकर साफ़ करना है, जिससे कि वह अपने निजघर की यात्रा के लायक़ हो जाए। यह उस तरह है जिस तरह एक महान शिल्पकार एक पत्थर को आकृति एवं रूप प्रदान करने के लिए कठिन छिलाई का सहारा लेता है।

संक्षेप में, यह ज़रूरी है कि हम सबसे पहले अपने जीवन को उसके आदेशानुसार ढालें और उसका ध्यान करते वक़्त सच्ची ख़ुशी का अनुभव करें। दूसरे, हमें उसकी रज़ा को समझना चाहिए और उन चीज़ों के लिए ही प्रार्थना करनी चाहिए, जो उसको भाती हैं। तीसरे, हमें उसके भाणे (रज़ा) को मुस्कुराते हुए स्वीकार करना चाहिए, चाहे वह कैसा भी हो।

अन्त में वो बात जो कि कम महत्त्वपूर्ण नहीं है कि प्यार ही वह भूमि है, जिस पर जीवन सबसे अधिक फलता फूलता है। प्रेमी हमेशा देना ही जानता है और उसके बदले में कुछ भी नहीं चाहता। अगर कोई प्रभु के आदेशों के मुताबिक जीवन व्यतीत करने का यत्न करे, तो प्रभु के गुण स्वतः ही उसमें उतरने शुरू हो जाते हैं। कोई भी जो प्रभु को प्यार करता है, उसे किसी भी चीज़ को माँगने की आवश्यकता नहीं। हमारे लिए सिर्फ़ यही काफ़ी है कि हम अपने इस जीवन को उस पर न्योछावर कर दें और उसके दास बन जाएँ। यह हम उसी पर छोड़ दें कि वह जैसा चाहे, वैसा हमारे साथ बर्ताव करे। उसकी हजूरी में रहना अपने आप में एक वरदान है और कोई भी वरदान इसके अधिक मूल्यवान या महान नहीं हो सकता।

मौलाना रूम फ़रमाते हैं :

*कुफ़्र बाशद नज़्दे-शान करदन दुआ,*
*क-ए अला अज़ मा बगर्दां ईं कज़ा।*

– मसनवी मौलाना रूमी (दफ़्तर 3, पृ.188)

अल्लाह से यह दुआ करना कि हमारे ऊपर से यह विपत्ति दूर कर दे, यहाँ बिल्कुल मना है।

कोलरिज (Samuel Taylor Coleridge) कहते हैं :

तेरे माथे की भृकुटियों की सुन्दरता, अनेक सुकुमारियों की मुस्कानों से भी कहीं अधिक है।

– कोलरिज, गीत– 'वह सुन्दर नहीं है' [Song- 'She is not fair']

*जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰4, पृ॰758)

हे गुरु! आपकी झिड़कियों में भी मुझे मिठास का अनुभव हो रहा है।

7

# प्रार्थना के मार्ग में आपदायें

कुछ लोगों का यह मानना है कि जब परमात्मा हमारे चित्त के अंतरतम भेदों को जानता है, तो फिर प्रार्थना की आवश्यकता ही कहाँ? कुछ ऐसा भी सोचते हैं कि जब परमात्मा ने हमारे माँगने पर ही कोई दात देनी है, तो हम अपनी अल्पज्ञ बुद्धि के कारण कुछ भी माँग सकते हैं, जो बाद में हमारे लिए दुख का कारण बन सकती है तथा इस मूर्खता के लिए हमें पछताना पड़ सकता है। कुछ अन्य का विश्वास है कि परमात्मा, जो कि दुनियावी पिता से कहीं अधिक बढ़कर है, वह अच्छी तरह जानता है कि उसके बच्चे के लिए क्या आवश्यक है और वह उसे बिना माँगे हमें दे देगा, पर वह चीज़ नहीं देगा, जिसमें हमारा नुकसान है।

इन सब तर्क–वितर्कों के बावजूद, संतजन हमें प्रार्थना करने के लिए बार–बार उपदेश देते रहे हैं।

तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम्हें किस चीज़ की ज़रूरत है।

– पवित्र बाइबिल (मत्ती 6:8)

*वडी वडिआई बुझै सभि भाउ॥*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰1, पृ॰463)

अर्थात् उसकी बड़ाई (महानता) उसके सर्वज्ञान में ही निहित है।

*घट घट के अंतर की जानत॥ भले बुरे की पीर पछानत॥*

– दसम ग्रंथ (चौपाई 387, पृ॰1387)

एक मुसलमान फ़क़ीर कहता है :

मेरा क़िरदगार मेरी आवश्यकताओं को मुझसे भी बेहतर जानता है।

फिर भी, प्रार्थना में अंतर्निहित उद्देश्य यह है कि हम अपनी आवश्यकताओं को जानें, पहचानें, उनको पाने के लिए तत्पर रहें और उनके मिलने पर प्रभु के कृतज्ञ हों।

*हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए।।*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰4, पृ॰450)

हे गुरु! हम तेरे बच्चे हैं, कृपा करके हमें सच्ची समझ का वरदान दो।

*हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे।।*

– आदि ग्रंथ (कलिआन म॰4, पृ॰1321)

अर्थात् हम अबोध बच्चों को, परम पिता ही समझ प्रदान करेंगे। कई दफ़ा यह देखने को मिलता है कि हमारी दुख–निवृत्ति की प्रार्थना स्वीकार नहीं होती। फिर भी इतना ज़रूर होता है कि हमारे अन्दर दुख को सहने के लिए बल बढ़ जाता है। उससे हम दुखों की चुभन तथा पीड़ा को कम महसूस करते हैं और सफलतापूर्वक उन पर क़ाबू पा लेते हैं।

# अन्तरीय कठिनाइयों से कैसे उभरें?

**हृदय** प्रार्थना करने का उच्च स्थान है और इसीलिए इसे प्रार्थना में लगाने से पहले शुद्ध और साफ़ करना ज़रूरी है।

**1.** शुद्धता : हृदय की शुद्धता में नम्रता और आदरपूर्वक प्रभु का भाव होता है जो कि दुनिया की तमाम चिन्ताओं और झंझटों से मुक्त होता है।

*आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि।*
*तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि।।*

– आदि ग्रंथ (मारू वार म॰3, पृ॰1093)

अर्थात् वह मालिक सब कुछ जानता है और वह स्वयं ही सभी कार्य पूर्ण कर देने में समर्थ है। उसके आगे खड़े होकर विनयपूर्वक प्रार्थना करो।

गुरु अर्जन साहिब भी फ़रमाते हैं कि दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करो :

*दुइ कर जोड़ि करउ अरदासि।।*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰737)

**2.** नम्रता : यह असहाय की स्थिति में जन्म लेती है, जिसमें विश्वास और भरोसा, दोनों का समावेश है।

**3.** प्रेमपूर्ण भक्ति भाव : अब हमें मन को, जो कि इधर–उधर भाग रहा है, स्थिर करना है। मन को स्थिर करने के लिये हमें अन्तर में कोई केन्द्र या स्थान ढूँढना है, जहाँ पर मन को बार बार रोक कर ठहराया जा सके, ताकि धीरे–धीरे हम जब चाहें, वहाँ पर मन को स्थिर कर लें। जब तक इस तरह का कोई आधार नहीं मिलता, तब तक जिज्ञासु बहुत ही नाज़ुक तथा डाँवाडोल स्थिति में होता है। जब हम बाहरी दुनिया और उसके सामानों से हटकर एक नई दुनिया में ध्यान की शुरूआत करते हैं, तो अनगिनत कल्प–विकल्प, जो कि अचेतन मन की गहराइयों में दबे पड़े हैं, से अपने आप को घिरा पाते हैं। इनसे मुक्ति के लिए या तो विवेक

से काम लिया जाए या अन्तरीय शक्ति के आगे प्रार्थना की जाए। इन सब कठिनाइयों को दूर करने का सबसे अच्छा और पक्का तरीक़ा अपने गुरु के स्वरूप का ध्यान करना है और उसमें ध्यान को टिकाना है। यह 'अन्तर्मुख होना' विकसित होता जाता है और धीरे–धीरे अन्तर जाने का रास्ता खुलता है और हमें दिव्य रूहानी नज़ारों एवं प्रभु के मधुर संगीत की बरक़त प्राप्त होती है।

इस अन्तरीय मार्ग में आगे अनगिनत बाधाएँ हैं। कभी–कभी साधक या जिज्ञासु अपनी प्रार्थना का उत्तर न आने से महसूस करने लगता है कि प्रार्थना में कोई सच्चाई नहीं है। कभी–कभी वह परमात्मा से बहुत दूर, अपने आप को एक अजीब और गहरी ख़ामोशी के क्षेत्र में पाता है, जहाँ वह अपनी तंरगों को महसूस करता है। कई साधक अपने आप को आँखों के पीछे गहरे अन्धकार में उलझा हुआ पाते हैं तथा वे उसके पार नहीं जा पाते। ये अन्धकार और ख़ामोशी के क्षेत्र इतने पेचीदा और भ्रामक हैं कि वहाँ पर साधक महसूस करने लगता है कि जैसे वह राह भूल गया हो। इस निराशा की अवस्था में वह केवल अपने भरोसे पर चलना चाहता है, पर गिर गिर पड़ता है। यह समय बड़ा नाज़ुक और दुखदायी होता है। वह मात्र अपने बलबूते पर इस भूल–भुलैया से नहीं निकल सकता। ऐसे भयंकर और डरावने माहौल में संत–सत्गुरु का मार्ग दर्शन ही लाभदायक होता है। यह मार्ग इस प्रकार की अनगिनत कठिनाइयों से भरा हुआ है। काल सत्ता ने माया की व्यूह रचना कर रखी है। वह बुद्धिमान से बुद्धिमान और होशियार से होशियार आत्माओं को भी इस अन्तरीय मार्ग में सभी संभव तरीक़ों से गुमराह करने की कोशिश में लगी रहती है। इसकी जीत इसी में होती है कि जीवों (सदेह आत्माओं) को पूर्ण रूप से अपनी जकड़ में रखे, जिससे उसका अधिपत्य बरक़रार रहे और उसकी शान में कोई कमी न आए। इन अन्धेरी ताक़तों से केवल उसी की सहायता से बचा जा सकता है, जिसने इन सब पर फ़तह पा रखी हो और जिसके भय में ये तमाम ताक़तें रहती हों। जो आत्माएँ सत्गुरु की छत्रछाया में रहती हैं, उसको ये ताक़तें नहीं सतातीं। केवल सत्गुरु की लम्बी भुजा तथा उसके मज़बूत हाथ ही जीव को अन्तरीय मार्ग, जो क़दम–क़दम पर ख़तरों से भरा हुआ है, पर बिना किसी हानि या डर के, सब ख़तरों से निकालकर ले जा सकता है।

# प्रार्थना के तीन प्रकार

**प्रार्थना** तीन प्रकार से की जाती है :

**1.** जुबानी या जिह्वा द्वारा : इसमें प्रार्थना जिह्वा द्वारा या जुबानी की जाती है। इसमें धर्म पुस्तकों में लिखी हुई नियत प्रार्थना को दोहराते हैं या किसी संत–महात्मा की बनाई हुई प्रार्थना का उच्चारण करते हैं। कई लोगों का विचार है कि ऐसी प्रार्थनाओं का ख़ाली उच्चारण अधिक लाभदायक नहीं होता। वास्तव में प्रार्थना किन्हीं नियत शब्दों को दोहराना मात्र नहीं है, बल्कि वह तो रूह की गहराइयों से निकली विरह–वेदना की पुकार है। ऐसी जुबानी प्रार्थनाएँ तो इस तरह की बात है कि कोई किसी और के कपड़े पहन ले और उस पर वे खिलें नहीं। संतों–महात्माओं की प्रार्थनाएँ हमारे लिए नमूने का काम करती हैं, ताकि वैसे ही विचार हमारे हृदय से भी निकलें तथा उसका प्रत्येक शब्द और भाव हमारा अपना भाव होकर निकले।

**2.** मानसिक : यह प्रार्थना ऐसी है जो मन ही मन दोहराई जाती है। यह तभी हो सकती है जब व्यक्ति अपने अन्तर में इसके लिए एक उचित आधार बनाए, जिसमें वह प्रभु की उपस्थिति का अनुभव करे और अपने विचारों (ध्यान) को एकाग्र कर सके। तब वह अपनी कमज़ोरियों का साफ़ व खुले तौर पर इक़रार करे, अपने तमाम पुरुषार्थों में उसकी मदद के लिए याचना करे और उसका धन्यवाद करे। अन्य कलाओं की तरह यह भी एक कला है और दूसरी कलाओं– जैसे संगीत या चित्रकारी के जैसे, इसे सीखने के लिए भी बड़े धैर्य और दृढ़–निश्चय की ज़रूरत होती है। शुरू–शुरू में मन इस ओर लगता नहीं है, पर धीरे धीरे इस को सत्गुरु की लगातार मधुर याद द्वारा, जो कि एक अंकुश का काम करती है, अभ्यस्थ और स्थिर करना होता है।

इस तरह की प्रार्थना करने के बाद साधक को उसकी दया भरी मौज के लिए कुछ समय इंतज़ार करना चाहिए, जो क्राइस्ट के शब्दों में "एक

फ़ाकता (कबूतर की एक क़िस्म) की तरह ज़मीन पर उतरती है।" उसकी दया से शांति भी मिलती है, जो कि उसे सिर से पाँव तक आनन्द में भर देती है। यह अनुभव मिलने पर इंसान अपने अंदर पूर्ण संतुष्टि का अनुभव करता है। इस अद्भुत दिखने वाले जगत का मोह, भूली–बिसरी यादों की तरह भूतकाल के गर्त में गिर जाता है। इस दुनिया में रहते हुए अब वह दुनिया का बन्दा नहीं रहता। वास्तव में क्या अद्भुत परिवर्तन है! कुछ लोग इस अनुभव को ही सब कुछ समझ लेते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। दृष्टिकोण में यह परिवर्तन गुरु के नूरी स्वरूप और उससे भी आगे की हमारी अंतरीय यात्रा के लिए अग्रदूत या सन्देशवाहक का काम करता है।

**3.** आत्मिक : सच्ची आत्मिक प्रार्थना के लिए साधक को अभी और इंतज़ार करना होगा। जब वह साधना करता जाता है, तो कभी–कभी वह स्थूल देह की क़ैद से ऊपर उठकर सतगुरु के नूरी स्वरूप से मिलता है और तब से अनगिनत अलौकिक दृश्य उसकी अन्तर की आँख के आगे खुलते चले जाते हैं, जिनका वर्णन करना असम्भव है। वह इस संसार में रहते हुए ही अन्तरीय उच्च मंडलों में जगह बना लेता है, जहाँ से केवल दया धाराएँ ही मिलती हैं। यहाँ पर वह विशुद्ध अध्यात्म के पक्के रंग में रंग जाता है। अब वह सांसारिक बुद्धि वाला व्यक्ति नहीं रहता, बल्कि वह रूहानियत से भर जाता है। वह एक ऐसे व्यक्ति में परिवर्तित हो जाता है, जो अपने दिव्य पुरुष (गुरुदेव) में लीन रहता है। इस प्रकार की अवस्था को हम आत्मिक या रूहानी प्रार्थना कह सकते हैं। इस तरह की प्रार्थना में साधक के अपने पुरुषार्थ का दख़ल नहीं होता है। इसमें सब कुछ गुरु की दया–मेहर और रज़ा से होता है। एक बार जब गुरु किसी आत्मा की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले लेता है, तो वह उस आत्मा से तमाम गुनाहों के धब्बों को हटाकर, उसे साफ़ करता है और आत्मा को कुन्दन बना देता है। इस अवस्था का छोटा–सा अनुभव हमारे सब शक़–शुबहे दूर कर देता है। यह आत्मा को ब्रह्मांडीय चेतनता में जगा देता है, आत्मा अपने आप में स्थित हो जाती है और किसी सन्देह का शिकार नहीं रहती। हमारी आत्मा निरोल होकर मौलिक रूप में पुकार उठती है :

मैं आत्मा हूँ, या, मैं भी वही हूँ जो तुम हो (अहं ब्रह्मास्मि)।

# उच्चस्वरीय प्रार्थनाएँ

उच्च्‍ स्वर में बोली जाने वाली प्रार्थनाएँ कुछ समय के लिए तो मन को ऊँचा उठा देती हैं और उसे गंभीरता प्रदान करती हैं। यदि ग़ौर से देखा जाए तो हम उनका वास्तविक मूल्य नहीं समझ पाते, क्योंकि ये प्रार्थनाएँ ज़मीन (आत्मिक) की तैयारी में मददगार नहीं होती। इसके विपरीत हम अक़्सर अपने आपको जनता की प्रशंसा तथा शाबाशी में उलझा हुआ पाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हम अक़्सर पाखंडी से बन जाते हैं। ऐसी प्रार्थनाएँ आत्मा की गहराइयों से नहीं निकलतीं तथा इसमें हृदय की पुकार का कोई योग नहीं होता। आमतौर से ये प्रार्थनाएँ श्रोताओं को रिझाने के लिए की जाती हैं, पर अंततः ये न तो श्रोता और न ही गायक की रूहानी तरक़्क़ी में सहायक सिद्ध होती हैं। कभी–कभी यह हमारे अन्दर भौतिक अनुभूति और trance (भाव–समाधि) की अवस्था पैदा कर देती हैं, पर इससे हमारी आत्मा जागृत नहीं होती, क्योंकि जागृति आत्म–ज्ञान से ही आ सकती है। प्रभु पर मनुष्य का जोश तथा तेज़ स्वर प्रभाव नहीं डाल सकते और न ही उसे ऊँची आवाज़ की आवश्यकता है। वह हमारी आत्मा की आत्मा है और चींटी के चलने की हल्की से हल्की आवाज़ को भी सुन सकता है। वह घट–घट और पट–पट का जाननहार है और उसे हमारी आवश्यकताओं और इच्छाओं का हमारे से पहले और हमारे से अधिक का पता है। ज़ोर–ज़ोर से ज़ुबानी प्रार्थना करने से आत्मिक दौलत प्राप्त नहीं हो सकती। केवल आत्मा की ज़ुबान से की गई मौन प्रार्थनाएँ ही सफल होने की क्षमता रखती हैं। बाक़ी प्रार्थनाएँ सब व्यर्थ चली जाती हैं।

क़ुरान शरीफ़ में यह फ़रमाया गया है :

> अपने रब्ब को चुपचाप दीनता के साथ पुकारो।

फिर फ़रमाया है :

शोर मचाने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि वह सब कुछ जानता है।

गुरु गोबिन्द सिंह जी का कथन है :

*हाथी की पुकार पल पाछै पहुंचत ताहि*
*चीटी की चिंघार पहिले ही सुनीअतु हैं।।*

— दसम ग्रंथ (अकाल उसतति, पृ॰36)

अर्थात प्रभु चींटी के दिल से निकली हुई आवाज़ को पहले सुनता है और हाथी की चिंघाड़ को बाद में।

# व्यक्तिगत और सार्वजनिक प्रार्थनाएँ

**साधक** को निजी या व्यक्तिगत प्रार्थना में ऊँचा–ऊँचा बोलने की आवश्यकता नहीं है; हमें सिर्फ़ विचारों की धारा को दूसरी ओर मोड़ना है। इसके लिए मन ही मन किया गया सुमिरन काफ़ी है।

*साईं दा की पावणा?*
*इद्धरो पट्टणाँ, ते उधरो लावणाँ।।*

— शाह इनायत

सार्वजनिक प्रार्थनाओं में हम अपने आन्तरिक भावों को बड़ा चढ़ा कर प्रकट करने लग जाते हैं। ऐसी प्रार्थनाओं में मन और ज़बान में एकरूपता या समन्वय नहीं होता। उस वक़्त हम केवल जनता की वाह–वाह के बारे में ही सोच रहे होते हैं। सारा वक़्त हम श्रोताओं की भावनाओं के अनुरूप सफल होने में लगे रहते हैं, ताकि उनकी जेबों से अधिक से अधिक चढ़ावा ले सकें या उन्हें अधिक से अधिक भाव विभोर कर सकें या फिर अपने लिए प्रशंसा के शब्द जुटा सकें। ये अधिकतर शिष्टाचार की प्रार्थनाएँ होती हैं, जो आमतौर पर उर्स के मौक़ों पर या विभिन्न महात्माओं के जन्मदिवस या निर्वाण दिवस के वार्षिक अवसरों पर आयोजित की जाती हैं। मुसलमानों के यहाँ क़व्वालियाँ और हिन्दुओं के यहाँ कीर्तन इसी वर्ग में आते हैं।

ये बनी बनाई प्रार्थनाएँ पुराने भक्तों के भावों पर आधारित होती हैं। जब तक ये प्राथनाएँ हमारे अन्तर से नहीं निकलतीं, तब तक ये सार्थक नहीं होतीं और इसी करके ऐसी प्रार्थनाएँ न तो स्वीकार्य हैं, और न ही ऐसे अवसरों पर भाग लेने वालों पर कोई अमिट छाप छोड़ती हैं, चाहे उन्हें गाने वाले हों या सुनने वाले। जो तीर कस कर सीने तक नहीं आता, वह निशाने तक नहीं पहुँच सकता। इसी प्रकार जो वचन हृदय से नहीं निकलते, वे उस समर्थ पुरुष तक नहीं पहुँच सकते, जो हमारी आत्मा की भी आत्मा है और जो पहले से ही हमारी सभी आवश्यकताओं को हमारे से अधिक जानता है। ❦

# सामुदायिक प्रार्थनाएँ

**सामुदायिक** प्रार्थनाओं के बारे में भी वही कहाँ जा सकता है, जो पहले वाले शीर्षक में कहाँ गया है। ये प्रार्थनाएँ मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजों, गुरुद्वारों, साइनागोग्ज़ तथा अन्य पवित्र स्थानों पर की जाती हैं। इसमें कोई व्यक्ति विशिष्ठ स्थान से धर्मोंपदेश करता है और श्रोता यांत्रिक तौर पर उसे सुनते हैं या कोई व्यक्ति प्रार्थना पढ़ता है और जन–समुदाय मिल कर उसे एक स्वर से दोहराते हैं।

कुछ विशिष्ट अपवादों को छोड़कर, बाक़ी लोग सप्ताह में या महीने में एक बार, जैसा भी बन पड़ता है, इस तरह की प्रार्थनाओं में सम्मिलित इसलिए होते हैं, क्योंकि यह एक परंपरा बन चुकी है। यदि ऐसी प्रार्थना हमारे अन्दर प्रभु को पाने के लिए तड़प न पैदा करे, जो कि ऐसी प्रार्थनाओं का पहला काम है, तो फिर इनसे कुछ और प्राप्त होने वाला नहीं है।

यदि ऐसी प्रार्थनाएँ सही तरीक़े से की जाएँ, तो ये लोगों का काफ़ी भला कर सकती हैं। हम पूरी नम्रता के साथ सभी की भलाई के लिए प्रार्थना कर सकते हैं, जो कि प्रभु को प्रिय है। यह एक प्रबल साधन है तथा यह राष्ट्र निर्माण और समाजों को एकता के सूत्र में पिरोने में सफल रही है।

*नानक नाम चढ़दी कला।। तेरे भाणे सरबत दा भला।।*

— जनम साखी, गुरु नानक (भाई बाला)

हे नानक! उस का नाम महान है, हे प्रभु! आप की इच्छा से सभी कल्याण हो जाए।

कुरान शरीफ़ में आया है :

हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जो संसार का पालनहार (रब) है, जो निहायत दयावान, बेहद मेहरबान है, और जज़ा (अन्तिम न्याय) के दिन

का मालिक। या अल्लाह! हम तेरी इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं। हमको सीधी राह चला— उन लोगों की राह, जिन पर तूने कृपा की, न कि उन लोगों की राह, जिन पर तेरा प्रकोप हुआ और न भटके हुओं की।

– कुरान शरीफ़ (1.1-7)

ऐ हमारे परवरदिगार! हमारी लग्ज़िशों (दोषों) को माफ़ कर दे। हमसे हमारे कामों में जो ज़्यादतियाँ हो गई हैं, उनसे दर गुज़र फ़रमा। हमें (राहे-हक़ में) साबित क़दम रखा और कुफ़्फ़ार (नास्तिकों और अविश्वासियों) की जमात पर हमें फ़तहमन्दी अता फ़रमा।

– कुरान शरीफ़ (3.147)

इस प्रकार की प्रार्थना करने में हमारा ध्येय क्या होता है? या तो हम प्रार्थना अपने आपको बेहतर बनाने के लिए या सुनने वालों को लाभ पहुँचाने के लिए करते हैं या फिर परमात्मा से सबके दुख–दर्द या आवश्यकता का हाल कहना चाहते हैं या फिर हम दुनिया के लोगों को अपने भक्ति भाव के बारे में बताना चाहते हैं। इस आख़िरी के लिए प्रार्थना करना न सिर्फ़ व्यर्थ है, बल्कि निश्चित रूप से हानिकारक भी है, हमें इससे हर क़ीमत पर बचना चाहिए।

क़ुरान शरीफ़ के सुराए बकर में यह आया है :

हे हमारे परवरदिगार! अगर हमसे (कोशिश और अमल में) भूल चूक हो जाए, तो उसके लिए जवाब तलब न कीजिए और हमें मुआफ़ कर दीजिए। ख़ुदाया! हम पर वैसी बन्दिशों और गिरफ़्तारियों का बोझ न डालिए, जैसा उन लोगों पर डाला था जो हमसे पहले गुज़र चुके हैं। हे अल्लाह! ऐसा बोझ हमसे न उठवाइये, जिसके उठाने की हममें शक्ति न हो! या ख़ुदा! हमारी कोताहियों को दरगुज़र कर, हमें मुआफ़ कर दे। हमें अपनी रहमतों से नवाज़ दे, तू ही हमारा आक़ा और मालिक है।

– कुरान शरीफ़ (2.286)

# प्रार्थना के लिए स्थान

**प्रार्थना** करने के लिए किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं होती। यह सबसे अधिक एक ख़मीर उठे (leavened) हृदय में फलती–फूलती है। इसके लिए सिर्फ़ एक शांत स्थान की आवश्यकता है, जहाँ दुनिया का शोर–गुल या कोई अन्य बाधा न हो। घर हो या बाहर, जहाँ भी ऐसा एकान्त हो सके वह स्थान ठीक है। इसके लिए तुम अपने सोने के कमरे को काम में ला सकते हो, यदि सारा कमरा उपलब्ध न हो, तो उसका एक भाग भी काफ़ी है। यदि यह भी संभव न हो तो कोई मन्दिर, मस्जिद या गिरजा भी काम में लिया जा सकता है, क्योंकि सब पूजा–स्थलों का मुख्य उद्देश्य यही है। यह भी न बन सके, तो एकान्त चलते हुए या नदी के किनारे या पहाड़ पर बैठकर सुमिरन करें। जैसा कि गुरु ने हुक्म दिया है, प्रभु से लिव लगाएँ और अपनी आन्तरिक भावनाओं को उसके आगे रखें।

वास्तव में सम्पूर्ण जगत ही प्रभु की रचना है तथा इसका उपयोग उसकी प्रार्थना के लिए किया जा सकता है।

*इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु॥*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰1, पृ॰463)

जिस जगह भी मालिक को याद करो या उससे प्रार्थना करो, वह जगह पवित्र जो जाती है। यह सारी धरती ही पवित्र स्थान है। कोई जगह भी हो, वह प्रार्थना करने के योग्य है। तुम कहीं भी प्रार्थना कर सकते हो।

अल–निसाई ने फ़रमाया है,

> मेरे लिए (सारी) ज़मीन ही मस्जिद और पाक जगह है। जहाँ कहीं भी मेरे उम्मत अनुयायियों के लिए (किसी आदमी को) नमाज़ का वक़्त आ जाए, वे उसे वहीं अदा कर लें।

परमात्मा ने ही सारी दुनिया बनाई है और वह ही सबका मालिक है। वह इंसानी हाथों के द्वारा बनाए गए मन्दिरों, मस्जिदों में नहीं बसता। वह परम आत्मा है और केवल आत्मा द्वारा ही उसकी आराधना की जा सकती है।

परमात्मा जिसने दुनिया तथा यहाँ की सभी चीज़ें बनाई हैं, वह ही सबका मालिक है। वह इंसानी हाथों के बनाए मन्दिरों, मस्जिदों में नहीं बसता।

– पवित्र बाइबिल (कार्य 17:24)

वे सभी स्थान पवित्र हैं, जहाँ भक्ति के साथ झुका जाए।

– ऑलिवर वेन्डेल होम्स जू०, 'शुरूआती कविताएँ' (पृ०31) ('The Early Poems')

कुरान शरीफ़ में आया है :

अल्लाह की ही मिल्कियत है, मशरिक भी और मग़रिब भी, तुम किसी तरफ़ भी मुँह करो उधर ही अल्लाह का मुँह है, क्योंकि अल्लाह सब जगह हाज़िर-नाज़िर है।

– कुरान शरीफ़ (2.115)

परमात्मा से प्रार्थना के लिए सच्चा स्थान यह मानव शरीर है, जिसमें कि प्रभु का वास है। इसके विपरीत हम इंसान के बनाए हुए बाहरी मन्दिरों, मस्जिदों में प्रार्थना के लिए जाते रहते हैं।

क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर की आत्मा तुम में वास करती है?

– पवित्र बाइबिल (I कुरिन्थियों 3:16)

*हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ॥*

– आदि ग्रंथ (प्रभाती म०3, पृ०1346)

एक मुसलमान फ़क़ीर कहता है :

*मसजिद अस्त आं दिल किह् जिस्मश साजिद अस्त।*

– मसनवी मौलाना रूमी (दफ़्तर 4, पृ.139)

अर्थात, यह दिल ही सच्ची मस्जिद है और शरीर सिजदा करने का स्थान है।

शरीर के अन्दर जा कर ही परमात्मा की सर्वोत्तम आराधना हो सकती है। प्रार्थना करने के लिए चिड़ी (Shuttle-cock) की तरह इधर से उधर भटकने की ज़रूरत नहीं है। सारी सुन्दरता और तेज हमारे अन्दर हैं। इंसानी शरीर से बाहर सभी आकृतियाँ पानी और मिट्टी की बनी हैं। सब वेद, पुराण, कुरान और अंजील सभी इसी बात को दोहरा रहे हैं।

एक मुसलमान फ़क़ीर कहता है :

*यार दर ख़ाना ओ मन गिर्दे-जहां मीगरदम,*
*आब दर कूज़ा ओ मन तिश्ना लबां मीगरदम।*

अर्थात, प्रीतम तो हमारे अपने घर में है मगर हम संसार में इधर उधर मारे–मारे फिर रहे है। अमृत तो हमारे अपने अन्दर है, पर हम प्यासे इधर–उधर फिर रहे हैं।

ईसा मसीह फ़रमाते हैं :

जब तुम प्रार्थना करो तो तुम शरीर की कोठरी में दाख़िल हो जाओ और बाहर के दरवाज़े बन्द कर दो (तवज्जोह को बाहर न जाने दो)। अपने अन्दर ही उस मालिक के आगे दिल का हाल खोल कर रख दो। वह गुप्त स्थान में की गई प्रार्थना को सुनेगा और उसका फल देगा।

– पवित्र बाइबिल (मत्ती 6:6)

यहाँ यह प्रश्न पैदा हो सकता है कि परमात्मा, जो इस शरीर में बसता है, वह हमें दिखाई क्यों नहीं देता?

इसके उत्तर में हम यह कह सकते है कि हमारी ये चमड़े की आँखें भौतिक चीज़ों को ही देख सकती हैं। ये इतनी स्थूल हैं कि परमात्मा के अत्यधिक सूक्ष्म दिव्य स्वरूप को नहीं देख सकतीं। जब तक देखने वाली आँख वस्तु के घनत्व के अनुरूप न हो, उसे हम देख नहीं सकते। इसलिए जब अन्तर की आँख खुलती है, तभी उसके द्वारा हम प्रभु को देख सकते हैं।

*नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी॥*

– आदि ग्रंथ (मारु की वार म॰5, पृ॰1100)

*परदा दूर करै आँखिन को, निज दरसन दिखलावै।*

– कबीर साहिब की शब्दावली, भाग 2 (शब्द 2, पृ.18)

आगे यह भी आया है :

*ऐवडु ऊचा होवै कोइ।। तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ।।*

– आदि ग्रंथ (जप जी पौड़ी 24, पृ॰5)

*दस इंद्री करि राखै वासि।। ता कै आतमै होइ परगासु।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी गुआरेरी म॰5, पृ॰236)

ईसा मसीह फ़रमाते हैं :

यदि तेरी दो से एक आँख बन जाए, तो तेरा
सारा शरीर नूर से भर जाएगा।

– पवित्र बाइबिल (मत्ती 6:22)

सच्ची प्रार्थना का अर्थ है, अपनी सुरत को शुद्ध मन और पूरी श्रद्धा से अपने अन्तर में एकत्रित करना। ऐसी प्रार्थना न सिर्फ़ अधिक मात्रा में फल देती है, बल्कि शीघ्र फल देने वाली भी होती है।

# प्रार्थना के लिए पूर्व आवश्यकताएँ

**1.** प्रभु रूप हस्ती की आवश्यकता :

प्रार्थना किसी हस्ती के आगे करनी होती है, पर यह ज़रूरी है कि हमें, उस हस्ती के अस्तित्व में पूर्ण विश्वास हो। अभी तक हमें उस प्रभु का अनुभव नहीं है, और ना ही उसका और उसकी ताक़त का उचित ज्ञान है। उसके बारे में हमारा ज्ञान सीमित है, वह या तो पुस्तकों पर आधारित है या ऐसे लोगों के कथनों पर, जो हमारी तरह ही प्रभु के अनुभव से हीन हैं। ऐसी अवस्था में हम किसी का ध्यान नहीं कर सकते। एक ऐसी हस्ती हो सकती है, जिसे प्रभु का ज्ञान हो और वह उस असीम प्रभु से अन्तर में जुड़ा हो। उसकी संगत में एक विशेष प्रकार का आनन्द और आकर्षण होता है। उसके प्रभुसत्ता युक्त शब्दों का असर एक़दम हमारे हृदय पर होता है और उनमें एक चुम्बकीय प्रभाव होता है। उसकी मौजूदगी में हम एक प्रकार की स्थिरता और आत्मिक शान्ति का अनुभव करते हैं। वह प्रभु के बारे में तर्क–विर्तक नहीं करता। वह केवल उस के बारे में, अधिकार पूर्ण सीधे–सादे लफ़्ज़ों में बात करता है, क्योंकि उसे प्रभु का अनुभव है तथा उसकी ज़िन्दगी का हरेक क्षण सचेतन रूप में प्रभु में स्थित रहता है। ऐसे व्यक्ति को हम सिद्ध पुरुष, मसीहा, सत्गुरु या प्रभु रूप हस्ती कह सकते हैं।

बाइबिल के सुसमाचारों में लिखा है कि परमात्मा अपने चुने हुए प्रतिनिधि या सिद्ध पुरुष के द्वारा बोलता है। और यह स्वाभाविक भी है। इंसान का उस्ताद इंसान ही हो सकता है। प्रभु के विज्ञान को सीखने के लिये हमें किसी प्रभु–रूप हस्ती की आवश्यकता है। संत–सत्गुरु वह pole (केन्द्र) है, जिससे प्रभु की ज्योति प्रसारित होती रहती है। केवल उसी के द्वारा हम प्रभु की तरफ़ जाने के रास्ते को जान सकते हैं। वह एक पक्का मार्गदर्शक है, जिस पर इस दुनिया और अगली दुनिया के सुख–दुख में निर्भर रहा जा सकता है।

जिसने मुझे देखा है, उसने मेरे पिता को देखा है ...।

मुझ में विश्वास करो कि मैं ही पिता में हूँ और पिता ही मुझ में है।

– पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 14:9,11)

ऊपर जो कुछ भी कहा गया है, उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि संत–सत्गुरु ही वह उपयुक्त हस्ती है जिनके चरणों में हमें पहुँचना चाहिए और हमें सारी प्राथनायें उसी के आगे करनी चाहिएँ। विश्वास ही हमारे सब पुरुषार्थों में सफल होने की मुख्य कुंजी है। इसलिये हमें गुरु के सामर्थ्य पर दृढ व पूरा भरोसा होना चाहिये। यदि हम अध्यात्म विज्ञान के पथ पर चलना चाहते हैं, तो हमें प्यार से और नम्रतापूर्वक उनके पास जाना चाहिये। हमें हृदय की गहराइयों से उनसे प्रार्थना करनी चाहिये।

परा–विद्या (आत्म–ज्ञान व प्रभु–ज्ञान), जो कि वास्तव में मूल ज्ञान है और जिससे सभी ज्ञान निकलते हैं, का ज्ञान देने के लिये यदि वह हमें स्वीकार करता है, तो हमें इसे अपना सौभाग्य समझना चाहिये।

**2.** संपूर्ण लवलीनता :

इस संदर्भ में अगली आवश्यकता सम्पूर्ण लवलीनता की है। प्रार्थना करते समय हमें अपना शरीर और शारीरिक सम्बन्धों सहित सब कुछ भूल जाना चाहिये।

एक ही लक्ष्य होना, सफलता के लिये परम आवश्यक है। यह सर्वविदित है कि एक व्यक्ति एक समय में दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता। हमें प्रभु और शैतान (काल) में से एक को चुनना है। एक–एक करके हमें अपनी आत्मा पर पड़े विभिन्न पर्दों से निकलना है जो कि आत्मा पर कफ़न की तरह लिपटे पड़े हैं। आत्मा एक जीवित सत्ता है और यह तब तक आगे नहीं बढ़ सकती, जब तक यह स्थूल, सूक्ष्म और कारण के बन्धनों से आज़ाद नहीं होती। सम्पूर्ण लवलीनता के द्वारा ही एक–एक करके ये सभी परदे अपने आप उठते जाते हैं और आत्मा को आध्यात्मिक क्षेत्र में उड़ने के लिये आज़ाद कर देते हैं। मुसलमान भाई इस लवलीनता को फ़िनाफ़िल्शैख़ (सत्गुरु में लीन होना) कहते हैं, जो कि अन्त में फ़नाफ़िल्लाह (परमात्मा

के लीन होना) में पहुँचा देती है। इस प्रकार यह फ़ना से बक़ा (नश्वर से अमरत्व) तक की यात्रा को पूर्ण करती है।

**3.** सत् और सन्तोष :

हमारी प्रार्थनाएँ तभी फलवती हो सकती हैं, जब हम जीवन के हर पहलू में अपने आप के सामने सच्चे हों। हमें शुद्ध विचार, सद्इच्छाएँ, सत्धारणा, शुद्ध आजीविका तथा शुद्ध व्यवहार रखना चाहिये। विचारों, शब्दों और कार्यों में शुद्धता हर चीज़ में आगे बढ़ने के लिये ज़रूरी है। सही चाल–चलन, पवित्रता और सच्चाई एक दूसरे से जुड़े हैं और वास्तव में ये सब ब्रह्मचर्य (आत्मसंयम) से ही निकलते हैं, जो कि ज़िन्दगी में बड़ी प्रेरणा का स्रोत है। केवल ब्रह्मचर्य के आधार पर ही ये तमाम चीज़ें फलती और फूलती हैं। मन–इन्द्रियों के बाहर मुखी फैलाव को नियन्त्रित करने में सन्तोष काफ़ी मददगार है। जब तब मन की भाग दौड़ को न रोका जाये और स्थिरता न प्राप्त हो, तब तक हम सच्ची और सुच्ची प्रार्थना नहीं कर सकते।

स्थिर मन पर जब परमात्मा की ज्योति पड़ती है, तो वह उसे प्रसारित कर सकता है।

*सतु संतोखु होवै अरदासि॥ ता सुणि सदि बहाले पासि॥*

– आदि ग्रंथ (रामकली म॰1, पृ॰878)

अर्थात सत् और सन्तोष धारण करके जो प्रार्थना की जाती है, उसे प्रभु हमेशा सुनता है।

> तुम अपने आपके सामने सच्चे रहो और जैसे रात के बाद सदा दिन आता है, इसी तरह से तुम आगे से किसी भी आदमी के लिए ग़लत हो ही नहीं सकते।

– विलियम शेक्सपियर, 'हॅमलेट' ('Hamlet,' Act 1, Scene 3)

**4.** वास्तविक और उभार देने वाला, इन्द्रियजनित ज्ञान :

प्रार्थना आत्मा की गहराइयों से निकलनी चाहिए। वह महज़ शब्दों का उच्चारण नहीं होना चाहिए। हम जिस चीज़ के लिए प्रार्थना करें उस चीज़ की सच्ची ख़्वाहिश होनी चाहिए, जो केवल बुद्धि विचार करके न हो, बल्कि अन्तर आत्मा से होनी चाहिए। प्रार्थना इस प्रकार से हो कि तुम्हारे अन्दर के भाव उभर आएँ और तुम्हारा रोम–रोम ज़ुबान बन जाए, सब रगें सितार

के तार बन जाएँ, उनसे प्रेम भरी भावना प्रकट होकर लवलीनता का रंग जमा दें, जिससे तुम्हारा विवेक जाग उठे।

*कबीर मुलाँ मुनारे किआ चढहि साँई न बहरा होइ॥*
*जा कारनि तूं बाँग देहि दिल ही भीतरि जोई॥*

– आदि ग्रंथ (सलोक भगत कबीर, पृ॰1374)

कबीर साहब कहते हैं कि हे इमाम! आज़ान के लिए ऊँचे मीनार पर जाकर क्यों बांग देता है, परमात्मा बहरा नहीं है। जिसके लिए तू बांग दे रहा है, वह तो तेरे दिल में विराजमान है।

**5.** स्वतः भाव :

प्रार्थना आत्मा की दर्द–भरी पुकार होने के साथ अत्यधिक सुन्दर और प्राकृतिक होती है। जब यह ठंडे पानी के फ़व्वारे की तरह अन्त : स्थल से फूटती है, तो इसे लम्बे–चौड़े विद्वतापूर्ण शब्दों तथा विशिष्ट मुहावरों की ज़रूरत नहीं होती। इसके विपरीत, साज–सज्जा स्वच्छन्द भाव की सुन्दरता को बिगाड़ देती है और अक्सर प्रार्थना करने वाले व्यक्ति को शब्दों के जाल में बाँध देती है। ये सब उस प्रार्थना को कृत्रिम बना देते हैं और वह सच्ची भावनाओं से दूर हो जाती है। ऐसी प्रार्थनाएँ हमें अपने आपके आगे झूठा कर देती हैं, जिनका कोई भी फ़ायदा नहीं होता।

परमात्मा सिर्फ़ उन प्रार्थनाओं को चाहता है, जो सच्चे दिल की गहराइयों से निकली हों चाहे वे सीधे–सादे लफ़्ज़ों ही में क्यों न हों। प्रभु बनाई तक़रीरों, व्यर्थ के उच्चारणों, दिखावटी शब्द रचनाओं और उनके आलोचनात्मक अध्ययन को नहीं चाहता।

मौलाना रूम ने हमें प्रार्थना की एक सुन्दर मिसाल दी है। एक सीधा सादा बालक गडरिया अपने प्यार भरे तरीक़े से कुछ कह रहा था कि हज़रत मूसा वहाँ से गुज़रे। वह कुछ इस तरह कह रहा था :

हे ख़ुदा! तू कहाँ है? मैं तेरा चाकर बनूं, तेरे कपड़े सीऊँ, तेरे सिर के बालों में कंघी करूँ! अगर तू बीमार हो तो तेरी सेवा करूँ, तेरे हाथ चूमूँ, तेरे पैर दबाऊँ, तेरे लिए दूध, दही, घी, पनीर ले आऊँ और तू खाए। ऐ रब! मैं तुझ पर अपनी सब भेड़-बकरियाँ वार दूँ।

बालक गडरिये के ये शब्द जब हज़रत मूसा के कान में पड़े, तो वे उस बालक पर गरजे कि तू तो पागल हो गया है, तू मोमिन नहीं, काफ़िर हो गया है, यह तू क्या बकवास और कुफ़्र बकता है, तू चुप रह। अगर तू अपनी ज़ुबान को इन बातों से नहीं रोकेगा तो कहर की आग बरसेगी, जो ख़लकत को जला देगी। आफ़ताब जैसे रब को इन सब चीज़ों की ज़रूरत नहीं, क्योंकि वह जिस्म नहीं रखता, न ही वह हाथ पैरों का मोहताज है। वह रूह है और तूने अपनी भावनाओं से उसका निरादर किया है।" बालक गडरिया यह सब सुनकर स्तब्ध रह गया। उसने अपने कपड़े फाड़ कर आह भरी और जंगल की ओर भाग गया और परमात्मा से इस अनादर के लिए माफ़ी मांगते हुए वह ज़ार–ज़ार रोने लगा।

उसे इस हद तक दुख हुआ कि वह अपनी सुध बुध खो बैठा और वहीं गिर गया। उसने अन्तर में ख़ुदा का नूर देखा और दया भरी आवाज़ सुनी, जो कि उसको दिलासा दे रही थी कि तेरी दुआ जो भी थी, सच्ची थी और क़बूल थी। जो भी उसने कहा, वह उसके लिए बहुत ख़ुश है। दूसरी तरफ़ जब मूसा अपने ध्यान में बैठे, तो उन्हें अनुभव हुआ कि परमात्मा उससे सख़्त नाराज़ है, क्योंकि उसने एक प्यार भरी आत्मा, जो उससे जुड़ी थी, उसे तोड़ दिया है। परमात्मा ने इसके लिए उसे झिड़का :

*तू बराए वस्ल करदन आमदी,*
*ने बराए फ़सल करदन आमदी।*

– मसनवी मौलाना रूमी (दफ़्तर 2, पृ.173)

अर्थात तुझे दुनिया में (परमात्मा के साथ) जोड़ने के लिए भेजा था, न कि परमात्मा से तोड़ने के लिए।

और कहा :

हर कोई अपनी-अपनी बोली और स्वभाव के अनुसार मुझे याद करता है। जो कुछ अपने निष्कपट, बिना चिकने चुपड़े शब्दों में बालक गडरिये ने कहाँ, वह सब मुझे स्वीकार्य है। लेकिन मैं तुमसे बहुत नाराज़ हूँ क्योंकि तुमने जो मुझसे जुड़ा हुआ था, उसे तोड़ दिया है। मैं अकेले शब्दों से प्रभावित नहीं होता, वे किसी प्रकार के हों, मुझे गौरवान्वित करें या न करें, पर बोलने वाले के

हृदय को साफ़ करते हों। मैं शब्दों की चमक-धमक को नहीं देखता बल्कि उनके पीछे छुपी हृदय और आन्तरिक शुद्धता को देखता हूँ, क्योंकि दिल की बस रही हालत ही आदमी की जुबान पर व्यक्त होती है। चाहे शब्द टूटे-फूटे ही क्यो न हों पर भाव को व्यक्त करते हों।

ऐ मूसा! इस संसार में एक तो पढ़े-लिखे लोग हैं जो चिकनी चुपड़ी बातों और तौर-तरीक़ों में उलझे रहते हैं। दूसरे वे लोग हैं जो प्यार में घायल हैं। जो उनके हृदय में होता है वही उभर कर आता है। वही हृदय की बंजर भूमि में कुमलाई हुई आत्माएँ अपनी सौम्यता और भव्यता पर बोध खो देती है, क्या तुम नहीं जानते कि सरकार भी बंजर भूमि पर कोई लगान नहीं लगाती। जो परमात्मा के रास्ते में शहीद हैं, उनकी देखरेख और ध्यान रखने की ज़रूरत है। प्यार का धर्म, बने-बनाए धर्मों की औपचारिकता और रस्मो-रिवाज़ से बिल्कुल भिन्न हैं। प्रेमियों के लिए, स्वयं प्रभु से बढ़कर कोई धर्म नहीं। एक जवाहर, जवाहर ही रहता है चाहे उस पर किसी पारखी का निशान भी न हो।

जब मूसा ने ये शब्द सुने, तो उसे डर का अनुभव हुआ, वह सीधा जंगलों की तरफ़ भागा और उस बालक गडरिये को ढूँढा। उससे कहाँ "मैं तेरे लिए ख़ुशख़बरी लाया हूँ, रब्ब ने तेरी प्रार्थना कबूल की है, तेरा कुफ़्र दीन के बराबर है, तेरा दीन जान का नूर है, बिना डर के तेरे मुँह में जो आता है, कहे जा।" बालक गडरिये ने उत्तर दिया, "ऐ मूसा! अब मैं जिस्म की हदों को पार करके बहुत दूर पहुँच चुका हूँ, मेरे अन्दर तब्दीली लाने के लिए तुम्हारी झिड़की ही काफ़ी थी। अब मैं उस महान प्रभु को जानता हूँ, मेरी हालत कहने सुनने से परे हो गई है।"

# 15 प्रार्थना के लिए समय

**प्रार्थना** के लिए न तो किसी ख़ास समय की और न ही किसी विशिष्ट घड़ी की आवश्यकता है। वास्तव में व्यक्ति बिना किसी रुकावट के लगातार प्रार्थना कर सकता है। यह आत्मा का उभार है, जो किसी भी क्षण ज्वालामुखी की तरह निकल सकता है। पर प्रार्थना किसी भी समय, दिन में या रात में, नियमित रूप से करनी चाहिए। ब्रह्म मुहूर्त या फिर संध्या (दिन रात मिलने का समय) इसके लिए बहुत ही अनुरूप और उपयुक्त हैं।

*अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु॥*

– आदि ग्रंथ (जप जी पौड़ी 4, पृ॰2)

गुरु नानक साहिब फ़रमाते है कि सच्चे नाम के साथ जुड़ने और मालिक के गुणों का चिन्तन करने के लिए शुभ समय अमृत वेला (ब्रह्म मुहूर्त) है।

हममें से अधिकतर लोग प्रार्थना का समय ही तलाशते रहते हैं। दुर्भाग्यवश हम इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अन्त तक हमें कोई उपयुक्त समय ही नहीं मिल पाता। प्रार्थना के लिए किसी लम्बे–चौड़े दार्शनिक भाषणों या प्रबन्ध की आवश्यकता नहीं है। व्यक्ति को प्रार्थना में अपने आन्तरिक भावों को सरल शब्दों में प्रकट करना चाहिए। एक सच्ची प्रार्थना के लिए किसी निश्चित समय और स्थान की आवश्यकता नहीं होती, हमें सिर्फ़ शरीर रूपी हरि मन्दिर में दो आँखों के पीछे आत्मा के निज स्थान पर ग़ौर से देखना होता है। हमें गुरु की तवज्जोह द्वारा दिए गए सिद्ध शब्दों का मानसिक जाप करना होता है। प्रार्थना के लिए इससे अधिक कुछ करने की ज़रूरत नहीं, लेकिन हमारे साथ मुश्किल यह है कि हमें यह भी पता नहीं होता कि प्रार्थना किस प्रकार की जाए। इस तरह की हालत में हमें यह प्रार्थना करना भी आवश्यक हो जाता है कि "हे मालिक हमें प्रार्थना करना सिखा।" इसके लिए हम संतों–महात्माओं की प्रार्थनाओं के नमूनों से लाभ उठा सकते हैं, जो कि पुस्तक के अन्त में दिये जा रहे हैं।

# प्रार्थना के लिए अवसर

**साधारणतया** यह देखने में आता है कि हम जब लाचारगी और मुसीबत की अवस्था में होते हैं, तो प्रार्थना का सहारा लेते हैं, पर जब हमें उस चीज़ की प्राप्ति हो जाती है, तो हम ऐसा सोचने लग जाते हैं कि यह हमारी कोशिशों का फल है और उसके बाद हम प्रार्थना की ज़रूरत नहीं समझते। हमें इस तरह की हानिकारक प्रवृत्ति से अपने आपको बचाए रखना चाहिए।

वास्तव में, हर अवस्था में प्रार्थना की आवश्यकता होती है। जब हम मुसीबत में होते हैं, तो उससे बचने के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए। मुसीबतों में जब सब कुछ असफल हो जाता है, तो सर्वशक्तिमान परमात्मा का विचार हमारे मन को शान्ति प्रदान करता है। जब सफलता सामने नज़र आती हो, तो प्रार्थना करो कि हम अहंकार से न भर जाएँ और इसके लिए प्रभु की दया कृपा माँगो, जिसके बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते। जब हमारी इच्छाओं की पूर्ति हो जाए या दुविधाओं से उभर आएँ, तो हमें उस सर्वशक्तिमान प्रभु के आगे दया-मेहर के लिए आभार व्यक्त करने के वास्ते भी प्रार्थना करनी चाहिए। परमात्मा हमारा प्यारा पिता है और हम उसके बगै़र रह भी नहीं सकते, अतः प्रार्थना हमारे जीवन का हिस्सा बन जानी चाहिए।

17

# प्रार्थना और पाप

**प्रार्थना** में अपने पापों व कमज़ोरियों को मात्र स्वीकार करने से कुछ नहीं बनता। अगर हम यह सोचते हैं कि पापों को मात्र स्वीकार कर लेने से वे सब धुल जाते हैं और आगे और पाप करने के लिए हम स्वतंत्र हो जाते हैं, तो यह हमारी भूल है। ऐसा विचार सहायक होने की बजाय, हमें लगातार पापों में ही गिराये रखता है। प्रायश्चित द्वारा पाप से मुक्ति का वरदान केवल परमात्मा या प्रभु रूप हस्ती, जो पापियों के उद्धार के लिए विशेष रूप से आती हैं, द्वारा ही मिल सकता है। हमारा काम सिर्फ़ यह है कि हम उसके आदेशों को ग्रहण कर उस पर अक्षरक्षः अमल करें तथा बाक़ी सब कुछ उस पर छोड़ दें।

*किव सचिआरा होइऐ किव कूड़ै तुटै पालि।।*
*हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि।।*

– आदि ग्रंथ (जप जी पौड़ी 4, पृ॰1)

या'नी किस प्रकार कोई उस सच्चाई को जान सकता है और किस प्रकार कोई असत्य के परदे को पार कर सकता है? गुरु नानक साहिब कहते हैं कि एक रास्ता वह है कि वह प्रभु की रज़ा को अपनी रज़ा बना ले– वह रजा, जिसके तहत हम इस संसार मे भेजे गये हैं।

प्रत्येक कर्म की प्रतिक्रिया होती है। जाने–अनजाने में की गई प्रत्येक भूल का उचित दंड होता है। जब तक हम अपने आपको हाड़–माँस से पैदा हुआ समझते रहेंगे, तब तक हम पाप कर्म से नहीं बच सकते क्योंकि अपने आपको हाड़–माँस का शरीर समझना संसार में बुराइयों का मूल कारण है। जब तक आत्मा स्वेच्छा से इन्द्रियों का घाट छोड़ना नहीं सीखती, तब तक इन्द्रियों के भोगों रसों का आनन्द और खिंचाव वट–वृक्ष की तरह बढ़ता चला जाता है।

*बहु सादहु दूखु परापति होवै।। भोगहु रोग सु अंति विगोवै।।*
*हरखहु सोगु न मिटई कबहू विणु भाणे भरमाइदा।।*

– आदि ग्रंथ (मारु म॰1, पृ॰1034)

परमात्मा प्रेम का स्वरूप है। यह सोचना ग़लत होगा कि यदि हम दूसरों को क्षमा कर देंगे, तो प्रभु भी हमें क्षमा कर देगा, अन्यथा वह ऐसा नहीं करेगा। इससे प्रार्थना का दुरुपयोग होगा, जो कि अधिक ग़लतियों के लिए साधन बन जाएगा।

दूसरी ओर, सत्स्वरूप हस्ती इस बात के लिए दोहरी कार्य नीति अपनाती है। एक तरफ़ जब वे हमारे पापों को क्षमा प्रदान करते हैं, तो साथ ही आगे पाप न करने से रोकते हैं। "जाओ और आगे से न करना," उनकी चेतावनी होती है।

"जा फिर से पाप न करना," क्राइस्ट का परिचित वाक्य है, जो वह पापियों को क्षमा कर देने के लिए इस्तेमाल करते थे। इस तरह से गुरु अपने जीवों को निर्मल करने का काम करता है और आत्मा को ऐसे साँचे में ढालता जाता है, ताकि वह परमात्मा को स्वीकार्य हो जाए।

प्रार्थना न तो सत्य के सिद्धांत को बदल सकती है और न ही उस सत्य की समझ दे सकती है। यह तो केवल प्रभु के लिए आन्तरिक प्रेम और विरह वेदना है और सत्गुरु के हुक्म का अक्षरक्षः पालन है, जिसके द्वारा प्रार्थना हमें प्रभु की तरफ़ ले जाती है। ज़ोर–ज़ोर से बोल कर की जाने वाली प्रार्थना नहीं, बल्कि प्यार से की गई प्रार्थनाएँ ही, प्रभु के सिद्धांत "प्रायश्चित द्वारा पाप से मुक्ति" में एक मोड़ साबित होती है।

यदि हम प्यार से प्रभु रूप हस्ती की समर्थता पर भरोसा रखें, तो उसकी दया–मेहर, उसके प्यार के स्त्रोत से स्वतः फूट उठती है। वास्तव में "प्यार के बदले प्यार" वाली कहावत चरितार्थ होती है और उसमें उसकी रक्षक दया धारा की कोई सीमा नहीं होती। यहाँ तक कि अगर वह हमें कोई सज़ा भी देता है, तो उसमें भी उसकी दया समाहित होती है?

# दूसरों के लिए प्रार्थनाएँ

**सभी** आत्माएँ प्रभु का अंश होने के कारण आपस में आत्मिक सम्बन्ध रखती हैं। अतः एक व्यक्ति दूसरों की भलाई के लिए प्रार्थना कर सकता है। उच्च कोटि की आत्माएँ हमेशा सारी मानव जाति की भलाई के लिए प्रार्थना करती हैं। वे इससे संतुष्ट नहीं होते कि अधिक से अधिक लोगों के लिए ही अधिक से अधिक भलाई की जाए जैसा कि आमतौर पर सामाजिक नेताओं का आह्वान है। उनकी प्रार्थनाएँ आमतौर पर इन शब्दों पर ख़त्म होती है : "तेरे भाणे सरबत दा भला।"

मुसलमान भाइयों के यहाँ भी पहले मोमिनों (अपने धर्मावलंबी भाइयों) के लिए तथा उसके बाद बाक़ी सबके लिए प्रार्थना की जाती है। क्राइस्ट ने अपने दुश्मनों के लिए भी प्रार्थना करने का हुक्म दिया है। हिन्दुओं में तो यह आम रिवाज़ है कि अपनी प्रार्थना के अन्त में कुछ कल्याणकारी प्रार्थना के शब्द सभी छोटे बड़े जीव-जन्तुओं के लिए कहे जायें। कुछ लोग सारी मानव जाति को बुराइयों से मुक्ति दिलाने के लिए प्रार्थना करते हैं। कुछ लोग प्रार्थना के द्वारा लोगों के दुख-दर्द का इलाज भी करते हैं।

आजकल टॅलिपैथी-विज्ञान में निर्विवाद रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि किस प्रकार दो लोगों के बीच में दिल की तार एक सुर में बजती है, चाहे उनके बीच में कितनी भी दूरी क्यों न हो। यह भी देखने में आता है कि विचारों की तरंगों में बड़ी भरी ताक़त है, जिसका प्रभाव असीमित होता है। क्या अनगिनत खंडों, ब्रह्मांडों का अस्तित्व और उनका विनाश प्रभु की विचार शक्ति का परिणाम नहीं? चाहे हम इस शक्ति को कुछ भी कहें- कलमा, शब्द, हुक्म या भाणा। इसी प्रकार, गुरु और शिष्य के बीच सहानुभूति की डोर प्रेम के मूक संदेशों को एक अकल्पनीय शक्ति के साथ इधर से उधर ले जाती है। प्रभु के साथ यह अद्भुत संबंध कोई भी

स्थापित कर सकता है। अपने आप को उस असीम प्रभु से जोड़ कर कोई भी विचारों की शक्ति के द्वारा दूसरों का अधिक से अधिक भला कर सकता है, क्योंकि मूल रूप से हम सब एक ही दिव्य धारा से बंधे हैं।

# प्रार्थना की स्वीकार्यता

**यह** आम अनुभव की बात है कि हमारी अधिकतर प्रार्थनाएँ स्वीकार नहीं होतीं। इनके न सुने जाने के कारण तलाश करना मुश्किल नहीं है। हम इस बात से तो परिचित होते नहीं है कि प्रभु की रज़ा क्या है और उसकी रज़ा हमारी भलाई के लिए, किस प्रकार काम करती है। हम अपनी अज्ञानता में अक्सर अपने लिए कुछ इस प्रकार की चीज़ें माँग लेते हैं, जो आगे आने वाले समय में सुखदायी होने की बजाय, अधिक दुखदायी होती हैं। यह कोई आश्चर्य नहीं कि हमारा प्रिय परम पिता अपनी असीम दयाधारा से, हमारी ऐसी प्रार्थनाओं को स्वीकार नहीं करता और इनका कोई फल नहीं देता, अन्यथा हम कभी भी इंद्रियों के भोगों–रसों से बचने योग्य नहीं होते।

> यदि तुम कुछ माँगते हो और तुमको वह नहीं मिलता, तो उसका कारण यह होता है कि तुमने उससे ग़लत दुआ की है जिसे तुम भोगों में ख़र्च करना चाहते हो।

आगे फिर,

*हम अपने आप से बेख़बर,*
*प्रायः माँगते अपने आपका ही नुकसान।*
*जो कि दैवी शक्तियाँ*
*हमारी भलाई के लिए नहीं देती;*
*अतः प्रार्थनाएँ हो कर बेअसर*
*देती हैं फिर हमें फ़ायदा।*

– विलियम शेक्सपीयर, 'एन्थनी एन्ड क्लियोपॅट्रा'
('Anthony and Cleopatra,' Act 2,Scene 1)

जॉर्ज मेरीडिथ (George Meredith) याद दिलाने के लिए हमें बताते हैं :

> जो प्रार्थना से ऊपर उठ कर अच्छे इंसान बनते हैं, केवल उनकी प्रार्थना की सुनवाई होती है।
>
> — 'दि ऑर्डियल ऑफ़ रिचर्ड फ़ेवेरेल' ['The Ordeal of Richard Feverel']

हम अक्सर करिश्मों के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं और ऐसी प्रार्थनाएँ स्वीकार न होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

> इंसान जो कोई भी प्रार्थना करता है, वह एक करिश्मे के लिए ही करता है। हर एक प्रार्थना का सार यही है, "हे महान प्रभु, यह कृपा करो कि दो और दो चार न हों।"
>
> — तुर्गेनीव, 'बाप और बेटे' [Ivan Sergeyevich Turgeniev- 'Fathers and Sons']

सारे वक़्त हम इन्द्रियों के भोगों–रसों का जीवन जी रहे हैं और अभी हमें यह पता नहीं है कि इस तस्वीर का दूसरा पहलू भी है– इंद्रियों से परे का जीवन। हमारी अधिकतर प्रार्थनाएँ कामनाओं से भरी होती हैं। इसलिए, अगर वे सारी की सारी, बिना किसी रोक–टोक के स्वीकार हो जाएँ, तो हम स्वाभाविक तौर पर नैतिक मूल्यों के स्तर से नीचे गिरते चले जाएँगे और दिन–ब–दिन हमारे गुनाहों में बढ़ोत्तरी होती चली जाएगी। तब इस संसार के क़ैदख़ाने और जिस्म–जिस्मानियत के भोगों–रसों से बच निकलने का शायद ही कोई मौक़ा मिले। नतीजा यह होगा कि हम हमेशा के लिए परमात्मा की बादशाहत (एक बिछुड़ा हुआ देश) से दूर परदेस में ही रहेंगे, जिसमें वापस प्रभु से मिलने की कोई उम्मीद नहीं होगी। जब एक शिष्य अपने गुरु को याद करता है, तो वह अपने अन्दर एक राहत और रूहानी नशा महसूस करता है। इसको टॅलिपैथी या दिल से दिल को राह कहाँ जाता है। इसी प्रकार, हम अपनी सुरत को उस असीम प्रभु के साथ जोड़ कर प्रभु शक्ति के महान भंडार से जुड़ सकते हैं, जिसका उपयोग लोगों की भलाई के लिए किया जा सकता है। इस उद्देश्य के लिए व्यक्ति अपने ध्यान को दिव्य धरातल पर टिकाता है, जिसमें सब कुछ स्थित है और वहाँ से प्रभु की दया–धारा को उस व्यक्ति या समाज तक पहुँचाता है, जिनका कि वह भला चाहता है। इस प्रक्रिया में, दूसरों की इच्छाओं को सृष्टि–कर्त्ता के समक्ष नहीं रखना होता, बल्कि सिर्फ़ उसके प्रेम और ख़ुशी

का आह्वान करना होता है तथा वान्छित परिणाम के लिए उसकी दयाधारा का इंतज़ार करना होता है।

> यदि रेडियो की पतली अंगुलियों (band switch) को घुमा कर मधुर संगीत अन्धेरे में भी सुना जा सकता है और एक महाद्वीप या समुद्र के पार भी उसे पहुँचाया जा सकता है, तो फिर मृत्युलोक वासियों को आश्चर्य किस बात का, यदि प्रभु हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है।
>
> — इथिल रोमिंग फुल्लर– 'प्रमाण' [Ethil Roming Fuller- 'Proof']

जब कि इंसान सृष्टि का एक छोटा सा हिस्सा है, लेकिन हर एक के अन्दर एक असमिता का भंडार है। प्रभु की देन से यद्यपि हम सीमित दृष्टि में स्थित है। हम उस महान रचना, जिसे शान्ति के परिचारक अलॅक्ज़ॅन्डर पोप ने प्रबल भूल–भूलैया कहा है, को हम न तो जान सकते है और ना ही समझ सकते हैं। जो हठी, बहुत कमज़ोर, संकुचित तथा बहुत अन्धकार में है उस व्यक्ति के लिए यह रचना वास्तव में बहुत बड़ी है, जबकि वह परमात्मा की रचना की महान मशीनरी का एक बहुत छोटा सा हिस्सा है।

आगे महान कवि, पोप हमें कहते हैं :

*स्वर्ग छुपाता है, सभी प्राणियों की भाग्य की पुस्तक।*
*बाक़ी है गुप्त, सब वर्तमान को छोड़ कर।*
*सारी प्रकृति कला उसकी, पर इससे विदित होता नहीं*
*है सब दिशाओं अवसरों में, पर नहीं पड़ता है दीखा।*
*हर विघटता एकता में, पर समझ आता नहीं।*
*हर बुराई के खंड में, सार्वभौमिक भलाई में,*
*और घमंड के विरोध में, बुराई के कारणों के विरोध में।*
*सच ही सर्वथा है, जो भी कुछ है ठीक है।*
*तब लो स्वतः को पहचान, प्रभु को जांचने का न लगाओ अनुमान।*
*मानवता का उचित अध्ययन, ही है अध्ययन मानव का।*
*विविध विचार और विविध कामना, मिलकर करते हैं मतिभ्रम।*
*सर्व साधनों का मालिक हो कर, फिर मांग उन्हीं की करता है।*
*जबकि सब अनंत दुविधा में, करता है सच का भी वो निर्णय।*

— 'मानव पर निबन्ध' [Alexander Pope- 'Essay on Man'- Epistle i & ii]

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने संकुचित दृष्टिकोण से किसी चीज़ के लिए प्रार्थना करता है, पर वह यह नहीं जानता कि वह प्रभु के रास्ते में मददगार होगी या नहीं। उदाहरण के लिए गर्मी के मौसम में, एक और तो शहर के लोग सख़्त गर्मी से बेहाल होकर, बारिश के लिए प्रार्थना करते हैं, तो दूसरी ओर गाँव में अपनी फ़सल पकाने के लिए किसान तेज़ धूप और गर्मी चाहते हैं।

मनुष्य केवल सामने के हालात को ही देखता है और आगे के हालात से अपरिचित रहता है। तो वह किस तरह अपनी भलाई जान सकता है? अक्सर वह उन चीज़ों को माँगता है, जो यदि उसे प्राप्त हो जाएँ, तो उसके लिए क्लेश की जड़ भी बन सकती है और बहुत पछतावे के साथ उसे अपने क़दम वापस लेने पड़ते हैं।

इस विषय में "स्वर्ण स्पर्श" की कहानी बड़ा महत्त्व रखती है। राजा मिडॉस को बहुत लम्बे समय की प्रार्थना के बाद एक वरदान मिला कि जिस चीज़ को भी वह स्पर्श करेगा, वह सोना हो जाएगा। कुछ क्षणों की प्रसन्नता के बाद उसे अपनी ग़लती का अनुभव हुआ। जब खाना उसने मुँह में रखा, तो वह सोने के पिंड में बदल गया, होठों ने जैसे ही पानी को छुआ तो वह भी ठोस सोना बन गया। उसकी इकलौती पुत्री दौड़ी–दौड़ी आई तो पिता से गले लगी और वह सोने का बुत बन गई। जब वह नरम नरम बिस्तरे पर गया तो उसने अपने आपको सख़्त धातु के बिस्तर व तकिए पर पाया।

परमात्मा या सत्स्वरूप हस्ती के लिए हमारा भूत और भविष्य एक खुली किताब की तरह है। वह कभी भी ऐसी प्रार्थनाओं को मंजूर नहीं करता जो हमारे लिए बंधन का कारण बनें। एक प्यारा पिता अपने बच्चों को किस तरह वह चीज़ देगा, जो बाद में उसके लिए ज़हर (दुख का कारण) बने? एक फ़ारस का शायर कहता है :

> मेरा ख़ुदा मेरी ज़रूरियात को पूरा करने के लिए मुझसे भी अधिक चिन्तित है,
> मेरा सारा पुरुषार्थ इन तमाम चीज़ों के लिए दुखदायी कार्य ही है।

इसलिए हमेशा मालिक से ऐसी चीज़ें मांगो, जो वह हमारे लिए उचित समझे।

*नाथ कछूअ न जानउ।। मनु माइआ कै हाथि बिकानउ।।*

– आदि ग्रंथ (जैतसरी भगत रविदास, पृ॰710)

ख़्वाजा निज़ामी प्रार्थना करते हैं :

*बर आं दारम ए मस्लहत ख़्वाहे-मन,*
*किह् बर मस्लहत मी शवद राहे-मन।*
*रहे-पैशम आवर किह् अंजाम कार,*
*तू ख़ुशनूद बाशी व मन रुस्तगार।*

अर्थात हे मेरे ख़ैरख़्वाह! मुझे उस रास्ते पर चला, जिस पर चलने से तू ख़ुश हो जाए और मेरी नजात (मुक्ति) हो जाए।

क़ुरान शरीफ़ में आया है :

हे मालिक! हमें इस दुनिया में वही कुछ दे जो भला हो, जो आख़िरत (परलोक) में भी भलाई दे और हमें नरकों के दुखों से बचाये रखे।

– क़ुरान शरीफ़ (2.201)

❧

# प्रार्थना करने की आवश्यकता

**हम** परमात्मा को व्यर्थ के उच्चारणों या ख़ुशामद भरे वचनों से नहीं जीत सकते, न ही उसका कुछ घटता–बढ़ता है, चाहे हम प्रार्थना करें अथवा नहीं। वह तो दया का स्वरूप है। उसकी दयाधारा हम में से प्रत्येक में बह रही है, जिसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते। पर नम्रता और विश्वास भरी विनतियाँ करने से हम उस दयाधारा से अधिक लाभ उठा सकते हैं। नम्रता और विश्वास हमारे मन को साफ़ करते हैं और उसे प्रभु की दयाधारा जज्ब करने के लायक़ बना देते हैं। इन दोनों से हमारे अधोमुखी मन के कमल को, जो इस वक़्त इन्द्रियों से जुड़ा है, ऊर्ध्वमुखी करने में मदद मिलती है। जब तक हम मन के रुझान को ऊर्ध्वमुखी नहीं करते, तब तक प्रभु की दयाधारा का उसमें सीधा संचार नहीं हो सकता। प्रार्थनाएँ, जो नम्रता और शुद्ध हृदय से की गईं हों, वे ही इंसान के मन और प्रभु की दयाधारा के बीच एकता का संबंध स्थापित करने में सहायता करती हैं। मालिक के आगे अपने कार्यों और ज़रूरतों की पैरवी के लिए इंसानी अक़्ल एक नहीं, बल्कि या कानूनी दाँव–पेंच की ज़रूरत शुद्ध और प्यार भरा हृदय चाहिए, जोकि उसकी दयाधारा से एकरस हो सके और तब उसकी दयाधारा स्वतः ही हमारी ओर आकर्षित होगी।

परमात्मा तो आगे ही पूर्ण प्रेम है, हम उसको और अधिक प्रेम स्वरूप होने के लिए नहीं कह सकते। वह आगे ही अंतरयामी है। क्या हम उसको ऊँची और प्रभावशाली प्रार्थना द्वारा कुछ और कह सकते हैं, जिसका कि उसको पहले से पता न हो? हम अपने दृढ़ निश्चय और प्रार्थना से पूर्ण को और अधिक पूर्ण नहीं कर सकते। हमें तो सिर्फ़ "ठहरना और इंतज़ार करना है," जैसा की कवि मिल्टन ने कहा है, और उसकी दयाधारा स्वतः ही हमारी ओर आकर्षित होगी और हमारे रोम–रोम को सराबोर कर देगी।

परमात्मा को किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं— न तो इंसानी पुरुषार्थ की और ना ही अपनी दातों की। उसकी हालत शाही है। हज़ारों सेवक उसकी आज्ञा में रहते हैं, और धरती व समुद्र के ऊपर बग़ैर आराम के भागे फिरते हैं। अतः जो केवल उसकी आज्ञा में खड़े रहते हैं और इंतज़ार करते हैं, वे भी सेवक होते हैं।

— जॉन मिल्टन (John Milton- Sonnet-XVI)

परमात्मा अटल है। आदि मध्य और अन्त एक रस रहने वाला है।

*आदि सचु जुगादि सचु॥*
*है भी सचु नानक होसी भी सचु॥*

– आदि ग्रंथ (जप जी मूल मंत्र, पृ॰1)

कि जब कुछ भी नहीं था तो सच था, जब युग शुरू हुए तब भी सच था, अब भी सच ही है और आगे हमेशा सच ही रहेगा।

सत् सनातन प्रभु हमेशा अपनी रचना से प्यार करता है।

— डब्ल्यू. बी. यीट्स [William Butler Yeats]

प्रभु की दया–धारा प्राप्त करने का रास्ता अत्यधिक परिश्रम और चीख़ने चिल्लाने में नहीं है। मनुष्य के लिए यह काफ़ी है कि वह शिव–नेत्र पर एकाग्र होकर चुपचाप प्रतीक्षा करे। सिर्फ़ इंतज़ार और विश्वास के द्वारा ही अन्तिम सत्य तक पहुँचा जा सकता है। प्रार्थना का फ़ायदा इसी में है कि वह हमारी सोच को सही कर दे, ताकि प्रभु की इच्छा को इंसान जान सके।

*जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहि इहु बिसुआसु होइ आइओ॥*
*कै पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइओ॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰205)

इंसान का कर्त्तव्य सिर्फ़ यह है कि वह हमेशा परमात्मा की अनगिनत दातों और शुभ आशीषों के लिए कृतज्ञ रहे। इसके विपरीत, हम उसकी दातों में इतने लम्पट हो जाते हैं कि हम प्रभु को ही नहीं विसारते, बल्कि

अपने आप को भी भूल जाते हैं और अक़्सर हम कामनाओं के अंधड़ में बह जाते हैं।

*दाति पिआरी विसरिआ दातारा॥*
*जाणै नाही मरणु विचारा॥*

— आदि ग्रंथ (धनासरी म॰5, पृ॰676)

कि हम दातों में खो जाते हैं और उस दातार (प्रभु) को भुला देते हैं और हम यह भी भूल जाते हैं कि हमें भी एक दिन मरना है।

21

# प्रार्थना के लाभ

**प्रार्थना** अध्यात्म का सार है। यह शरीर मन और आत्मा को एक अदभुत उभार देती है। यह हमारे अन्तर में पूर्ण सन्तुष्टि और तृप्ति पैदा कर देती, जो कि किसी अन्य साधन से संभव नहीं। प्रार्थना से जो शान्ति मिलती है, वह अद्‌भुत और अकल्पनीय है। इससे हमारे अन्तर में एक अद्वितीय सुख शान्ति उतर आती है। प्रार्थना के अन्दर एक बड़ा भारी बल है। यह इंसान को जीवन के संघर्ष का निडरता व सफलता पूर्वक सामना करने के लिए ताक़त तथा योग्यता प्रदान करती है।

वास्तव में प्रार्थना सभी बीमारियों, अधिभौतिक (बीमारियाँ और कष्ट), अधि–दैविक (दुर्घटनाएँ) अधि–आत्मिक (मानसिक बुरी प्रवृत्तियाँ) का वाहिद इलाज है तथा इंसान को आंतरिक शांति और संतोष प्राप्त होता है। यह इंसान को आशा और धैर्य प्रदान करती है और उसे पुनः शान्त अवस्था में ले जाती है।

प्रार्थना वह कुंजी है, जो कि परमात्मा की बादशाहत को खोलती है। यह हमारे अन्तर के कपाट को भी खोलती है और भरपूर शक्ति व सम्पन्नता का संचार करती है।

जहाँ पर सारे इंसानी पुरुषार्थ निष्फल हो जाते हैं,
वहाँ पर प्रार्थना ही काम करती है।

– ई॰ एम॰ बाउन्ड्स (E.M. Bounds)

लॉर्ड टैनिसन हमें बताते हैं :

जिन चीज़ों की दुनिया में कल्पना की जाती है,
प्रार्थना के द्वारा उससे भी कहीं अधिक चीज़ें प्राप्त
की जा सकती हैं।

– एल्फ़्रेड टेन्निसन (Lord Alfred Tennyson- 'The Passing of Arthur')

यद्यपि प्रार्थना शान्ति लाने में असफल सी दीख पड़ती हैं। फिर भी इसमें असहनीय पीड़ा से उभरने की ताक़त है। अन्तरीय परिवर्तन के साथ ही हमारे दृष्टिकोण में भी बदलाव आता है, जिससे जीवन के प्रति हमारा नज़रिया भी एकदम बदल जाता है। इससे हरके वस्तु नये आध्यात्मिक रंग में रंगी दीख पड़ती है।

प्रार्थना सच्चाई के प्रति हमारी आँखें खोल देती है। यह हमें हर वस्तु को उसके असली रंग में देखने योग्य बना देती है। इससे ज़िन्दगी को एक नया मापदंड मिलता है, जो धीरे–धीरे इंसान को एक नई दुनिया में ले जाता है, उसे एक नई ज़िन्दगी देता है। प्रार्थना से भरे जीवन के फलस्वरूप इंसान ब्रह्मांडीय चेतनता पा जाता है और प्रभु के अदृश्य हाथ को प्रभु की इच्छा और उद्देश्य के अनुरूप कार्य करते हुए देखता है। यह अनुभव इतना विलक्षण और सूक्ष्म है कि एक मोहरबन्द किताब की तरह आम आदमी वहाँ झाँक भी नहीं सकता। जितना ज़्यादा आंतरिक संबंध स्थापित हो जाता है, उतना ही आत्मा प्रभु को जानती चली जाती है। जब तक पूरा तारतम्य स्थापित न हो जाए, तब तक हमारी आत्मा परमात्मा की सचेतन सहकर्मी (Conscious Co-worker) नहीं बन पाती।

# प्रार्थना के विभिन्न स्तर

**समय** के साथ–साथ जिज्ञासु भौतिक सुखों से ऊपर उठकर अधिक से अधिक आध्यात्मिक सुखों की ज़रूरत का अनुभव करने लगता है। बृहदारण्यक उपनिषद (1:3:28) में हम निम्न प्रार्थना पाते है :

*असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतं गमय*

अर्थात असत्य से हमें सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चल।

जैसे–जैसे साधक अन्तर का अनुभव पाने लगता है, तो सारे सांसारिक सुख उसे तुच्छ प्रतीत होने लगते हैं। अटल सत्य के थोड़े से अनुभव से ही, उसे संसार की सदा बदलती वस्तुओं में कोई सुख प्रतीत नहीं होता और अब वह भौतिक सुखों को नहीं माँगता।

*किआ माँगउ किछु थिरु नाही।।*

– आदि ग्रंथ (धनासरी भगत कबीर, पृ॰692)

सारा संसार "खाओ पीयो और ऐश करो" सिद्धान्त को अपना कर मूर्खता में फँसा हुआ है। किसी के पास भी अपने आप (आत्मा) और परमात्मा के बारे में सोचने का समय नहीं है। लेकिन एक सच्चे साधक के ध्यान को संसार की कोई भी वस्तु अपनी ओर लगाये नहीं रख सकती। जो कुछ उसे मिलता है, वह उसका सही उपयोग करता है और उसे शरीर की अति आवश्यक ज़रूरतों के लिए ही बरतता है, और अपना बाक़ी समय साधना (आध्यात्मिक अभ्यास) में व्यतीत करता है, ताकि अपनी आत्मा का अधिक से अधिक भला कर सके।

*खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक।।*
*भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी बावन आखरी म॰5, पृ॰261)

इसके बाद साधक अपने अन्तर में प्रभुसत्ता के प्रकट होने के लिए ही जीता है और उसकी शान का गुणगान करता रहता है।

*घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल।।*
*नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि।।*

– आदि ग्रंथ (बिहागड़े की वार म॰4, पृ॰554)

साधक इस मार्ग में अपनी अज्ञानता का भी अनुभव करता है और अपनी असमर्थता को जानते हुए मालिक के आगे सहायता के लिये प्रार्थना का हाथ पसारता है।

*मो कउ तारि ले रामा तारि ले।।*
*मैं अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे।।*

– आदि ग्रंथ (गोंड भगत नामदेव, पृ॰873)

जैसे–जैसे उसकी आन्तरिक दृष्टि बदलती है, वैसे–वैसे प्रार्थना भी बदलती चली जाती है। पहले वह शरीर और शारीरिक आवश्यकताओं को महसूस करता है, तो उनकी पूर्ति के लिये प्रार्थना करना ज़रूरी समझता है, पर ज्यों–ज्यों वह आत्मिक मार्ग पर बढ़ता है, तो उसकी प्रार्थना का रुख़ बदल जाता है और अब वह ऐसी बाधाओं जैसे इन्द्रियों के वेग, मानसिक चंचलता और संस्कारों के प्रभाव से बचने के लिये प्रार्थना करता है।

यह काल साधक के जीवन में सर्वाधिक महत्त्व रखता है। जब तक असलियत में वह अपने आपको नहीं जान लेता, आत्म–ज्ञान नहीं पा लेता, तब तक वह निरंतर बेचैनी की अवस्था में रहता है। वह न तो पूरी तरह संसार को होता है, न ही प्रभु का। सांसारिक लोगों की नज़र में वह एक पवित्र इंसान होता है, पर वह अपने दिल की गहराइयों में जानता है कि वह ख़ामियों से भरा हुआ है।

*फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु।।*
*गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु।।*

– आदि ग्रंथ (सलोक सेख फरीद, पृ॰1381)

साधक कई बार इस खींचा–तानी की अवस्था में इस झमेले से बचने की और इससे दूर होने की कोशिश करता है, पर कुछ समय बाद

अन्तरीय आकर्षण उस पर उतरता है और वह फिर से प्रभु की ओर लग जाता है।

*मारग चलते जो गिरे, ताकउ नाही दोसा।।*
*कहै कबीर बैठा रहै, तां सिर करड़े कोसा।।*

— कबीर सामग्र (60, पृ॰ 402)

जब तक व्यक्ति इन्द्रियों को वश में करने योग्य न बने और मन की अस्थिरता पर क़ाबू न पाये, तब तक परमात्मा की दया भरी ज्योति का उस पर अवतरण नहीं होता।

धन्य हैं वे, जिनका हृदय शुद्ध है, क्योंकि वे ही परमात्मा को देखेंगे।

— पवित्र बाइबिल (मत्ती 5:8)

यदि तेरी एक आँख बन जाये, तो तेरा सारा जिस्म नूर से भर जायेगा।

— पवित्र बाइबिल (मत्ती 6:22)

*दस इंद्री करि राखै वासि।।*
*ता कै आतमै होइ परगासु।।*

— आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰236)

मन की चालें बहुत ही सूक्ष्म और ख़तरनाक हैं। यह अक्सर छिपकर हमला करता है और अचानक ही साधक को गुमराह कर देता है। हमारे अन्दर छुपी बुराइयाँ अदृश्य होकर भी बहुत शक्तिशाली होती हैं और वक़्त पाकर दोबारा कभी भी उभर कर घातक सिद्ध हो सकती हैं। मन का दायरा बिजली की तरह तेज़, आकस्मिक और शीघ्र ही बदलने वाला है। मन का बन्धन मनुष्य को लाचार करने वाला होता है। यहाँ पर समर्थ गुरु की सहायता और बल की आवश्यकता होती है, जो कि उसे आगे बढ़ाने में मददगार होती है।

*गुरु के बल मन को मारो।।*

— सार बचन (18:2)

मौलाना रूम भी यहीं फ़रमाते हैं :

*हैच नकुशद नफ़्स रा जुज़ ज़िल्ले-पीर।*

– मसनवी मौलाना रूमी (दफ़्तर 2, पृ.242)

*सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई।।*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰4, पृ॰758)

# मालिक से क्या माँगना चाहिए?

**एक** स्त्री विवाह के बाद अपना सब कुछ अपने पति के अर्पण कर देती है, और वह जैसा भी हो, जीवन के इस नए तौर को प्रसन्नतापूर्वक अपना लेती है। पति के सिवा अब उसे अन्य कोई नहीं भाता। यह अब पति की ज़िम्मेदारी बन जाती है कि वह उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करें और उसकी सुख सुविधा का ध्यान रखे।

*जिस की बसतु तिसु आगै राखै।। प्रभ की आगिआ मानै माथै।।*
*उस ते चउगुन करै निहालु।। नानक साहिबु सदा दइआलु।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी सुखमनी म॰5, पृ॰268)

*जा का मीतु साजनु है समीआ।।*
*तिसु जन कउ कहु का की कमीआ।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰186)

एक बादशाह विदेश गया। जाते समय उसने अपनी रानियों से पूछा कि उनके लिये वह क्या लाये। किसी ने क़ीमती कपड़े, किसी ने खाने के पदार्थ, किसी ने हार–शृंगार के सामान, किसी ने लाल, किसी ने जवाहरात माँगे। पर उनकी सबसे छोटी रानी ने, जो लोगों की दृष्टि में पगली थी, पर वैसे सयानी थी, यह माँगा, "शहंशाह जी! बस एक तुम आ जाओ, मुझ दासी को चरणों में रखो, मुझे सब कुछ मिल जायेगा।" बादशाह वापस आया, सबकी फ़रमाइशें ले आया, हर एक को माँगे हुए पदार्थ भेज दिये और आप छोटी रानी के महल चला गया। रानी के धन्य भाग! पिया घर आये। बादशाह के हृदय में यह भाव था कि जो मुझे चाहती है, उस पर मैं सब कुछ कुर्बान कर दूँ। रानी चरणों में बैठकर सब दातों के दातार के चरण–स्पर्श कर रही है, उसकी प्रेम भरी दृष्टि से निहाल हो रही है। बाक़ी रानियों को तो दो–दो या चार–चार पदार्थ मिले, पर वे

पिया के बिना व्याकुल हो रही थीं। पिया बिना ये हार–शृंगार किस काम के।

इसी तरह हम भी अपनी अल्प–मति के कारण प्रभु या सत्स्वरूप हस्ती से, व्यर्थ की छोटी–छोटी दातों को माँगते रहते हैं और प्रभु से प्रभु को नहीं माँगते। कहानी की विभिन्न रानियों की तरह हम प्रभु से जुदाई की पीड़ा सहते रहते हैं। दुनिया की सारी धन–सम्पदाएँ आवश्यक सन्तुष्टि देने में असफल हैं। इसके विपरीत, ये चीज़ें हमें सच्चाई से दूर ले जाती हैं और पहले से भी अधिक दुखी बना देती हैं। यदि हम मालिक को पा लें, तो उसके बाद हमें कुछ भी माँगने की ज़रूरत नहीं है। सारी धन सम्पदा स्वतः ही, बिना माँगे हमें मिल जाती है। अगर किसी कारण से वह नहीं मिलती तो वह इसकी परवाह नहीं करता, क्योंकि बिना उसके और उसके प्यार के, ये सब पदार्थ कूड़े का ढेर हैं।

*धणी विहूणा पाट पटंबर भाही सेती जाले।।*
*धूड़ी विचि लुडंदड़ी सोहाँ नानक तै सह नाले।।*

– आदि ग्रंथ (सलोक वारां ते वधीक म॰5, पृ॰1425)

हमारे शरीर की प्राथमिक आवश्यकताएँ– भोजन, वस्त्र और मकान कही जाती हैं, जिनके लिए हम सुबह से रात तब पागलों की भाँति बिना आराम के कठिन परिश्रम करते हैं। हम इन सुविधाओं को जुटाने के लिए अपने आप की कुर्बानी कर देते हैं, चाहे ये सुविधाएँ हमें कुछ भी आराम न दें। क्या हम यह महसूस नहीं करते कि जब एक बच्चा इस संसार में आता है, तो उसके जीवन का नक़्शा पहले ही बना हुआ होता है? इसके बग़ैर यहाँ पर कोई भी नहीं रह सकता। भाग्य पहले निश्चित किया जाता है, फिर ढाँचा (शरीर) बनाया जाता है और आत्मा अपना स्थान उसमें लेती है। इस तरह से वह संसार की जीवन यात्रा के लिए तैयार होती है।

*पहिले बणी प्रारब्ध, पाछै बणा सरीर।*
*तुलसी इह असचरज है, मन नहीं बांधै धीर।।*

– संत तुलसी दास

स्त्री रूपी प्रकृति, माता के स्तनों में दूध रख कर, गोद में आश्रय बनाकर और उसकी हर ज़रूरत की पूर्ति के लिए सेवकों की एक टोली

जुटाकर, ब्रह्मांड के राजकुमार के शाही स्वागत के लिए तैयार रहती है। प्रकृति की शक्ति, अपनी ताक़तों (माया आदि) को गतिमान करती है, ताकि बालक राजकुमार पर अपना प्रभाव डाल सके। जैसे ही बालक बड़ा होकर कुमार की अवस्था में पहुँचता है, तो वह अपने अन्दर जीवन की तरंगों का अनुभव करने लगता है। संसार में पालन–पोषण करने वाली माता उस पर अपना होने का दावा करती है। बालक भी प्रेम में माता से लिपट जाता है। माता का उपहार स्वरूप प्रेम, उसे अपने निज–धाम और जन्म से पूर्व का घर, जो कि आसमानों में है, से बेख़बर कर देता है।

> बचपन में स्वर्ग हमारे आस-पास ही रहता है। दुनियावी क़ैद का साया बच्चे की उम्र के साथ ही शुरू हो जाता है। धरती अपनी गोद हरी-भरी पाती है, तो सुख का अनुभव करती है। इच्छाओं की अपनी प्राकृतिक क़िस्म है, जो कि मातृत्व में होती है और कुछ उद्देश्य रखती है। माता एक घरेलू नर्स की भाँति सभी कार्य करती है। उसे अपने द्वारा पाला गया बच्चा बनाते हुए घरेलू इंसान बना देती है। वह सब कुछ भूल जाता है कि वह कहाँ से आया है, उसका क्या उद्देश्य है?”

– विलियम वर्ड्स्वर्थ (William Wordsworth- Ode: 'Intimations of Immortality')

दुनिया की सारी दातें पूर्णतया नाशवान हैं। वे हमेशा अस्थिर, बदलने वाली अवस्था में रहती हैं। कुछ भी स्थिर नहीं। सब वस्तुएँ क्षीण और नष्ट होने वाली हैं।

*उपजै निपजै निपजि समाई।।*
*नैनह देखत इहु जगु जाई।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी भगत कबीर, पृ॰325)

इस बदलने वाले जगत में एक ऐसी वस्तु भी है, जो हमेशा क़ायम रहती है। वह है प्रभु या करण–कारण प्रभुसत्ता (कलमा, नाम या शब्द) जोकि अनगिनत ब्रह्मांडों को बनाती है, उनको क़ायम रखती है और फिर उनका संहार करती है। तब फिर हम उसी तरफ़ क्यों न चलें, उसी को क्यों न माँगें और उसी के लिए प्रार्थना क्यों न करें। यही हमारी ज़िन्दगी का

ध्येय होना चाहिए, ताकि कि हमें, हमेशा की ज़िन्दगी प्राप्त हो और हमें अपने शाश्वत निज घर पहुँच सकें, जहाँ पहुँचना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

*निरगुनीआरे की बेनती देहु दरसु हरि राइओ।।*
*नानक सरनि तुहारी ठाकुर सेवकु दुआरै आइओ।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰241)

हमारा निज–धाम, मालिक का देश, सचखंड है। हमें मालिक से बिछुड़े हुए मुद्दतें हो गईं और हम अभी भी इस संसार में कै़द पड़े हैं।

आत्मा, हमारे जीवन का सितारा–
कहीं और ही है इसका ठिकाना,
और, कहीं दूर से यह आती है।

– विलियम वर्ड्स्वर्थ (William Wordsworth- Ode: 'Intimations of Immortality')

हमें चाहिए कि हम अपने अंदर मालिक से मिलने की तीव्र तड़प पैदा करें, क्योंकि हमें उससे बिछुड़े हुए अनेकों युग बीत गए हैं।

*किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम।।*
*चारि कुंट दहदिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम।।*

– आदि ग्रंथ (बारह माहा माझ म॰5, पृ॰133)

*बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे।।*
*कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे।।*

– आदि ग्रंथ (धनासरी भगत रविदास, पृ॰694)

गुरु अमरदास जी विनती करते हैं :

*बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै।।*
*होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै।।*

– आदि ग्रंथ (धनासरी म॰3, पृ॰666)

गुरु अर्जन साहिब ने यह प्रार्थना की :

*अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु पाइआ।।*
*तुमरी क्रिपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राइआ।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰207)

*मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ।।*
*रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ।।*

*भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ॥*
*तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ॥*
*करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ॥*

– आदि ग्रंथ (जैतसरी म॰5, पृ॰709)

*सभे कंतै रतीआ मै दोहागणि कितु॥*
*मै तनि अवगण एतड़े खसमु न फेरे चितु॥*

– आदि ग्रंथ (सूही की वार म॰3, पृ॰790)

*करमहीण धन करै बिनन्ती कदि नानक आवै वारी॥*
*सभि सुहागणि माणहि रलीआ इक देवहु राति मुरारी॥*

– आदि ग्रंथ (रामकली की वार म॰5, पृ॰959)

*सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा॥*
*अंमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा॥*

– आदि ग्रंथ (वडहंस म॰1, पृ॰558)

*करवतु भला न करवट तेरी॥ लागु गले सुनु बिनती मेरी॥*
*हउ वारी मुखु फेरि पिआरे॥ करवटु दे मो कउ काहे कउ मारे॥*

– आदि ग्रंथ (आसा भगत कबीर, पृ॰484)

*दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार॥*
*करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि॥*

– आदि ग्रंथ (असावरी म॰5, पृ॰431)

*जीवन तउ गनीऐ हरि पेखा॥*
*करहु क्रिपा प्रीतम मनमोहन फोरि भरम की रेखा॥*

– आदि ग्रंथ (सारंग म॰5, पृ॰1221)

*करउ बेनती अति घनी इहु जीउ होमागउ॥*
*अरथ आन सभि वारिआ प्रिअ निमख सोहागउ॥*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰5, पृ॰808)

*किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जीउ॥*
*गुर सबदी सहु पाइआ सचु नानक की अरदासि जीउ॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰1, पृ॰762)

*यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार॥*
*हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार॥*

– आदि ग्रंथ (तिलंग म॰1, पृ॰721)

*रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी॥*
*कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी॥*

– आदि ग्रंथ (सोरठ म॰9, पृ॰633)

*किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे॥*
*बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰738)

*महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई॥*
*तेरा माणु ताणु रिद अंतरि होर दूजी आस चुकाई॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰748)

*ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु॥*
*नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु॥*

– आदि ग्रंथ (जैतसरी म॰5, पृ॰704)

तू अगम और अपार है, अकथ है और किसी प्रकार कथन में नहीं आ सकता। हे प्रभु! मैं तेरी शरणागत हूँ और तू ही रखने में समर्थ है।

*तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा॥*
*कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा॥*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰5, पृ॰383)

जीव पिंड सब तुझे अर्पण करके तुझसे मेरी यह विनती है। यह सब तेरा ही प्रताप है, नहीं तो मुझे कौन जानता है।

*जो किछु करणा सु तेरै पासि॥*
*किसु आगै कीचै अरदासि॥*

– आदि ग्रंथ (भैरउ म॰1, पृ॰1125)

अतएव, जो कुछ मुझे कहना है सब तुझ से ही कहना है, और किसके आगे मेरी विनती हो सकती है?

*हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै।।*
*बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै।।*

– आदि ग्रंथ (धनासरी भगत रविदास, पृ॰694)

हे मालिक! मुझ जैसा दीन और कोई नहीं मिलेगा और तुझ जैसा कोई दयाल नहीं होगा। केवल कहने के लिये हम तेरे बन रहे हैं, दया करके हमको पूर्ण कर दे।

*मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि।।*
*मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनन्ती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि।।*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰4, पृ॰735)

हे मालिक! मेरा बल–भरोसा सब तू ही है। इसलिये तेरे आगे विनती है। मुझे और कोई जगह नहीं, जहाँ जाकर विनती करूँ। मेरा सब दुख–सुख तेरे पास ही है।

*हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु।।*
*जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु।।*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰4, पृ॰736)

हे प्रभु! मैं आपकी महानता का बखान नहीं कर सकता। मैं मूर्ख, मुग्ध और नीच गति वाला हूँ। मैं अज्ञानी हूँ। तेरी शरणआया हूँ। तू मुझे बख़्श दे।

*हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख अजनमा।।*
*करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा।।*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰4, पृ॰799)

हम मूर्ख हैं, मूढ़ और अज्ञान–मति हैं। हे ठाकुर! हम पत्थर की तरह जड़ और कर्महीन पुरुष हैं। तुम कृपा करके हमें रख लो।

*हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ।।*
*मोह चीकड़ि फाथे निघरत हम जाते हरि बाँह प्रभू पकराइ जीउ।।*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰4, पृ॰446)

हरि दइआ प्रभु जी! दया धारो। हम पत्थरों को उबार लो और शब्द द्वारा हमारा कल्याण करो। हम मोह की कीचड़ में फँस कर गले जा रहे हैं। हे प्रभु! हमें अपनी बाँह पकड़ाओ।

*किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई॥*
*माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही॥*

– आदि ग्रंथ (रामकली म॰5, पृ॰882)

हे दीनानाथ! मेरे अवगुणों पर ध्यान न दो! मिट्टी को धोकर कोई किस प्रकार साफ़ कर सकता है। हम मनुष्यों की ऐसी गति बनी हुई है।

*दइआ मइआ करि प्रानपति मोरे मोहि अनाथ सरणि प्रभ तोरी॥*
*अंध कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप उकति न मोरी॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰208)

हे मेरे प्राणपति! मैं अनाथ तेरी शरण में आई हूँ, तू दया–मेहर कर। इस मोह–माया के कुएँ में मेरी कोई बुद्धि और चतुराई काम नहीं करती। तू आप ही हाथ दे कर मुझे निकाल ले।

*हम अपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइआ॥*
*अब नानक सरणागति आए हरि राखहु लाज हरि भाइआ॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी पूरबी म॰4, पृ॰172)

मैंने बहुत अपराध किये हैं, हम दुष्ट हैं और चोर हैं। हम अब तेरी शरण आए हैं, हमारी लाज रख।

*राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनन्ती मेरीआ॥*
*नानक मूरखु कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अंधेरीआ॥*

– आदि ग्रंथ (तुखारी म॰1, पृ॰1110)

हे मालिक! तुम हमारे रक्षक हो, अगम और अपार हो। मेरी विनती को सुनो। मैं मूर्ख हूँ, कोई चेतना नहीं। मुझे कुछ सूझता नहीं। घोर अँधेरी रात है।

*रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई॥*
*नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी पूरबी म॰5, पृ॰204)

मैं रूपहीन और बल बुद्धि से भी हीन हूँ। मैं अपने वतन (निज–घर) से बिछुड़ी हुई बड़ी मुद्दत के बाद तेरी शरण आई हूँ। न मेरे पास कोई धन है, न ही यौवन की मादकता है। मैं अनाथ हूँ, मेरी रक्षा और संभाल कर लो।

*लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार॥*
*बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी बावन अखरी म॰5, पृ॰261)

मैं पल–पल पर भूले करती हूँ। अपने कर्मों के कारण मैं अभी छूट नहीं सकती। तुम बख़्शने वाले हो। आप ही मुझे बख़्श लो और भवसागर से पार करा दो।

*असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु॥*
*हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु॥*

– आदि ग्रंथ (सलोक वारां ते वधीक म॰3, पृ॰1416)

मैं बहुत ग़लतियाँ करती हूँ, जिनका कोई अन्त नहीं। मैं बड़ी गुनहगार और पापी हूँ। हे हरि जी! कृपा करके मुझे बख़्श दो।

*जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे॥*
*दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी चेती म॰1, पृ॰156)

जितना समुद्र में पानी भरा है, उतने ही अन्तहीन हमारे पाप हैं। हम पत्थर हैं और डूबते जा रहे हैं। तुम दया करो, कुछ मेहर की दृष्टि करो और हम डूबते हुओं को उबार लो।

*जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि॥*
*जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि॥*

– आदि ग्रंथ (बिलावल की वार म॰4, पृ॰853)

सारा संसार ही गुप्त और गहरी आग में जल रहा है। हे मालिक! तुम स्वयं ही कृपा धार कर सब को बचा लो। जिस बहाने या साधन से ये उबर सकते हैं, उसी प्रकार इन्हें उबार लो।

*तू अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी भाते॥*
*इह अरदासि हमारी सुआमी विसरु नाही सुखदाते॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰747)

हे स्वामी (कुल–मालिक)! तू अथाह, अपार और अति श्रेष्ठ है और कोई तेरा सा’नी नहीं। मेरी यह प्रार्थना है कि तू कभी न बिसरे।

*तुम हरि दाते समरथ सुआमी इकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै।।*
*जन नानक कउ हरि कृपा करि दीजै सद बसहि रिदै मोहि हरि चरानै।।*

– आदि ग्रंथ (कलिआन म॰4, पृ॰1320)

तू दातार है और समर्थ स्वामी है। हम तुझ से एक दान माँगते है कि हम पर यह कृपा कर कि तेरे चरण हमारे अन्तर में बसें।

*मति सुमति तेरै वसि सुआमी हम जंत तू पुरखु जंतैनी।।*
*जन नानक के प्रभ करते सुआमी जिउ भावै तिवै बुलैनी।।*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰4, पृ॰800)

मति और सुमति, हे स्वामी! सब तेरे वश में है। हम यंत्र हैं, और तुम यंत्र के चालक हो। हे करतार! जिस प्रकार तुम्हें भाता है, उसी प्रकार ही हमें बुलाते हो, इसमें हमारी अपनी कोई चतुराई नहीं :

*किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना।।*
*जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना।।*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰3, पृ॰797)

हे मालिक! कोई तेरी क्या सेवा कर सकता है और फिर सेवा करके उसका अभिमान किस प्रकार कर सकता है। तेरी ज्योति ही हमारे अन्दर काम कर रही है, जिसके द्वारा हम सब कार–व्यवहार करते है। यदि तू अपनी ज्योति को खींच ले, तो कोई क्या बखान करके दिखा सकता है!

*विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख।।*
*देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख।।*

– आदि ग्रंथ (रामकली की वार म॰5, पृ॰958)

मालिक से केवल मालिक को ही माँगो। उससे कुछ माँगना अपने सिर पर मुसीबतें इकट्ठी करना है। हे मालिक! हमें अपना नाम बख़्श दो, जिससे हमें संतोष प्राप्त हो और हमारी सब प्रकार की भूख मिट जाये।

*अज़ ख़ुदा जुज़ ख़ुदा न बायद ख़्वास्त,*
*आंकिह् जुज़ अस्त रु ब-फ़नास्त।*
*अज़ ख़ुदा आं चीज़ मख़्वाह किह्,*
*रुए ऊ बतरफ़ ज़वाल बाशद।*

*दिल मकुन अज़ फ़िक्रे-बातिलहा सियाह,*
*अज़ ख़ुदा ग़ैर अज़ ख़ुदा दीगर मख़्वाह।*

– मसनवी बू–अली शाह क़लन्दर (पृ.37)

अर्थात, हमें परमात्मा से परमात्मा को छोड़ कर और कुछ नहीं माँगना चाहिये, क्योंकि उसके सिवाय और कुछ भी है, वह फ़नाह है। ख़ुदा से ऐसी वस्तु कभी न माँगो, जो मिटने वाली हो और ना ही खुदा से उसके ख़ुद के सिवा कुछ मांगो। अपने दिल को अन्धेरे ख़्यालों से बचाकर रखो।

## 1. मालिक से मालिक को मांगो

इस सहायता के लिये मालिक और मालिक के रूप गुरु के सम्मुख पुकार की जाती है।

*कुचिल कठोर कपट कामी॥ जिउ जानहि तिउ तारि सुआमी॥ रहाउ॥*
*तू समरथु सरनि जोगु तू राखहि अपनी कल धारि॥*
*जाप ताप नेम सुचि संजम नाही इन बिधै छुटकार॥*
*गरत घोर अंध ते काढहु प्रभ नानक नदरि निहारि॥*

– आदि ग्रंथ (कानड़ा म॰5, पृ॰1301)

हे मालिक! हम कुटिल, कठोर–चित्त, कपटी, कामी हैं। जिस प्रकार तू चाहे, हमें तार ले। तू समर्थ है, शरण लेने योग्य हैं। अपनी कला धार कर हमें संभाल ले। जप, तप, नियम, संयम के द्वारा इन दोषों से छुटकारा नहीं होता। हे मालिक! हम घोर अन्धकार में डूबे हुए हैं, हमें निकाल ले। तू अपनी दृष्टि प्रदान करके हमें निहाल कर दे। फिर प्रार्थना करना बतलाते हैं :

*हा हा प्रभ राखि लेहु॥*
*हम ते किछू न होइ मेरे स्वामी*
*करि किरपा अपुना नामु देहु॥*

– आदि ग्रंथ (धनासरी म॰5, पृ॰675)

हाय, हाय! प्रभु जी, हमें रख लो, हमसे तो कुछ भी नहीं हो सकता। इस मन को वश में करने का उपाय केवल नाम की ध्वनि (जिसको कीर्तन कहते हैं) है, जो कृपा करके हमें प्रदान कर दे।

*हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि।।*
*हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि।।*

– आदि ग्रंथ (गूजरी म॰4, पृ॰492)

हे प्रभु के प्यारे गुरु! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मैं मिट्टी का कीड़ा हूँ। कृपा करके मुझे नाम का प्रकाश प्रदान करो।

मन "नाम की धुन" या "दिव्य मंडलों के संगीत" से ही केवल वश में हो सकता है, और इसके लिए उसे प्रार्थना करनी होती है। अन्य प्रकार के योग, हठ, कर्म आदि कोई भी इस सम्बन्ध में सहायक सिद्ध नहीं होते, ना ही कोई अपनी चतुराइयों से मन और इसकी जकड़ों से बच पाया है। केवल "सत् शब्द" या "नाम" (सच्चा शब्द) के अभ्यास के द्वारा ही कोई इस गँवारु मन को वश में कर सकता है। इसके लिए इस मार्ग की किसी दक्ष हस्ती से दीक्षित होना पड़ता है। जिस क्षण भी इसे नाम का सम्पर्क मिलता है, तो मन जो कि अब तक चतुर विश्वासघाती की तरह था, वश में होकर, सकारात्मक मैत्री की अवस्था में बदल जाता है और आत्मा को आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने में सहायता करता है।

*माई मै धनु पाइओ हरि नामु।।*
*मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु।।*

– आदि ग्रंथ (बसंत म॰9, पृ॰1186)

'नाम' का धन पाकर इस मन का भटकना छूट जाता है, वह उस परमात्मा से दूर नहीं होता और सदा उसके पास रहना चाहता है।

*धुन सुन कर मन समझाई।।*
*कोटि जतन से यह नहि माने।। धुन सुन कर मन समझाई।।*
*जोगी जुक्ति कमावें अपनी।। ज्ञानी ज्ञान कराई।।*
*तपसी तप कर थाक रहे हैं।। जती रहे जत लाई।।*
*ध्यानी ध्यान मानसी लावें।। वह भी धोखा खाई।।*
*पंडित पढत्र पढत्र वेद बखानें।। विद्या बल सब जाई।।*
*बुद्धि चतुरता काम न आवे।। आलिम रहे पछताई।।*
*और अमल का दखल नहीं है।। अमल शब्द लौ लाई।।*
*गुरु मिले जब धुन का भेदी।। शिष्य विरह धर आई।।*
*सुरत सबद की होय कमाई।। तब मन कुछ ठहराई।।*

— सार बचन (बचन 9, शब्द 9)

योगी, ज्ञानी, तपस्वी, यति, ध्यानी और पंडित सब अपना बल हार गए हैं। मन के आगे किसी का कुछ जोर नहीं चलता। कोई साधन भी मन को वश करने में सफल नहीं होता। इसका पूर्ण साधन केवल 'सत् शब्द' या 'नाम' का अभ्यास है, जो किसी नाम या शब्द के दाता गुरु से ही मिलता है। 'सुरत–शब्द योग' की कमाई करने से ही मन स्थिर होता है।

जब एक बार भी 'नाम' से यह संबंध जुड़ जाता है, तो साधक सर्वोच्च और हमेशा रहने वाली शक्ति के उपस्थिति का अनुभव अपने साथ करने लगता है– चाहे वह कहीं भी क्यों न हो–बेशक़ बर्फ़ानी पहाड़ की चोटियों पर हो या फिर जलते रेगिस्तानी रेत के टीले पर। अपने आप को उस महान शक्ति में पाकर साधक अपनी तमाम इच्छाओं को छोड़ देता है और अपने आस–पास की हरेक वस्तु से अपने आप को जुड़ा पाता है। जो भी उसके मार्ग में आता है, उसे वह प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता है क्योंकि वह उसे प्रभु की तरफ़ से आ रहा समझता है तथा यह भी समझता है कि इसी में उसका भला है। वह सचेतन रूप से "प्रभु की इच्छा" को कार्य करते देखता है तथा अपने आप को अपनी जिह्वा पर पवित्र भाव लाकर पूर्ण समर्पित कर देता है। प्रभु की इच्छा को ही वह अपनी इच्छा मानने लगता है, उसमें अपनी इच्छा बाक़ी नहीं रह जाती। वह अपने आप को उस शक्ति के प्रभाव में अपने आप चलने वाले यंत्र की तरह पाता है। वह अपने आस–पास विशाल ब्रह्मांड में छोटी–बड़ी तमाम रचनाओं को, छोटी–छोटी इकाइयों में, एक नियमित अनुरूपता क्रम में देखता है। अब वह एक दिव्य रूप का अनुभव करता है, जो कि नियमित है, एकरूपता के क्रम में है और जो असीमता की इच्छा को अपने ऊपर मानता है और वह किस तरह छोटे–छोटे जीव का भी ध्यान रखता है। इस तरह से इंसान की अपनी आत्मा और सारी सृष्टि की आत्मा में पूर्ण अनुरूपता स्थापित हो जाती है। हर पग पर वह पुकार उठता है, "जो तुझे भाये, वही मेरे लिए अच्छा है।"

*जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे।।*
*जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे।।*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰1, पृ॰795)

हे मालिक! सब जीव–जन्तु तेरी शरण पड़े हुए हैं। सबकी तुझे ही चिन्ता है। जो तुझे भाये, वही मेरे लिए अच्छा है। बस यही नानक की प्रार्थना है।

*जो तुधु भावै साई भली कार।।*
*तू सदा सलामति निरंकार।।*

– आदि ग्रंथ (जप जी पौड़ी 16, पृ॰3)

जो तुझे भाये, वही अच्छा है। हे निरंकार तू सदा रहने वाला है।

*नानक नाम चढ़दी कला।। तेरे भाणे सरबत का भला।।*

– जनम–साखी, गुरु नानक (भाई बाला)

ऐ नानक! 'नाम' की शक्ति महान है। आपकी इच्छा के द्वारा सभी का कल्याण हो जाए।

अंत में, साधक इस अवस्था को पाकर प्रार्थना करने से हट जाता है। जिस अवस्था में भी मालिक उसे रखे, उसी में वह ख़ुश रहता है और जो कुछ मालिक करता है, उसको मीठा लगता है।

*तेरा कीआ मीठा लागै।। हरिनामु पदारथु नानकु मांगै।।*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰5, पृ॰394)

आपका कार्य मीठा है। नानक केवल 'हरि नाम' माँगता है।

*जिथै रखहि बैकुंठु तिथाई तूं सभना के प्रतिपाला जीउ।।*

– आदि ग्रंथ (माझ म॰5, पृ॰106)

जहाँ भी वह मुझे रखे, मेरे लिए वही बैकुंठ है।

जब वह अन्तर्यामी सब कुछ जानता है, तो हम अपनी बात किसको सुनायें?

जब सब घट–घट में वह स्वयं परिपूर्ण है, तो किसके आगे प्रार्थना करें :

*हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईऐ।।*

– आदि ग्रंथ (सोरठ म॰5, पृ॰624)

जब प्रभु अन्तर्यामी है सब कुछ जानने वाला है, तो फिर हम उससे क्या कहें?

*किआ दीनु करे अरदासि।। जउ सभ घटि प्रभू निवास।।*

– आदि ग्रंथ (कानड़ा म॰5, पृ॰1304)

और उसकी किस दीनता के लिए प्रार्थना करें, जब सभी घट में प्रभु निवास कर रहा है?

संतजन इस रसाई की हालत के बाअख़्तियार मालिक होते हैं। इसलिये संतों के यहाँ प्रार्थना करना कुफ़्र समझा जाता है, वह मालिक की रज़ा में राज़ी रहते हैं, वे मालिक में समा जाता हैं, भक्त और भगवान एक हो जाते हैं। भगवान, भक्त के वश में रहता है और भक्त के हृदय में। जो इच्छा सहज स्वाभाविक रूप से ही उत्पन्न हो जाये, उसको वह तत्काल पूर्ण करता है। जहाँ कही भी भक्त विचरता है, वह उसके अंग–संग होकर सहायक होता है। जिस प्रकार, यदि कोई भोला अनजान बालक बाहर विचरता है, तो माता उसके पीछे–पीछे पग–पग पर सहायता करती है।

गुरु अर्जन साहिब फ़रमाते हैं :

*जो मागहि ठाकुर अपने ते सोई सोई देवै॥*
*नानक दासु मुख ते जो बोलै इहा ऊहा सचु होवै॥*

– आदि ग्रंथ (धनासरी म॰5, पृ॰681)

जो–जो हम अपने प्रभु से माँगते है, वही–वही वह हमें प्रदान करता है। ऐ नानक! दास के मुखवाक्य सभी सच हो जाते हैं।

*जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै॥*
*सेवक कउ निकटी होइ दिखावै॥*
*जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै॥*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰5, पृ॰403)

जहाँ–जहाँ सेवक जाता है, वहीं वहीं पर प्रभु भी पहुँच जाता है और सेवक के अंग–संग हो जाता है। बस वह इस इन्तज़ार में है कि सेवक कुछ माँगे और वह पूरा किया जाये।

कबीर साहिब अपने मन की अवस्था का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

*कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु॥*
*पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर॥*

– आदि ग्रंथ (सलोक भगत कबीर, पृ॰1367)

कि मेरा मन गंगा–जल की तरह बिलकुल निर्मल हो गया है। अब हरि मेरे पीछे पीछे फिरता है और कबीर–कबीर कह कर पुकार रहा है।

*जिस का पिता तू है मेरे सुआमी तिसु बारिक भूख कैसी॥*
*नव निधि नामु निधानु गृहि तेरै मनि बाँछै सो लैसी॥*

– आदि ग्रंथ (मलार म॰5, पृ॰1266)

भक्त की सब भूख सर्वकला समर्थ भगवान से मिल कर मिट जाती है, फिर उसको भूख कहाँ! प्रभु के घर से उसको नवनिधियों का देने वाला नाम का ख़ज़ाना मिलता है, जिससे वह मनवांछित पदार्थों को पा लेता है:

*बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि॥*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰5, पृ॰819)

सेवक की प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती।

फिर माँगें, तो क्या माँगे! दातार स्वयं उसके पास है। भक्त, भगवान के रूप में समा जाता है– वे दोनों एक रूप हो जाते हैं। कौन माँगे और किससे माँगे!

गुरु अर्जन साहिब इस अवस्था का क्या सुन्दर वर्णन करते हैं :

*ना ओहु मरता ना हम डरिआ॥ ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ॥*
*ना ओहु निरधनु ना हम भूखे॥ ना ओसु दूखु न हम कउ दूखे॥*
*अवरु न कोऊ मारनवारा॥ जीअउ हमारा जीउ देनहारा॥ रहाउ॥*
*ना उसु बंधन ना हम बाधे॥ ना उसु धंधा न हम धाधे॥*
*ना उसु मैलु न हम कउ मैला॥ ओसु अनन्दु त हम सद केला॥*
*ना उसु सोचु न हम कउ सोचा॥ ना उसु लेपु न हम कउ पोचा॥*
*ना उसु भूख न हम कउ तृसना॥ जा उहु निरमलु ताँ हम जचना॥*
*हम किछु नाही एकै ओही॥ आगै पाछै एको सोई॥*
*नानक गुरि खोए भ्रम भंगा॥ हम ओइ मिलि होए इक रंगा॥*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰5, पृ॰391)

वह प्रभु मृत्युरहित है और हमें भी कोई डर नहीं। वह अमर है, अतः हमें भी शोकग्रस्त होने की ज़रूरत नहीं। वह निर्धन नहीं और हमें भी किसी चीज़ की भूख नहीं। वह दुख–दर्द से रहित है, हमें भी कोई दुख नहीं। उसके अलावा कोई दुनिया में विनाशकर्ता नहीं, वह हमारा जीवन है तथा हमारा जीवन दाता है। वह आज़ाद है तथा हमें भी कोई बंधन नहीं। वह दुनियावी धंधों के परे है और हम भी इन बंधनों से आज़ाद हैं। वह निर्मल है, तो हमारे में भी कोई मैल नहीं है। वो सदा आनन्द की अवस्था में है तथा हम भी सदैव प्रफुल्लित रहते हैं। वह चिन्तारहित है, हमें भी कोई चिन्ता नहीं सताती। वह दाग़रहित है, हम पर भी कोई धब्बा नहीं है। उसे कोई भूख नहीं है, हम भी तृष्णारहित हैं। वह अतिशुद्ध है, हम भी वैसे ही हैं। हम नगण्य हैं,

भी सदैव प्रफुल्लित रहते हैं। वह चिन्तारहित है, हमें भी कोई चिन्ता नहीं सताती। वह दाग़रहित है, हम पर भी कोई धब्बा नहीं है। उसे कोई भूख नहीं है, तो हम भी तृष्णारहित हैं। वह अतिशुद्ध है, हम भी वैसे ही हैं। हम नगण्य हैं, केवल वही एक आगे–पीछे सर्वत्र व्याप्त है। ऐ नानक! सद्‌गुरु की कृपा से हमारा भ्रम दूर हो गया है। उससे मिल कर हम भी उसी रंग में रंगे गये हैं।

## **2.** मालिक से गुरु (एक ज़िन्दा समर्थ सत्स्वरूप हस्ती) को माँगो

गुरु के अन्दर ही मालिक समा रहा है।

*गुरु महि आप समोइ सबदु वरताइआ।*

– आदि ग्रंथ (मलार की वार म॰1, पृ॰1279)

गुरु में प्रभु आप समाया हुआ है और शब्द को बाँट रहा है।

गुरु परमात्मा का रूप होता है। परमात्मा से प्रार्थना करो :

*तुम दइआल सरब दुख भंजन इक बिनउ सुनहु दे काने।।*
*जिस ते तुम हरि जाने सुआमी सो सतिगुरु मेलि मेरा प्राने।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी पूरबी म॰4, पृ॰169)

हे वाहिगुरु! तू दयाल और दुख–भंजन है! कृपा करके हमें सत्गुरु से मिला दे, जो हमारे प्राणों का आधार है, और जिसके द्वारा हम तुझे पा सकते हैं।

*हरि हरि कृपा करहु जगजीवन मै सरधा नामि लगावैगो।।*
*नानक गुरू गुरू है सतिगुरु मै सतिगुरु सरनि मिलावैगो।।*

– आदि ग्रंथ (कानड़ा म॰4, पृ॰1310)

हे हरि जी! कृपा करके यह दया करो कि मेरी नाम के लिये श्रद्धा हो और गुरु, जो सत्गुरु है, उसकी शरण प्राप्त हो।

*ते साधू हरि मेलहु सुआमी जिन जपिआ गति होइ हमारी।।*
*तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ बलिहारी।।*

– आदि ग्रंथ (भैरउ म॰4, पृ॰1135)

मालिक और गुरु से उसके दर्शन, उसकी शरण तथा नाम की प्राप्ति, मन–इन्द्रियों के विकार से बचने और भवसागर से पार उतरने के लिये प्रार्थना करनी चाहिये। वे समर्थ हैं, इसलिये यह सब कुछ बख़्श सकते हैं। इनके अतिरिक्त साधक उनसे यह दात माँगता है कि उनका भाणा मीठा लगे। हम गुणों से रहित हैं, मूर्ख, अनजान और अज्ञानी हैं और कोई कर्म–धर्म नहीं जानते। इसलिये हे प्रभु! दया करो, ताकि हम तेरे गुण गाएँ और हमें तेरा भाणा मीठा लगे।

*निरगुणु मुगधु अजाणु अगिआनी करम धरम नही जाणा॥*
*दइआ करहु नानकु गुण गावै मिठा लगै तेरा भाणा॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰748)

गुणरहित, अंधे, अज्ञानी और अनपढ़ होने के कारण हम ये नहीं जानते कि हमारे अपने वास्ते और समाज के वास्ते क्या अच्छा कार्य है? हे प्रभु! दया करो। गुरु नानक कहते हैं कि हमें इस योग्य बना दो कि हम आप के भाणे में अपनी ख़ुशी मना सकें।

इसके अतिरिक्त नाम और भक्ति के लिये प्रार्थना करो।

*जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा॥*
*जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा॥*

– आदि ग्रंथ (गूजरी की वार म॰5, पृ॰523)

हे निरंकार! बारंबार आपका जाप करने से, हम भ्रम और भय से मुक्त हो जाते हैं। जो आपकी मीठी प्रेम भरी याद में लीन रहते हैं, वे जन्म मरण के चक्र से मुक्त हो जायेंगे।

*हम जाचिक दीन प्रभ तेरिआ मुखि दीजै अंमृत बाणी॥*
*सतिगुरु मेरा मित्रु प्रभ हरि मेलहु सुघड़ सुजाणी॥*

– आदि ग्रंथ (मारू म॰4, पृ॰997)

हे प्रभु! हम आपके द्वार पर एक तुच्छ व नम्र याचक हैं। हमें अपने मुख से अमृत वाणी का दान देकर कृतार्थ करें। हे सत्गुरु, आप मेरे स्वामी और मित्र हैं, आप प्रभु से एकमेक हैं, सुघड़ और ज्ञानवान हैं।

*निरगुणीआरे कउ बखसि लै सुआमी आपे लैहु मिलाई॥*

*तू बिअंतु तेरा अंतु न पाइआ सबदे देहु बुझाई॥*

– आदि ग्रंथ (प्रभाती म॰3, पृ॰1333)

मेरे अंदर अच्छे सद्‌गुण नहीं है, उनकी बड़ी भारी कमी है, उसके लिए मुझे क्षमा करें और हे सत्गुरु! मुझे अपनी शरण में लेकर, अपना बना लें। आप असीम हैं और मेरी समझ से परे हैं। 'शब्द' द्वारा आप का अनुभव होता है।

*गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम॥*
*संता की बेनन्ती सुआमी नामु महा रसु दीजै राम॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰784)

मेरे प्रभु, आप समस्त सद्‌गुणों की खान हैं। पूरी तरह से आपकी बड़ाई कौन कर सकता है? हे स्वामी! नाम के महारस के वरदान को पाने के लिए ही हम संतों से प्रार्थना करते हैं।

*हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता॥*
*होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता॥*

– आदि ग्रंथ (धनासरी म॰3, पृ॰666)

हम तुच्छ भिखारी हैं, और आप हमारे स्वामी दातार हैं। हमारे ऊपर दयाल होकर अपने नाम की दात हम माँगने वालों को प्रदान करो, ताकि हम हमेशा ही आपके प्यार के नशे में मस्त रहें।

*हा हा प्रभ राखि लेहु॥*
*हम ते किछू न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु॥*

– आदि ग्रंथ (धनासरी म॰5, पृ॰675)

हे प्रभु! अपने रक्षक पंखों की छत्रछाया में हमें रख लो। हम अपने आप कुछ भी करने में समर्थ नहीं। कृपया हमें 'नाम' प्रदान करें।

कीर्तन से आत्मा बलवान होती है और अभिमान दूर होता है। सो मन में उसके चिन्तन और उसके कीर्तन के उद्यम के लिये प्रार्थना करनी चाहिये।

*मन महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत॥*
*हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत॥*

– आदि ग्रंथ (गूजरी की वार म॰5, पृ॰519)

हे प्रभु! मुझे यह वरदान दो कि मैं हमेशा प्रतिदिन केवल आप के बारे में ही सोचने का प्रयत्न करूँ। हे प्रभु! मुझे जीवन की रोटी, हरि कीर्तन ('नाम') के साथ संपर्क प्रदान करो।

*मिलु साधसंगे नाम रंगे तहा पूरन आसो॥*
*बिनवंति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो॥*

– आदि ग्रंथ (बिहागड़ा म॰5, पृ॰545)

संतों की संगति ही हमें उस प्रभु के नाम के रंग में रंगती है और हमारी तमाम इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। गुरु नानकदेव जी आपकी कृपा के लिए प्रार्थना करते हैं। हे प्रभु! आपके चरण–कमल हमेशा मेरे हृदय में वास करें।

*रामा हम दासन दास करीजै॥*
*जब लगि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिवीजै॥*

– आदि ग्रंथ (कलिआन म॰4, पृ॰1326)

हे राम! हमें अपने दासों का दास बना ले। हमें ये वरदान दे कि संतों की ज्योति की धूल, जब तक हम जीवन में अंतिम साँस लें, तब तक हमारे ऊपर रहे, ताकि हम उनके रंग में रंग जायें।

*करि किरपा प्रभ दीन दइआला॥*
*नानक दीजै साध रवाला॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰194)

हे दयाल प्रभु! कृपा करके संतों के चरण–कमलों की ज्योतिर्मयी धूलि (दिव्य ज्योति) हमें प्रदान करो।

# गुरु परमात्मा की सबसे बड़ी दात है

**परमात्मा** की सबसे सच्ची, सबसे बड़ी दात एक सत्–स्वरूप हस्ती (गुरु) है, जो अपनी आत्मा का अनुभव करके परमात्मा में लीन हो गया है। एक प्रकार से वह सदेह–परमात्मा है। वह ऐसा इंसानी चोला है, जिस पर परमात्मा अपने जीवों के लिये अपने आप को प्रकट करता है। परमात्मा क्योंकि असीम और अनन्त है, इसलिए वह इंद्रियों के सीमित साधनों से नहीं मिल सकता। जिस प्रकार हम समुद्र का आनंद लेना चाहें, तो उसके घाट पर बैठकर उसकी लहरों से तर–ब–तर हो सकते हैं। इसी प्रकार समुद्र रूपी महाचेतन परमात्मा का घाट 'गुरु' होता है।

जैसे एक जीव अपने जैसे ही जीव (हम–जिन्सियत) को पसन्द करता है, वैसे ही इंसान के लिये यह ज़रूरी हो जाता है कि उसका उस्ताद इंसान ही हो। अन्य कोई उसे पढ़ा–लिखा नहीं सकता। केवल कोई प्रभु रूप हस्ती ही हमें "संसार से निकलने" और परमात्मा की बादशाहत में 'दाख़िल' होने का मार्ग बता सकती है। इंसान के द्वारा ही इंसान का पतन हुआ और इंसान के द्वारा ही उसका उद्धार होगा। पर इंसान–इंसान के बीच एक बड़ा भारी फर्क़ है; दूसरा इंसान सदेह परमात्मा है।

> यक़ीनन परमात्मा कुछ नहीं करेगा, बल्कि वह अपने सेवकों और अवतारों के सामने अपने गुप्त भेदों को प्रकट कर देगा।
>
> – पवित्र बाइबिल (एमोस 3:7)

> सभी धर्म–ग्रंथ प्रभु की प्रेरणा द्वारा प्रकट होते हैं।
>
> – पवित्र बाइबिल (II टिमोथी 3:16)

> शब्द सदेह हुआ और हमारे बीच रहा।
>
> – पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 1:12)

गुरु परमात्मा का सदेह रूप है, क्योंकि गुरु के द्वारा ही प्रभु बोलता है :

*जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी सुखमनी म॰5, पृ॰292)

दास नानक तब ही बोलता है, जब उसे ऐसा करने को कहा जाता है।

*गुफ़्ताए-ऊ गुफ़्ताए-अल्लाह बुवद,*
*गरचिह् अज़ हलकूमे-अब्दुल्ला बुवद॥*

– मसनवी मौलाना रूमी (दफ़्तर 2, पृ.213)

अर्थात, गुरु का कहा हुआ प्रभु का कहा हुआ होता है, अगरचे आवाज़ इंसानी गले से आती मालूम होती है।

मैं अपने आप कुछ नहीं बोलता, लेकिन मुझ में जो मेरा पिता बैठा है, वही सारे कार्य करता है।

– पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 14:10)

अतः सबसे बड़ी प्रार्थना, जो कि एक व्यक्ति परमात्मा से कर सकता है, वह यह है कि प्रभु अपनी अपार कृपा से, उसे किसी संत (सत्–स्वरूप हस्ती) से जोड़ दे, जो कि उसे परमात्मा की ओर जाने वाले सीधे रास्ते पर चला दे। यह रास्ता शब्द ध्वनि या शब्द–धारा के सिवा अन्य कुछ नहीं है, जिसे विभिन्न महात्मा अलग–अलग नाम से पुकारते हैं। ईसाई उसे वर्ड, मुसलमान भाई उसे कलमा, बांगे–आसमानी या निदाए–अर्शी, हिन्दू इसे नाद, उद्‌गीत, आकाशवाणी, नाद या श्रुति और सिक्ख इसे नाम या शब्द कहते हैं। पारसी उसे 'सरोशा' तथा थियोसोफिकल सोसायटी वाले उसे 'मूक की ध्वनि' कहते हैं। क्राइस्ट ने इसे 'परमात्मा के पुत्र की आवाज़' कहा है। गुरु के अन्दर परमात्मा ही झलकता है और वही मनुष्य को शब्द–धारा से जोड़ता है, ताकि वह अपने निज घर वापिस जा सके।

जब मुर्दे परमात्मा के पुत्र की आवाज़ को सुनेंगे! और जो सुनेंगे, वे जी उठेंगे।

– पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 5:24-25)

इस तरह से यह 'शब्द–धारा' मुक्ति का साधन है। यही वह मुख्य कुंजी है, जो आसमानों की बादशाहत का रास्ता खोलती है। यह इंसान को हमेशा का जीवन प्रदान करती है और इस तरह फिर से उसे 'Garden of

Eden' ('आदम और हव्वा का अदन का बाग़') में पहुँचा देती है, जहाँ से उसे परमात्मा की आज्ञा के प्रथम उल्लंघन करने के दोष में बाहर निकाल दिया गया था।

प्रभु का इससे बड़ा वरदान इंसान क्या पा सकता है कि वह अपना खोया हुआ साम्राज्य वापिस आ जाये। यह उसकी अनगिनत सदियों की जुदाई ख़त्म होने का द्योतक है। इस तरह प्रभु अपनी खोई हुई भेड़ों को पुनः अपने साये में ले लेता है। गुरु वह दयावान गडरिया है, जो अपनी दया—मेहर से भटकी हुई मानवता के लिये यह सब कुछ करता है। ऐसी महान आत्माएँ सिर ताक़त या'नी प्रभु के हुक्म से आती हैं।

मैं अपने 'पिता के नाम' में आया हूँ।

— पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 5:43)

कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक कि पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे मेरे पास ना भेजे; और मैं उसे आख़िरी दिन उठा कर पेश कर दूँगा।

— पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 6:44)

कबीर साहब कहते हैं कि हम प्रभु के घर के जानने वाले हैं और उसका संदेश मानव जाति के लिए लाए हैं।

*कहै कबीर हम धुर घर के भेदी, लाये हुक्म हजूरी।*

— कबीर साहिब

सिक्ख धर्म ग्रंथों में भी हमें इसी तरह के सदर्भ मिलते हैं :

*जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ॥*

— आदि ग्रंथ (धनासरी म॰5, पृ॰678)

गुरु अर्जनदेव जी फ़रमाते हैं कि जिसने तुम्हें इस संसार में भेजा था, वही तुम्हें वापस बुला रहा है और सहज—भाव में सबके घर पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहा है।

महापुरुषों की महानता इस बात में है कि वे मनुष्य और परमात्मा के बीच फिर से संबंध करा देते हैं। वियोग की लंबी अवधि समाप्त हो जाती है और खोया हुआ पुत्र पुनः पिता से जा मिलता है। अनंत प्रयत्नों और परेशानियों से मुक्त होकर आत्मा निज—घर में पहुँच जाती है। परमात्मा

की रक्षक दया–धारा गुरु के द्वारा ही मिलती है और इस प्रकार जीवन का उद्देश्य पूरा हो जाता है। इसके बाद पिता और पुत्र में कोई मतभेद नहीं रहता, बल्कि वे एकरूप हो जाते हैं।

महान गहराई से भी महान गहराई में वह समा जाता है।

– लॉर्ड एल्फ्रॅड टैनीसन (Lord Alfred Tennyson- 'The Passing of Arthur')

संसार में वह अब निर्वासित की तरह नहीं, बल्कि प्रभु की बादशाहत का वारिस बनकर रहता है और फिर से अपने निज–घर, प्रभु के धाम में स्थित हो जाता है।

यही प्रभु और इंसान के बीच सच्ची आवश्यकता की पूर्ति है। यही मृतक अवस्था से सच्ची जीवन्त अवस्था है, जो कि किसी प्रभु–पुत्र (संत–महापुरुष) की देन होती है। यही प्रभु के नियम व मानव जीवन के ध्येय की भी पूर्ति है।

*धुरि खसमैका हुकमु पइआ विणु सतिगुरु चेतिआ न जाइ॥*

– आदि ग्रंथ (बिहागड़ा की वार म॰4, पृ॰556)

परमात्मा ने स्वयं यह अटल नियम बनाया है कि बिना गुरु के कोईभी मालिक से नहीं मिल सकता।

परमात्मा ने इंसान का चोला धारण कर लिया, ताकि वह कमज़ोर होकर दुख-दर्दों से पीड़ित हो सके।

– जॉन डॉन [John Donne- 'Holy Sonnets'] (l. 13–14)

इसलिए हमेशा प्रभु से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें किसी सत्–स्वरूप हस्ती (गुरु) से मिला दे।

# सत्स्वरूप हस्ती (गुरु) से क्या माँगें?

**गुरु** मालिक का प्रवक्ता है। वह वो चोला है जिस पर प्रभु अपना प्रभुत्व प्रकट करता है। गुरु वह घाट होता है, जहाँ बैठकर हम समुद्र में स्नान कर सकते हैं। वह बिजली के स्विच की तरह है, जिसके अन्दर पावर हाउस की शक्ति एकत्रित है। पुत्र और पिता एक हैं और एक ही नियम से प्रबन्धित हैं। क्राइस्ट कहता है, "मैं और मेरा पिता एक हैं।" गुरु के अंदर महाचेतन मालिक का प्रकाश है और वह इस प्रकाश को संसार में प्रसारित करता है।

> मैं संसार की ज्योति हूँ, और जो मेरे पीछे हो जाएगा, अंधकार में नहीं रहेगा, बल्कि ज़िंदगी की ज्योति को पायेगा।
>
> – पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 8:12)

सत्–स्वरूप हस्ती या गुरु 'नाम ' का भंडार होता है। 'नाम' प्रभु का वह महान यंत्र है, जिससे उसने सृष्टि की रचना की और जिससे वह सृष्टि को चला रहा है। जिस क्षण भी प्रभु की यह शक्ति सिमटती है, नतीजा होता है, विनाश प्रलय और मौत। सेन्ट जॉन इसे 'शब्द' कह कर पुकारते हैं :

> आदि में शब्द था, शब्द परमात्मा के साथ था और शब्द परमात्मा था। वही आदि में परमेश्वर के साथ था। सभी वस्तुएँ उसे से बनाई गई हैं; उसके सिवा कोई भी वस्तु नहीं, जो बनी हो। उसमें जीवन था और जीवन मनुष्य की ज्योति था। और ज्योति अंधकार में प्रकाशित है। और अंधकार ने उसे नहीं निगला।
>
> – पवित्र बाइबिल (यूहन्ना 1:1-5)

वास्तव में एक पैग़म्बर या संत–महात्मा प्रभु की शक्ति का सुरक्षित भंडार होता। उनके अन्दर मालिक स्वयं विराजमान होता है।

*साध रूप अपणा तनु धारिआ॥*

– आदि ग्रंथ (मारू म॰5, पृ॰1005)

प्रभु साध (संत) के चोले में इस संसार में आता है।

जिस किसी में भी परमात्मा को पाने की तड़प जाग उठती है, उसे किसी अवश्य ही किसी सच्चे संत का सहारा लेना होगा। संत–सत्गुरु की रक्षक दया–धारा ही मन–इंद्रियों के घाट पर लंपट व्यक्ति का वास्तविक रूप से काया–कल्प कर सकती है।

*सिमरउ चरन तुहारे प्रीतम रिदै तुहारी आसा॥*
*संत जना पहि करउ बेनती मनि दरसन की पिआसा॥*

– आदि ग्रंथ (मलार म॰5, पृ॰1268)

हे प्रियतम! मैं आपका ही सुमिरन करता हूँ और प्यारपूर्वक आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। संत–जनों से मेरी प्रार्थना है आप मेरे अन्दर प्रकट हो जाएँ।

*करउ बेनती साधसंगति हरि भगति वछल सुणि आइओ॥*
*नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ॥*

– आदि ग्रंथ (टोडी म॰5, पृ॰712)

मैंने सुना है आप अपने भगत की सुनते हैं। इसलिए साध–जनों से प्रार्थना करता हूँ कि नानक को प्रभु की तीव्र लालसा है। कृपा करके मेरी लाज रख लो।

*चिरी विछुन्ना मेलि प्रभ मै मनि तनि वडड़ी आस॥*
*गुर भावै सुणि बेनती जन नानक की अरदासि॥*

– आदि ग्रंथ (मारू म॰4, पृ॰996)

प्रभु से बिछड़े हुए मुद्दत हो गई, अब तो मिलाप प्रदान करो। इसके लिए मेरे मन–तन में बड़ी इच्छा उत्पन्न हो गई है। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि यह प्रार्थना हमारी गुरु के द्वारा पूर्ण करो।

*करउ बेनती संतन पासे॥ मेलि लैहु नानक अरदासे॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰759)

नानक प्रार्थना करते हैं कि हमें संतों का संग और मिलाप प्रदान करो।

*जिनी सखी सहु राविआ तिन पूछउगी जाए।।*
*पाइ लगउ बेनती करउ लेउगी पंथु बताए।।*

— आदि ग्रंथ (तिलंग म॰1, पृ॰725)

जिन सखियों ने प्रियतम की आराधना की है, मैं उनके चरणों में विनती करके उनसे हरि–पंथ का पता लगाऊँगी।

*हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि।।*
*हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि।।*

— आदि ग्रंथ (गूजरी म॰4, पृ॰492)

हे सत्गुरु! हमारी आप से विनती है कि हम माया के कीड़े हैं, तुम दया करके हमें नाम का प्रकाश प्रदान कर दो ।

भाई गुरदास जी ने शिष्य की प्रार्थना का एक सुन्दर नमूना दिया है। वे फ़रमाते हैं :

*हउ अपराधी गुनहगार हउ बेमुख मन्दा।।*
*चारे यार जुआरीआ परघर जोहन्दा*
*निंदक दुष्ट हरामखोर ठग देस ठगन्दा।।*
*काम क्रोध मद लोभ मोह अंहकार करन्दा।।*
*बिस्वास घाति अकिरतघण मै को न रखन्दा।।*
*सिमर मुरीदा ढाढीआ सतिगुर बखसन्दा।।*

— गिआन रतनावली (वार 36, पौड़ी 28)

हे सत्गुरु! मैं अपराधी गुनहगार हूँ। मैं तुझ से विमुख हुआ फिरता हूँ और अति नीच और मन्दा जीव हूँ। मुझ में सब ऐब हैं, मुझे चोरी और व्यभिचार की लत लगी हुई है, मैं जुआरी हूँ, पराये घरों की ओर दृष्टि रखता हूँ। मैं निन्दक,दुष्ट, हरामख़ोर हूँ और ठग बन कर लोकों को ठग रहा हूँ। मैं काम–क्रोध के नशे में चूर हूँ और लोभ, मोह, अंहकार में मस्त हूँ। मैं विश्वासघाती हूँ और अति अकृतघ्न हूँ। मुझे कौन बचा सकता है? मैं भिखारी बन कर, हे सत्गुरु! तुझे सुमिर रहा हूँ, तू सदा क्षमावान है, मुझे क्षमा कर दे।

एक बार गुरु और शिष्य का संबंध पक्का हो जाए, तो शिष्य उस पर पूर्णतया निर्भर हो जाता है। गुरु उसे अपना लेता है, या'नी उसके तमाम कर्मों का लेन–देन अपने हाथ में ले लेता जिसमें प्रारब्ध (भाग्य), क्रियमान (दैनिक कर्म) और संचित कर्मों का भार भी शामिल है। एक ऋण–माफ़ी की तरह, यह गुरु का काम हो जाता है कि वह शिष्य के कर्मों का निपटारा करे, उनका हिसाब साफ़ करे, उसे कर्म बंधनों से मुक्त करें, ताकि वह दो–जन्मा बनकर 'आध्यात्मिक जीवन' व्यतीत कर सके।

*हमरी जाति पाति गुरु सतिगुरु हम वेचिओ सिरु गुर के॥*
*जन नानक नामु परिओ गुर चेला गुर राखहु लाज जन के॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰4, पृ॰731)

हमारी जात–पात सब गुरु ही है। हमने अपना शीश उसके हाथों बेच दिया है। हे सत्गुरु! अच्छे या बुरे जैसे भी हैं, हमारा नाम अब 'गुर–चेला' पड़ गया है। दया करके हमारी लाज रख लो। हम मान रहित होकर आप के चरणों में पड़े हुए हैं। तुम हम दीनों के मान हो! आप हर प्रकार से समर्थ हो :

*आदि मधि जो अंति निबाहै॥ सो साजनु मेरा मनु चाहै॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰240)

संत–सत्गुरु के आगे विनती है कि तुम हमें उस साजन (मालिक) से मिला दो, जो आदि, मध्य और अंत में भी सदा रहता है :

*सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ॥*
*साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ॥*

– आदि ग्रंथ (सिरी राग म॰1, पृ॰55)

क्योंकि, साजन के मिलने पर सच्चे सुख की प्राप्ति होती है और ऐसे मनुष्य के लिये यमदूत मर जाते हैं। इसलिए मुझे साजन मे मिलाप प्रदान करो।

*दरसनु देखि जीवा गुर तेरा॥ पूरन करमु होइ प्रभ मेरा॥*
*इह बेनन्ती सुणि प्रभ मेरे॥ देहि नामु करि अपणे चेरे ॥ रहाउ ॥*
*अपणी सरणि राखु प्रभ दाते॥ गुर प्रसादि किनै विरलै जाते॥*
*सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता॥ चरण कमल वसहि मेरै चीता ॥*

*नानकु एक करै अरदासि॥ विसरु नाही पूरन गुणतासि॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰742)

हे सत्गुरु! हम तेरे दर्शन करके जी रहे है। हे प्रभु! मेरी इस विनती को सुनो। नाम–दान देकर मुझे अपना सेवक बना लो और अपनी शरण में रख लो। हे प्रभु, मेरे सच्चे मित्र! यह प्रार्थना है कि हे पूर्णगूण सम्पन्न प्रभु! तू मुझे कभी भी न बिसार।

*तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे॥*
*कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध उधारे॥*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰5, पृ॰809)

हे सर्वभय–भंजन सत्गुरु! तुझ से कुछ छिपा नहीं है, तू दयाल है। हे सत्गुरु! हम मूर्खों का उद्धार कर।

*एहु जगु जलता देखि कै भजि पए हरि सरणाई राम॥*
*अरदासि करीं गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम॥*

– आदि ग्रंथ (वडहंस म॰3, पृ॰571)

सारे संसार को मोह–माया की गहरी आग लग रही है, जिसमें सब जीव जल रहे हैं। इससे बचने के लिए हरि की शरण में पहुँचना आवश्यक है। इसलिये, हमारी पूर्ण गुरु के आगे प्रार्थना है कि हे दीनानाथ! हमें इस ज़बरदस्त आग से बचा ले, हमको अपनी कृपा की बड़ाई प्रदान कर। ❦

अनुलग्न :

# प्रार्थनाओं के नमूने

# प्रार्थनाओं के मिश्रित और संक्षिप्त नमूने

**यहाँ** कुछ टिप्पणियों सहित, प्रार्थनाओं के चंद नमूने पाठकों के लाभार्थ देना असंगत न होगा।

मनुष्य आत्मा देहधारी है। दूसरे शब्दों में, वह आत्मा और शरीर के मेल से बना है। आत्मा शरीर से अधिक मूल्यवान है। यह वह सक्रिय सार तत्त्व है, जो शरीर को ज़िंदगी प्रदान करता है। वास्तव में, आत्मा के बिना शरीर का कोई मूल्य नहीं।

महात्मा कई प्रकार के हैं। एक तो वे हैं, जो मालिक से अपने शारीरिक गुज़ारे के लिए ज़रूरी चीज़ें मांगते हैं, ताकि उनको पाकर और निश्चिंत होकर वे शारीरिक क्रिया को पूरी करके मालिक की भक्ति कर सकें। हज़रत ईसा मसीह साहिब की प्रार्थना में 'रोज़ की रोटी' माँगी गई है। असल में वे सब कुछ मालिक का समझते हैं और आवश्यकतानुसार 'रोज़ की रोटी' माँगते हैं, ताकि पेट की ज़रूरत पूरी करके फिर पूरा ध्यान मालिक की भक्ति में लगाया जा सके। शरीर के घोड़े को ख़ुराक देकर, फिर आत्मा की ख़ुराक की व्यवस्था होनी चाहिये। कबीर साहिब फ़रमाते हैं :

*कबीर छुधा है कूकरी, करत भजन में भंग।*
*या को टुकड़ा डारि कर, सुमिरन करो निसंक॥*

– कबीर साखी संग्रह, भाग 1 (सुमिरन का अंग 31, पृ.90)

कि भूख भजन में विघ्न डालती है, इस क्षुधा रूपी कूकरी को रोटी का एक टुकड़ा डाल कर भजन में लग जाओ।

साधक को अपनी आवश्यकता के लिए शुरू–शुरू में मालिक से प्रार्थना करना, सत्गुरु उचित समझता है। कबीर साहिब ने यह प्रार्थना की है कि,

*भूखे भगति न कीजै। यह माला अपनी लीजै॥*

– आदि ग्रंथ (सोरठ भगत कबीर, पृ॰656)

*दुइ सेर माँगउ चूना।। पाउ घीउ संगि लूना।।*
*अध सेर माँगउ दाले।। मो कउ दोनउ वखत जिवाले।।*
*खाट माँगउ चउपाई।। सिरहाना अवर तुलाई।।*
*ऊपर कउ माँगउ खींधा।। तेरी भगति करै जनु थींधा।।*
*मैं नाही कीता लबो।। इकु नाउ तेरा मै फबो।।*

– आदि ग्रंथ (सोरठ भगत कबीर, पृ॰656)

हे मालिक! मैं भूख रह कर तेरी भक्ति नहीं कर सकता, इसलिए मैं रोज़ दो सेर आटा माँगता हूँ। साथ ही घी, नमक और आधा सेर दाल, ताकि दोनों समय आजीविका की व्यवस्था हो जाये। चारपाई, सिराहाना, बिछौना और ओढ़ने को रज़ाई भी दे, ताकि दास निश्चिंत हो कर तेरी भक्ति कर सके। यह सब मैं कोई लोभवश नहीं माँग रहा हूँ। मुझे तो केवल तेरा नाम ही अच्छा लगता है।

*साईं इतना दीजिये, जा मैं कुटुम्ब समाय।*
*मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।*

– कबीर साखी संग्रह, भाग 1 (विश्वास का अंग 8, पृ.74)

भक्त धन्ना जी इसी प्रकार प्रार्थना करते हैं :

*गोपाल तेरा आरता।।*
*जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता।। रहाउ ।।*
*दालि सीधा मागउ घीउ।। हमरा खुसी करै नित जीउ।।*
*पन्हीआ छादनु नीका।। अनाजु मगउ सत सी का।।*
*गऊ भैस मगउ लावेरी।। इक ताजनि तुरी चंगेरी ।।*
*घर की गीहनि चंगी।। जनु धन्ना लेवै मंगी।।*

– आदि ग्रंथ (धनासरी भगत धन्ना, पृ॰695)

हे गोपाल! मैं तेरी आरती करता हूँ। जो जन तेरी भक्ति करते हैं, तू उनके काम संवारता हैं। मैं दाल, आटा और घी माँगता हूँ, ताकि उसको खाकर ख़ुशी हो। जूते और कपड़े भी अच्छे हों और अनाज भी माँगता हूँ। गऊ, भैंस भी दुधारू माँगता हूँ। चढ़ने की अच्छी घोड़ी और घर की स्त्री भी अच्छी आज्ञाकारिणी और हमदर्द हो। इन सब चीज़ों को मैं माँगता हूँ।

ईसा मसीह ने प्रार्थना सिखाई हैं, जिसमें हमारी लगभग सभी ज़रूरतें आ जाती हैं।

> हे पिता! तू जो आसमानों में है, तेरा नाम मुबारक हो। तेरी बादशाहत दुनिया में आये और यहाँ भी तेरी मौज चले, जिस प्रकार वह आसमानों में चलती है। हमें आज के लिए रोटी दे (शरीर और आत्मा– दोनों की, संतुष्ट हो सकें), हमारे काल–कर्म के कर्ज़ माफ़ कर दे, जिसे पाकर कि हम अपने कर्ज़दारों के कर्ज़ माफ़ करते हैं (तू हमें बख़्श और ताकत दे कि हम औरों को बख़्श सकें।) हमें संसार के प्रलोभनों से बचा और हमें बुराइयों और पापों से हटा, क्योंकि सब स्थानों में तेरी ही बादशाहत है। तू समर्थ शक्तिवान है, तेरा ही प्रताप है और हमेशा रहने वाला है।
>
> – मैनुअल ऑफ़ प्रेयर ('Manual of Prayer')(मई 1957, पृ.15)

इसी तरह की हमारे पास एक सुन्दर प्रार्थना है, जो सैन्ट जॉन ने धरती माता के लिए कही है।

> हमारी माता जो पृथ्वी पर है, उसका नाम पूजनीय हो। उसकी बादशाहत आए और उसकी इच्छा हम में पूर्ण हो, जो कि उसमें विराजमान है। जैसा कि आप रोज़ अपने देवताओं को भेजते हैं– भेजते ही रहना। हमारे गुनाहों को माफ़ कर देना, जैसा कि हम उसके विरुद्ध सब अपने गुनाहों पर पश्चाताप करते हैं। और हमें बीमारियों की तरफ़ न ले जाना, बल्कि हमें बुराइयों से बचाकर दूर रखना। क्योंकि ये पृथ्वी, ये शरीर और स्वास्थ्य सब आपका ही है।
>
> – एस्सीन गॉस्पॅल ऑफ़ जॉन ('Essene Gospel of John') (22:1-39)
>
> (ई. बी. सजेकली, अनुवादक)

महात्मा बुद्ध के अनुयाइयों में प्रार्थना को स्वीकार नहीं किया गया है, पर यदि ग़ौर से देखा जाये, तो पता लगता है कि प्रार्थना के असली भाव को उन्होंने भी ग्रहण किया है। जब–जब वे सवेरे और शाम नहा–धोकर संध्या में बैठते हैं, तो सबकी भलाई के लिए शुभ भाव भेजते हैं, जिसका तात्पर्य यह होता है,

मैं सारे संसार का हित चाहता हूँ। ऊपर, नीचे, दायें, बायें जितने जीव—जन्तु हैं, सबका कल्याण हो। स्वर्ग, मृत्यु—लोक, पाताल और नरकों में भी जितने प्राणी हैं, सबको शांति और सुख मिले।

ऋग्वेद (हिंदूधर्मग्रंथ) में ऐसी कई प्राथनायें आई हैं, जिनमें प्रभु से हमारी शारीरिक और रोज़ की ज़रूरतें माँगी गई हैं।

*वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये। धिये पूषन्नयुज्महि ॥*
*अभि नो नर्यं वसु वीरं प्रयदतक्षिणम्। वामं गृहपति नय॥*
*अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन्दानाय चोदप। पणेश्चिद्वि भ्रदा मनः ॥*
*वि पथो वाजसातये चिनुहि वि मृधो जहि। साधन्तामुग्र नो धियः॥*
*परितृन्धि पणीनामारया हृदया कवे। अथेमस्मभ्यं रन्धय॥*

— ऋग्वेद (मंडल 6, सूक्त 53)

हे पालने वाले, तंदरुस्त रखने वाले सब रास्तों के मालिक! हम तुम से अपने सूक्त के द्वारा प्रार्थना करते हैं कि रथ (गाड़ी) की तरह जो ये शरीर हमें प्रदान किया उसके चलाने में हमें सफलता मिले (अर्थात अन्न, ख़ुराक़ मिले) और हमें वह धन मिले जिस की इच्छा मनुष्य रखता है। हमको एक साहसी, परोपकारी और दयावान अन्नदाता से मिला दे। हे प्रचंड देवता! ऐसे रास्ते खोल दे कि हम अन्न प्राप्त कर सकें, अपने वैरियों का नाश करें और हमारी इच्छाएँ पूरी हों। हे बुद्धिमान! अपने शस्त्र द्वारा कृपण लोगों के हृदय बेध दे और उनको हमारे आधीन कर दे।

हिंदुओं के नित्य—नियम 'संध्या' में यह प्रार्थना की गई है :

*ओं तच्चक्षुर्देवहिंत पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।*
*पश्येम शरद : शतं, जीवेम शरद : शतुं, श्रृणुयाम शरद : शतं, प्रब्रवाम शरद : शतं दीना : स्याम शरद : शतं, भूश्यसच शरद : शतात्॥*

वह ब्रह्म, सम्पूर्ण त्रिलोकी की आँख, देवताओं का हितकारी और शुद्ध निर्मल, हमारे सामने खड़ा है। हम उसको सौ वर्षों तक देखते रहें, हम उसके लिए सौ वर्षों तक जीते रहें, हम उसको सौ वर्षों तक सुनते रहें, हम उसको सौ वर्षों तक उसके गुण गाते रहें, हम उसकी कृपा से सौ वर्षों तक स्वतंत्र रहें और सौ वर्षों से भी अधिक काल तक से अवस्थायें रहें।

वेदांती भी जब ध्यान करते हैं, तो वे महावाक्यों का जाप करते हैं, जैसे 'अहं ब्रह्म अस्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) और 'तत् त्वम् असि' (जैसा तू है वैसा मैं हूँ)।

पवित्र गायत्री–मंत्र प्रार्थना ही तो है, जिसमें हम प्रभु से सर्व ज्योति के सूर्य की ओर बढ़ने के लिए प्रार्थना करते हैं।

हाफ़िज़ साहिब मुर्शिद के आगे मस्ती के आलम में प्रार्थना करते हैं :

*मनम ग़रीबे-दयार ओ तुई ग़रीब नवाज़,*
*दमे बहाले-ग़रीबे-दयार ख़ुद परवाज़।*
*ग़रज करिश्माए-हुस्न अस्त वरना हाजत नीस्त,*
*जमाले-दौलते महमूद रा ब ज़ुल्फ़े अयाज़।*

— दीवाने–हाफ़िज़ (पृ.236)

अर्थात, हे मुर्शिद! मैं ग़रीब हूँ और तू ग़रीब–नवाज़ है। मैं धुर–धाम से मुद्दतों से बिछुड़ा हुआ हूँ। मुझ ग़रीब के हाल पर रहम करके मुझे अपने धुर–धाम उड़ा कर ले चल। यह तेरे अलौलिक हुस्न की कोशिश का ही नतीजा है कि मैं तेरी ओर खिंचा आ रहा हूँ, नहीं तो मेरी क्या हैसियत थी! यही सबब है, नहीं तो कहाँ सुलतान महमूद और कहाँ बेचारा अयाज़ गुलाम, जिस पर उसकी इतनी मेहर की नज़र थी।

फिर फ़रमाया है :

*मा रा बर आस्ताने-तू बस हक़्क़े-ख़िदमत अस्त,*
*ऐ ख़्वाजा बाज़ बीं बतरहम्म ग़ुलाम रा।*

— दीवाने–हाफ़िज़ (पृ.38)

अर्थात, हे मुर्शिद! मेरा फ़र्ज और हक़ है कि तेरे दर पर सेवा और चाकरी करूँ। तू दया करके मुझ पर रहम की नज़र कर, ताकि यह सेवा बन जाये।

शम्स तबरेज़ साहिब अपने मुर्शिद के आगे प्रार्थना करते हैं :

*साक़ी तू शराबे-लामकां रा, आं नामो-निशाने बेनिशां रा।*
*यक बार दिगर चिह् करदी ऐ जान, साक़ी करदी तू साक़ीयां रा।*
*बर बंद दो चश्मे-ऐब बीं रा, बकुशाए दो चश्मे-ग़ैब दां रा।*

— दीवाने–शम्स तब्रेज़ (पृ.19)

अर्थात, हे सत्गुरु ! लामकाँ की शराब को, जो बेनिशानी का निशान देती है, (अर्थात नाम) एक बार बख़्श कर सब परमार्थ के यात्रियों को साक़ी ही बना दिया, मेरी ऐब और नुक़्स देखने वाली आँखों को बंद कर दे और ग़ैब को देखने वाली अन्दर की आँख खोल दे।

फिर फ़रमाया है :

*काफ़ तुई मस्किने-सीमुर्ग़ रा, शमअ तुई जान चू परवाना रा।*
*चश्माए-हैवां बकुशा हर तरफ़, नक़ल कुन ईं क़िस्सा ओ अफ़साना रा।*
*मस्त कुन ऐ साक़ी व दरकार कश, ईं ख़िरद काफ़िरे-बेगाना रा।*
*यक़ दमे दर मस्जिदे-मा अंदर आ, दर सुख़ान आरास्ता ईं ख़ाना रा।*

— दीवाने–शम्स तब्रेज़ (पृ.23)

अर्थात, हे मुर्शिदे–क़ामिल! जिस प्रकार काफ़ पर्वत सीमर्ग के रहने की जगह है, उसी प्रकार मेरे आत्मा रूपी पंछी का तू धाम है। अगर मैं पतंगा हूँ, तो तू वह लौ है जिसके नूर पर वह हज़ार जानों से कुर्बान है। हे दयालु! मेरे चारों ओर अमृत की वर्षा कर, ताकि मानसरोवर (चश्माए–कौसर और आबे–हयात) के जो क़िस्से सुनने में आये हैं, वे साक्षात हो जायें। मुझे प्रेम की मस्ती बख़्श और बेलगाम अक़्ल को सेवा में लगााकर ठिकाने लगा। मेरी आख़िरी प्रार्थना यह है कि तू जल्दी मेरे तन–मन की मस्जिद में प्रकट हो जा, ताकि मेरी तिनकों की कुटिया भी पवित्र होकर शोभा पा जाये।

एक नियत प्रार्थना मुसलमान भाइयों के यहाँ इस प्रकार शुरू होती है :

*— बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम*
*— अल–हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन*
*— अर रहमानिर्रहीम*
*— मालिकि यौमिद्दीन*
*— इय्या–कनअबुदु व इय्या–क नस्तअीन*
*— इहिदनस्सिरातल मुस्तक़ीन*
*— सिरातल–लजी–न अन–अम–त अलैहिम*
*ग़ैरिल मग्ज़बि अलैहिम वलज्जाल्लीन*
*आमीन!*

— शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है,
— सब तरह की तारीफ़ ख़ुदा के लिए है, जो तमाम मख़्लूक़ात का परवरदिगार है,
— बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला, इंसाफ़ के दिन का मालिक–हाकिम,
— हम तेरी इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं,
— हम को सीधे रास्ते पर चला,
— उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तू अपना फ़ज़ल व करम करता रहा,
— न कि उन के, जिन पर तू गुस्सा होता रहा और न ही गुमराहों के।

दुआ क़बूल हो।

# प्रार्थनाओं के नमूने

## कबीर साहिब की प्रार्थना

विनय करूँ कर जोर के, सुन गुरु कृपा निधान।
संत संग सुख दीजिए, दया गरीबी गिआन।।

कबिरा यह बिनती करे, चरनन चित लगाइ।
मारग साचा संत का, गुरु मोहि देव बताइ।।

किआ मुख लै बिनती करूँ, लाज आवत है मोहि।
तुम देखत अवगुण करूँ, कैसे भावउं तोहि।।

मुझ में अवगुण तुझ गुण, तुम गुण अवगुण मुझ।
जो मैं बिसरूँ तुझ को, तू मत बिसरे मुझ।।

साहिब तुम न बिसारियो, लाख लोग मिल जाहिं।
हम से तुम को बहुत हैं, तुम सम हम को नाहिं।।

तुम्हे बिसारे किआ बने, किस के शरणे जाहिं।
शिव बिरंच मुनि नारदा, मेरे चित न समाहि।।

जो मैं भूल बिगाड़िआ, ना कर मैला चित्त।
साहिब गरुवा चाहिये, नफ़र बिगाड़े नित्त।।

कबिरा भूल बिगाडिया, कर कर मैला चित्त।
नफ़र तो दीन अधीन है, साहिब राखे हित।।

अवगुण किये तो बहु किये, करत न लागी बार।
भावें बंदा बख्सिये, भावें गरदन मार।।

बख़्स बख़्स दे बख़्स, बख़्स गरीब निवाज।
मैं तो पूत कपूत हूँ, मेरी बाप को लाज।।

साईं तुम में बहुत गुण, अवगुण कोई नाहि।
जो खोजा दिल आपना, सभ अवगुण मुझ माहि।।

मुझ में गुण एको नहीं, सुनो संत सिर मोर।
तेरे नाम प्रताप से, पाऊँ आदर ठौर।।

मैं खोटा साईं खरा, मैं अघ का भंडार।
मैं अपराधी आत्मा, साईं शरण उबार।।

मैं अपराधी जन्म का, नख सिख भरा विकार।
तुम दाता दुख भंजना, मेरी करो संभार।।

सुरत करो मेरी साईंआँ, मैं हूँ भौजल माहि।
आपे ही बहि जाऊँगा, जो नहि पकड़ो बाहि।।

मनहि प्रतीत न प्रेम रस, ना कछु तन में ढंग।
ना जानू इस पीउ से, किउंकर रहसी रंग।।

अब के जो साईं मिले, सभी दुख आखूँ रोइ।
चरणों ऊपर सीस धरि, कहूँ जो कहिना होइ।।

अंतरजामी एक तू, सभ जग के आधार।
जो तुम छाडउ हाथ से, कौन उतारे पार।।

भव सागर है अति कठिन, गहरा अगम अथाह।
तुमहि दयाल दयो करो, तब पाऊँ कुछ थाह।।

अवगुणहारा गुण नहीं, मन का बड़ा कठोर ।
ऐसे समरथ सतिगुरु, ताही लगावै ठौर।।

तुम तो समरथ साईंआं, दृढं कर पकड़ो बांहि।
धुर ही लै पहुँचाईओ, मत छोड़ो जग माहि।।

भगति दान मोहि दीजिये, गुरु देवन के देव।
अवर नहीं कछु चाहिये, निसदिन तेरी सेव।।

तुम गुरु दीन दयाल हो, दाता अपरंपार।
मैं बूडउ मझंदार में, पकड़ लगाओ पार।।

## सत्गुरु के आगे प्रार्थना

यह मन जूझ जूझ कर हारा।। लगे न एक उपाओ।।
तुम समरथ कहाँ नहि तुम्हारे।। क्यों एती देर लगाओ।।
मैं दुख सुख में खाऊँ झकोले।। क्यों न पड़ा मेरा अब तक दाओ।।
अब ही दया करो मेरे दाता।। मन और सुरत गगन चढ़ाओ।।
मन तो दुष्ट विरह नहि लावे।। प्रेम प्रीत का दान दिवाओ।।
यह तो सुख झूठे ही चाहे।। सच्चे की परतीत न लाओ।।
भोग बिलास जगत के माँगे।। सुरत शब्द का रस नहि पाओ।।
क्योंकर कहूँ किस विधि समझाऊँ।। गुरु का बचन न रिदे समाओ।।
इस मन की कुछ घड़त अनोखी।। शब्द माहि कुछ प्रेम न भाओ।।
कैसे बचे पचे चौरासी ।। यह नहि चढ़ता गुरु की नाओ।।
संसारी के धक्के खावे।। फिर जमपुर में पिटता जाओ।।
ऐसे दुख सहेगा बहुतक।। अब नहि माने गया भुलाओ।।
सब घट में गुरु तुमहीं प्रेरक।। मुझ दुखिया को क्यों न बुलाओ।।

तुम बिन और न कोई मेरा ।। चार लोक में तुमहीं दिखाओ।।
अब तो दया करो राधास्वामी।। जैसे बने तैसेघाट चढ़ाओ।।
— सार बचन

अब मैं कौन कुमति उरझानी। देश पराया भई हूँ बिगानी।।
अब की बार मोहि लेओ सुधारी ।मैं चरनन पर निस दिन वारी।।
रहुँ पछताय झुरूँ मन अपने । कैसे लगूँ मै पिया अपने।।
मैं धरती पिया बसे अकासा। बिन पाये पिया रहूँ उदासा।।
हे सत्गुरु सुनो मेरी टेरा। काल चक्र अब मारो घेरा।।
दीन दुखी होय करत पुकारी । सुन स्वामी यह बिनती हमारी।।
तुम दयाल सब को देओ दाना। मैं ही अभागिन भई दुख खाना।।
क्या कहुँ मैं अब अपनी पीर की । जस कोई छेदत भाल तीर की।।
तब स्वामी ने दियो दिलासा। प्रेम पंख ले उड़ो अकासा।।
दया हुई अब मिली पिया से। हरी पीर दुख दूर जिया से।।
— सार बचन

सत्गुरु मेरी सुनो पुकार।
सत्गुरु मेरी सुनो पुकार। मैं टेरत बारम्बार।।
दुरमत मेरी दूर निकारो। मुझे करलो चरन अधारो।।
मांहि भौजल पार उतारो। मेरी पड़ी नाव मझँधारो।।
तुम बिन अब कोइ न सहारो। अपना कर मुझे सम्हारो।।
मैं कपटी कुटिल तुम्हारो। तुम दाता अपर अपारो।।
मैं दीन दुखी अति भारो। जब चाहो तब निस्तारो।।
मैं आरत करूँ तुम्हारी। तन मन धन तुम पर वारी।।
अब मिला सहारा भारी। मैं नीच अजान अनाड़ी।।
घट भेद नाद समझाया। मन बैरी स्वाद न पाया।।
दुख सुख में बहु भरमाया। जग मान बडाई चाहा।।

उलटूँ मैं इसको क्यों कर। बिन दया तुम्हारी सत्गुरु।।
अब खैंचो राधास्वामी मन को। मैं विनय सुनाऊं तुमको।।

— सार बचन

## मीराबाई की प्रार्थना

या भव में मो बहु दुख पायो, संसा सोग निवार।।
अब दरसन की तलब लगी है, दूर करो दुख पार।।
यह संसार सब ब्रह्यो जात है, लख चौरासी धार।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आवागमन निवार।।
तुम देखत बिन कल ना पड़त है, जानत मेरी छाती।।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रो रो अखियाँ राती।।
ये संसार सकल जग झूठा, झूठा कुल अर नाती।।
दोऊ कर जोड़उ अरज करत हूँ, सुण लीजउ मेरी बाती।।
ये मन मेरो बड़ो हरामी, जिउं मद मातो हाथी।।
सत्गुरु दसत धरयो सिर ऊपर, अंकुश दे समझाती।।
मीरा के प्रभु बिरधर नागर, हरि चरणां चित राती।।
पल पल तेरा रूप निहारूं, निरख निरख सुख पाती।।
साऊ थे दुश्मन होइ लागे, सभ नै लगूं कड़ी।।
तुम बिन साउ कोई नहीं है, डिगी नाव मेरी समुद्र अड़ी।।
दिन नहिं चैन रात नहिं निदंरा, सूखूँ खड़ी खड़ी।।

बान बिरह के लगे हिये में, भूलूं न एक घड़ी।।
पाथर की तो अहिल्या तारी, बन के बीच पड़ी।।
कहाँ बोझ मीरा से कहिये, सौ ऊपर एक धड़ी।।
गुरु रैदास मिले मोहिं पूरे, धुर से कलम भिड़ी।।
सत्गुरु सैन दई जब आ के, जोत में जोत रत्नी।।
भौ सागर में बही जात हूँ, काढो तो थारी मरजी।।
या संसार सगो नहिं कोई, साचा सगा रघुबर जी।।
मात पिता और कुटंब कबीलो, सभ मतलब के गरजी।।
मीरा के प्रभु अरजी सुन लो, चरन लगाओ थारी मरजी।।

## धर्मदास जी की प्रार्थना

भक्ति दान गुरु दीजिए देवन के देवा हो।।
जन्म पाय न बीसरों श्री गुरु पद सेवा हो।।
तीरथ बरत मैं ना करूँ नादेचल पूजा हो।।
मनसा बाचा कर्मना मेरे और न दूजा हो।।
आठ सिद्ध नउ निध है बैकुंठ का बासा हो।
सो मैं ना कुछ मांगहूँ मेरे समरथ दाता हो।।
सुख संपति परिवार धन सुन्दर घर नारी हो।।
सुपने इच्छा न उठै गुरु आन तुमारी हो।।
सुपने धरमदास की बिनती समरथ सुण लीजै हो।।
आवा गवन निवार के अपना कर लीजै हो।।

## सूरदास जी की प्रार्थना

**सब जानत तुम अंतरजामी करनी कछु न करी।।**
**औगुन मोसे बिसरत नाहिं पल छिन घरी घरी।।**
**सब परपंच की पोट बांधकर अपने सीस धरी।।**
**दारा सुत धन मोह लियो है सुध बुध सब बिसरी।।**
**'सूर' पतित को वेग उधारो अब मेरी नाव भरी।।**

## सिक्ख धर्म—ग्रंथों से

गुरु ग्रंथ साहिब में से कुछ सुन्दर प्रार्थनाओं के नमूने नीचे दिये जा रहे हैं :

*किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम।।*
*चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम।।*
*धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवे काम।।*
*जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम।।*
*हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम।।*
*जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम।।*
*सब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम।।*
*प्रभ सुआमी कंत विहुणीआ मीत सजण सभि जाम।।*
*नानक की बेनन्तीआ करि किरपा दीजै नामु।।*
*हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम।।*

— आदि ग्रंथ (माझ बारह माहा म॰5, पृ॰133)

हम अपने ही कर्मों द्वारा आप से अलग हैं—कृपा करके हमें कण—कण में रम रही सत्ता अर्थात प्रभु से मिला दो। चारों युग दसों दिशाओं में भटकते, थके—मांदे, फटेहाल अब हे प्रभु! आपकी शरण आये हैं! जैसे बिना दूध के गाय, बेकार है और नमी के सब्ज़ियाँ मुरझा जाती हैं और

किसी काम की नहीं रहतीं, उसी तरह हम बिना प्रभु प्रियतम के व्यर्थ हैं, और हमें कभी भी शांति प्राप्त नहीं हो सकती। जिस घर यानी शरीर में प्रभु प्रकट नहीं है वह रेगिस्तान की तरह से ही है। उसके बिना शरीर के तमाम आभूषण और साज—शृंगार बेकार है। प्रभु प्रियतम के बिना तमाम मित्र—दोस्त संबंधी यमदूत से जान पड़ते हैं। गुरु नानक प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि कृपा करके नाम की दात प्रदान करो। हे प्रभु! उस स्वामी प्रभु का संग प्रदान करो, जो अजर, अविनाशी है।

*हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ तृखावंतु बिनु नीर॥*
*मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर॥*
*हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर॥ रहाउ ॥*
*मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर॥*
*मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के लै सतिगुर की मति धीर॥*
*जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि साँति सरीर॥*

– आदि ग्रंथ (गौंड म॰4, पृ॰861)

मेरा मन प्रभु–प्रियतम के दर्शन को बहुत तरसता है, जैसे प्यासा पानी के बिना तरसता है। प्रभु–प्रियतम का बाण मेरे दिल में लग गया है और हरि प्रभु ही मेरी अन्तर की पीड़ा को जान सकता है। मेरे प्यारे की जो कोई भी बात सुनाता है, वही मेरा भाई है। आओ सखियाँ, मिल बैठकर अपने प्रभु के गुणों का बखान करें और सत्गुरु की मति को धारण करें। हे प्रभु! नानक की आस पूरी करो और अपना पवित्र दर्शन उसे प्रदान करो और शरीर में शांति दो।

*कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई॥ रहाउ ॥*
*रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई॥*
*नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई॥*
*खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई॥*
*दीन दइआल कृपाल प्रभु नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाई॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी पूरबी म॰5, पृ॰204)

हे माता! प्रभु–प्रियतम, जो प्राण पति हैं, से मिलन कैसे हो सकता है। मैं रूप हीन हूँ, बुद्धि और बल से कमज़ोर हूँ। मैं बहुत दूर देश से आई हुई परदेसिन हूँ। मेरे पास ना तो कोई दौलत है, ना ही यौवन है। मुझ असहाय

की हे प्रभु! सहायता करो। खोज–खोजकर मैं पागल हो गयी हूँ। अब, गुरु नानक देव कहते हैं कि कृपालु दयालु प्रभु ने दया करके मेरी दर्शन की प्यास संतों के संपर्क से बुझा दी है।

*कृपानिधि बसहु रिदै हरि नीत॥*
*तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति॥ रहाउ ॥*
*दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ॥*
*महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुन गावउ॥*
*आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ॥*
*जो तू देहि तही इहु तृपतै आन न कतहू धावउ॥*
*सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ॥*
*साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ॥*
*सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा॥*
*नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा॥*

– आदि ग्रंथ (टोडी म॰5, पृ॰712)

हे करुणा के सागर! हमेशा मेरे दिल में निवास करो। मुझे ऐसी सद्‌बुद्धि दो जिसमें प्रकाश हो जिससे मुझे परमात्मा से प्यार हासिल हो जाए। मैं आपके सेवकों की धूलि माँगता हूँ, जिसे बारंबार मैं अपने मस्तक पर लगा सकूँ। मैं सब से बड़ा पापी व गया–गुज़रा हूँ, मुझे यक़ीन है कि आप के गुणानुवाद गाकर मैं पवित्र व निष्पाप हो जाऊँगा।

आप की इच्छा ही मुझे प्रिय लगे और जो आप मेरे लिए करो, वही मेरे लिये सुखद व आनंददायक हो। जो आप दें, उसी से मेरी तृप्ति हो और अन्य मैं कुछ नहीं चाहता।

आप को हमेशा अपने पास हाज़िर–नाज़िर जान कर मैं आप के सेवकों की चरण–रज बनना चाहता हूँ। अगर हमें संतों की संगति मिल जाये, केवल तभी हम परमात्मा को पा सकते हैं। हम हमेशा आपके दास–बालक हैं और आप हमारे मालिक–स्वामी हैं। गुरु नानक कहते हैं कि हे प्रभु! मैं आप का बालक हूँ और आप मेरे माता व पिता हैं। और आपका नाम मेरे मुँह में स्फूर्तिदायक अमृत के समान है।

*प्रभु जी मिलु मेरे प्रान॥*
*बिसरु नही निमख हीअरे ते अपने भगत कउ पूरन दान॥ रहाउ ॥*

*खोवहु भरमु राखु मेरे प्रीतम अंतरजामी सुघड़ सुजान॥*
*कोटि राज नाम धनु मेरै अंमृत द्रिसटि धारहु प्रभ मान॥*
*आठ पहर रसना गुन गावै जसु पूरि अघावहि समरथ कान॥*
*तेरी सरणि जीअन के दाते सदा सदा नानक कुरबान॥*

– आदि ग्रंथ (टोडी म॰5, पृ॰716)

आपके द्वारा ही मैं जीवित रहता हूँ। मुझे क्षण भर के लिये भी मत बिसारना, मत भुलाना। हे प्रभु! मुझे केवल एक दात दो। मेरे भ्रम का निवारण करो और हे प्रभु प्रियतम। मेरी रक्षा करो। आप तमाम रहस्यों के ज्ञाता हैं। 'नाम' की दौलत लाखों सांसारिक राज्यों से बढ़कर है। आपकी कृपादृष्टि का अमृत मेरे लिये सबसे ज़्यादा महान है। हे सर्वशक्तिमान प्रियतम! मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करो कि मै हर समय आपके गुणानुवाद ही गाता रहूँ। तमाम आत्माओं के रखवाले! मैं आप की शरण में हूँ। आपके चरण–कमलों में गुरु नानक कहते हैं कि मैं प्यार के साथ अपने आप को बलिदान करता हूँ।

*प्रभ तेरे पग की धूरि॥*
*दीनदइआल प्रीतम मनमोहन करि किरपा मेरी लोचा पूरि॥ रहाउ॥*
*दह दिस रवि रहिआ जसु तुमरा अंतरजामी सदा हजूरि॥*
*जो तुमरा जसु गावहि करते से जन कबहु न मरते झूरि॥*
*धंध बंध बिनसे माइआ के साधू संगति मिटे बिसूर॥*
*सुख संपति भोग इसु जीअ के बिनु हरि नानक जाने कूर॥*

– आदि ग्रंथ (टोडी म॰5, पृ॰716)

हे प्रभु! मैं आपके चरणों की धूलि हूँ। हे हम गरीबों के दयाल, प्रीतम! मन को मोहने वाले, कृपा करके मेरी ये लगन पूरी करो। दशों दिशाओं में आपकी ही प्रशंसा हैं। आप ही सर्वज्ञ ज्ञाता और सर्वत्र विद्यमान है। हे मेरे कर्तार! जो आपके गुणानुवाद गाते हैं, जब वे संसार को छोड़ेगे, तो उनके दिल में काई मलाल नहीं होगा। संतों के संपर्क से हमारे तमाम बंधन और दुख–दर्द नष्ट हो जाते हैं। गुरु नानक कहते हैं, कि वे जानते हैं कि अगर परमात्मा का प्यार ना मिले, तो तमाम दौलतें और खुशियाँ किसी भी काम की नहीं हैं।

*तुधु बिनु दूजा नाही कोइ॥ तू करतारु करहि सो होइ॥*
*तेरा जोरु तेरी मनि टेक॥ सदा सदा जपि नानक एक॥*

*सभ ऊपरि पारब्रहमु दातारु॥ तेरी टेक तेरा आधारु॥ रहाउ ॥*
*है तूहै तू होवनहार॥ अगम अगाधि ऊच आपार॥*
*जो तुधु सेवहि तिन भउ दुखु नाहि॥ गुरपरसादि नानक गुण गाहि॥*
*जो दीसै सो तेरा रूपु॥ गुण निधान गोविंद अनूप॥*
*सिमरि सिमरि सिमरि जन सोइ॥ नानक करमि परापति होइ॥*
*जिनि जपिआ तिस कउ बलिहार॥ तिस कै संगि तरै संसार॥*
*कहु नानक प्रभ लोचा पूरि॥ संत जना की बाछउ धूरि॥*

– आदि ग्रंथ (तिलंग म॰5, पृ॰723)

आपके अलावा कोई दूसरा नहीं। जो आप चाहते हैं वही कुछ होता है। मेरी तमाम ताक़त आप हैं और मेरे मन का सहारा भी आप है। इसीलिए गुरु नानक कहते हैं कि वे हमेशा आप का ही जाप करते हैं। हे पारब्रह्म! आप सबसे ऊपर हैं। तमाम संसार को आप का ही सहारा है तथा आपका ही एक आधार है। आप है और हमेशा ही आप रहेंगे। आप अगम, अगोचर, ऊँचे और अनंत हैं। जो आप की सेवा करते हैं, वह डर और दुख से छूट जाते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि गुरु की कृपा से ही मैं प्रभु के गुणानुवाद गाता हूँ।

जो कुछ हम देखते हैं, तमाम आप का रूप है। हे प्रभु! आप गुणों के समुद्र हैं, अनूठे हैं। हे जिज्ञासु! उस प्रभु को लगातार हमेशा स्मरण करो। गुरु नानक कहते हैं कि वह स्मरण भी प्रभु की कृपा से ही हो सकता हैं।

जो आपका ध्यान करते हैं, मैं उन पर बलिहार हूँ। ऐसे संतों की संगति से तमाम संसार तर सकता है। गुरु नानक कहते हैं कि हे प्रभु आपने मेरी कामना पूरी कर दी है। अब मैं संतों की चरण–रज, जो कि आलोकित है, की वन्दना करता हूँ।

*तू ठाकुरो बैरागरो मै जेही घण चेरी राम॥*
*तूं सागरो रतनागरो हउ सार न जाणा तेरी राम॥*
*सार न जाणा तू वड दाणा करि मिहरंमति साँई॥*
*किरपा कीजै सा मति दीजै आठ पहर तुधु धिआई॥*
*गरबु न कीजै रेण होवीजै ता गति जीअरे तेरी॥*
*सभ ऊपरि नानक का ठाकुरु मै जेही घण चेरी राम॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰779)

मेरे जैसे आपके पास अनेक शिष्य हैं, हे सत्गुरु प्रभो! आपको सभी प्यार करते हैं। आप सभी रत्नों की खान व समुद्र हैं आपकी गहराई अनंत है। सर्वोत्तम ज्ञानस्वरूप प्रभो! मुझ पर कृपा करो और मुझे ऐसा ज्ञान दो कि मैं आप के ध्यान मैं ही बैठा रहूँ, आपकी महत्ता को अनुभव कर सकूँ। मेरे मन! घमंडी और भटकन वाला मत रह, धूलि जैसा नम्र बन। गुरु नानक कहते हैं कि मेरा ठाकुर सबसे ऊँचा है और मुझ जैसे अनेक उस की सेवा में निरंतर लगे रहते हैं।

*करि किरपा मेरे प्रीतम सुआमी नेत्र देखहि दरसु तेरा राम॥*
*लाख जिहवा देहु मेरे पिआरे मुखु हरि आराधे मेरा राम॥*
*हरि आराधे जम पंथु साधे दूखु न विआपै कोई॥*
*जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी जत देखा तत सोई॥*
*भरम मोह बिकार नाठे प्रभु नेर हू ते नेरा॥*
*नानक कउ प्रभ किरपा कीजै नेत्र देखहि दरसु तेरा॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰780)

मेरे प्रभ–प्रीतम कृपा करो, ताकि मेरी नज़रें आपका दर्शन करती रहें। मेरे प्रियतम! मुझे लाखों जिह्वा प्रदान करो, ताकि मैं आपके नाम का गुणानुवाद कर सकूँ। आपके गुणानुवाद गाने से मैं यमों से बच जाऊँगा और तमाम दुख–दर्दों से छूट जाऊँगा। आकाश, पानी व धरती में सर्वत्र परमात्मा विद्यमान है और मैं उसे ही सब जगह देख रहा हूँ। निकटतम से भी निकट में मैं परमात्मा को देख रहा हूँ, मेरे सभी भ्रम और भय नष्ट हो गये हैं। हे प्रभु! हे मालिक! गुरु नानक कहते हैं कि कृपा करो, ताकि जब भी हम देखें, तब आपका ही दर्शन प्राप्त हो।

*कोटि करन दीजहि प्रभ प्रीतम हरि गुण सुणीअहि अबिनासी राम॥*
*सुणि सुणि इहु मनु निरमलु होवै कटीऐ काल की फासी राम॥*
*कटीऐ जम फासी सिमरि अबिनासी सगल मंगल सुगिआना॥*
*हरि हरि जपु जपीऐ दिनु राती लागै सहजि धिआना॥*
*कलमल दुख जारे प्रभू चितारे मन की दुरमति नासी॥*
*कहु नानक प्रभ किरपा कीजै हरि गुण सुणीअहि अविनासी॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰781)

मेरे प्यारे प्रभु! मुझे करोड़ों कान दो ताकि मैं आपकी प्रशंसा हमेशा ही सुनता रहूँ। आपका गुणानुवाद सुन–सुन करके ही मन पवित्र होता है और काल के बंधनों का नाश होता है। सर्वदा स्थित प्रभु पर लगातार ध्यान करने से तमाम बंधन नष्ट हो जाते हैं और सच्ची प्रसन्नता आ जाती है। परमात्मा के नाम को लगातार स्मरण करने से हमारी सुरत सहज ही बिखराव की हालत से हट कर एकजुट हो जाती है। तमाम खोटे कर्म जल कर नष्ट हो जाते हैं, और बुरे विचार दूर उड़ कर भाग जाते हैं। गुरु नानक प्रार्थना करते हैं, हे प्रभु! कृपा करो, ताकि दुनिया में इंसान हमेशा ही परमात्मा की नादध्वनि को सुन सकें।

*करोड़ि हसत तेरी टहल कमावहि चरण चलहि प्रभ मारगि राम।।*
*भव सागर नाव हरि सेवा जो चड़ै तिसु तारगि राम।।*
*भवजलु तरिआ हरि हरि सिमरिआ सगल मनोरथ पूरे।।*
*महा बिकार गए सुख उपजे बाजे अनहद तूरे।।*
*मन बाँछत फल पाए सगले कुदरति कीम अपारगि।।*
*कहु नानक प्रभ किरपा कीजै मनु सदा चलै तेरै मारगि।।*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰781)

करोड़ों हाथों से और करोड़ों पैरों से आप की सेवा में लगा रहूँ। प्रभु! आपका शब्द ही वह नाव है जो जीवन–मरण के समुद्र से हमें पार ले जाता है। जो कोई उस नाव में बैठता है, भवसागर (जीवन मरण के भयानक समुद्र) से पार उतर जाता है और उसकी कोई भी इच्छा अपूर्ण नहीं रह जाती। तमाम भयंकर पाप नष्ट हो जाते हैं, उनके स्थान पर आनंद की प्राप्ति होती है और निरंतर आध्यात्मिक शब्दध्वनि सुनाई देने लगती है। जो संकल्प मन में उठते हैं, पूरे हो जाते हैं। गुरु नानक कहते हैं, हे प्रभु! हमारे पर कृपा करो और अपने रास्ते पर हमेशा हमें चलते रहने का वरदान दो।

*एहो वरु एहा वडिआई इहु धनु होइ वडभागा राम।।*
*एहो रंगु एहो रसु भोगा हरि चरणी मनु लागा राम।।*
*मनु लागा चरणे प्रभ की सरणे करण कारण गोपाला।।*
*सभु किछु तेरा तू प्रभु मेरा मेरे ठाकुर दीन दइआला।।*
*मोहि निरगुण प्रीतम सुख सागर संतसंगि मनु जागा।।*
*कहु नानक प्रभि किरपा कीन्ही चरण कमल मनु लागा।।*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰781)

नाम का ख़ज़ाना ही सबसे बड़ा वरदान और आदर के योग्य है और जो उसे पा जाता है वह ही सबसे बड़ा भाग्यशाली है। इसे पा जाना सबसे बड़ी ख़ुशी और सबसे ऊँचा आनंद है। अब मन उस जगत प्रभु सृष्टा के चरण–कमलों में लग गया है। उसी का सहारा अब इस मन ने ग्रहण कर लिया है। हे प्रभु! अब सब कुछ आपका है और आप मेरे हैं। आप कृपालु! दयालु मेरे स्वामी हैं। मेरे में कोई गुण नहीं हैं आप आनंद के सागर हैं। मन, अनुभवी संतों की संगति में रह कर जाग गया है। गुरु नानक कहते हैं, हे प्रभु! आप की कृपा से अब मेरा मन आपके चरण–कमलों में लग गया है।

*तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता।। तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता।।*
*तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ।।*
*तुमरी कृपा ते तुधु पछाणा।। तूं मेरी ओट तूं है मेरा माणा।।*
*तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ।।*
*जीअ जंत सभि तुधु उपाए।। जितु जितु भाणा तितु तितु लाए।।*
*सभि किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ।।*

– आदि ग्रंथ (माझ म॰5, पृ॰103)

आप ही मेरे माता और पिता हैं। आप ही मेरे भाई और सगे–संबंधी हैं। आप सर्वत्र मेरे रक्षक हैं। भला अब मुझे क्या भय हो सकता है? आपकी कृपा से ही मैंने आप को पहचान लिया है आप ही मेरा आश्रय और आदर हैं। आप के अतिरिक्त अन्य दूसरा कोई नहीं है। जो कुछ यहाँ है, सभी कुछ आप के हुक्म से ही हुआ है। आपकी मर्ज़ी के बग़ैर कुछ भी नहीं हो सकता।

*तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि।। जीउ पिंडु सभु तेरी रासि।।*
*तुम मात पिता हम बारिक तेरे।। तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे।।*
*कोइ न जानै तुमरा अंतु।। ऊचे ते ऊचा भगवंत।।*
*सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी।। तुम ते होइ सु आगिआकारी।।*
*तुमरी गति मिति तुम ही जानी।। नानक दास सदा कुरबानी।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी सुखमनी म॰5, पृ॰268)

आप हमारे मालिक–स्वामी हैं और आप के सामने हम प्रार्थना करते हैं। मेरा तन और आत्मा आप के ही हैं। हम आप के बच्चे हैं और आप

हमारे माता–पिता हैं। आपकी कृपा में ही अनंत सुख है। आपकी महानता को कोई नहीं जान सकता। आप सब से महान व ऊँचे हैं। आप तमाम सृष्टि के आधार और पोषक हैं। ये सृष्टि आप की उत्पन्न की हुई है और आपकी आज्ञा में ही चलती है। अपनी महानता और विशालता को आप ही जान सकते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि आप के प्रेम में हम हमेशा ही कुरबान जाते हैं।

*किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे॥*
*बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे॥*
*लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे॥ रहाउ ॥*
*प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम्ह सदा सदा उपकारे॥*
*सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे॥*
*किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे॥*
*मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे॥*
*पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे॥*
*जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰738)

मेरी अवगुण भरी अयोग्य आत्मा के आप ही रखवाले हैं। मेरी ज़िंदगी, शरीर और मन सभी आप के हें। आपकी महानता का कोई कैसे पार पा सकता है? ख़रीदा गया गुलाम क्या चतुराई दिखा सकता है? यह तन और आत्मा आप के हैं। हे सर्वसुंदर और आकर्षक प्रियतम! आप के एक क्षण के दर्शन के लिये मैं अपना सर्वस्व अर्पण करता हूँ। हे प्रभु! मैं आप के द्वार पर एक ग़रीब भिखारी हूँ और आप हमेशा ही कृपालु–दयालु हैं। ऐसा कुछ नहीं जो मैं आप के लिए कर सकूँ। हे सत्गुरु! आप स्वयं ही अगम और असीम हैं। मैं भला आप की क्या सेवा कर सकता हूँ? आप को प्रसन्न करने के लिये मैं क्या कहूँ? मैं आप का दर्शन कैसे पा सकता हूँ? आप की महानता को हम जान नहीं सकते और न ही आप का पार पा सकते हैं। मेरा मन आप के दर्शन के लिये तड़प रहा है। मैं लगातार आप से आप के दर्शन का वरदान माँगता हूँ और इस में मुझे कोई शर्म नहीं आती। आप के पवित्र चरण–रज की दात, जो कि ज्योतिर्मय है, मुझे प्राप्त हो, ताकि उसे अपने मस्तक पर लगाकर मैं भी ज्योतिर्मय हो जाऊँ। ऐ नानक! सत्गुरु कृपाल हो गये हैं और परमात्मा ने मुझे उन गुरुदेव की कृपा से जीवन–मरण के बंधन से मुक्त कर दिया है।

मेरे प्रियतम प्रभो! आप मेरे जीवन व प्राणों के आधार हैं। केवल आप ही आंतरिक मन की व्यथा को जानते हैं और अकेले आप ही सबसे श्रेष्ठ मित्र हैं। मैंने तमाम ख़ुशी व प्रसन्नता आप ही से प्राप्त की है। हे मेरे सत्गुरु! आप अकथनीय और अतुलनीय हैं। आप की लीलाओं का मैं वर्णन नहीं कर सकता। हे प्रभु! आप तमाम श्रेष्ठ सदगुणों के समुद्र हैं और तमाम ही प्रसन्नता व ख़ुशी के दाता हैं। आप अगोचर और अगम हैं, लेकिन सत्गुरु की कृपा द्वारा आप प्राप्त हो जाते हैं। आप ने मेरे तमाम भयों को समाप्त कर दिया और मेरे अहंकार को नष्ट करके आपने मुझे बंधनमुक्त कर दिया है। संतों की संगति में जीवन–मरण का भय भी समाप्त हो जाता है। मैं सत्गुरु के चरण–कमलों को स्पर्श करता हूँ और गुरु की सेवा पर लाख बार बलिहार जाता हूँ। जिस सत्गुरु के प्रसाद से मैंने इस भय रूपी समुद्र को पार कर लिया है। गुरु नानक कहते हैं कि अब मैंने उस प्रभु–प्रियतम को पा लिया है।

*ऐथै ओथै तूंहै रखवाला।। मात गरभ महि तुम ही पाला।।*
*माइआ अगनि न पोहै तिन कउ रंगि रते गुण गावणिआ।।*
*किआ गुण तेरे आखि समाली।। मन तन अंतरि तुधु नदरि निहाली।।*
*तूं मेरा मीतु साजनु मेरा सुआमी तुधु बिनु अवरु न जानणिआ।।*
*जिस कउ तूं प्रभ भइआ सहाई।। तिसु तती वाउ न लगै काई।।*
*तूं साहिबु सरणि सुखदाता सतसंगति जपि प्रगटावणिआ।।*
*तूं ऊच अथाहु अपारु अमोला।। तूं साचा साहिबु दासु तेरा गोला।।*
*तूं मीरा साची ठकुराई नानक बलि बलि जावणिआ।।*

– आदि ग्रंथ (माझ म॰5, पृ॰132)

हे प्रभु! इस दुनिया में और इसके बाद अगली दुनिया में आप ही मेरे रखवाले हैं। माता के गर्भ में आप ने मेरी रक्षा व पालन पोषण किया। जो आप के प्यार में मस्त हैं और रात–दिन आपके गुणों का बखान कर रहे हैं। उन्हें माया की आग प्रभावित नहीं कर सकती। आप के किन गुणों का मैं वर्णन करूँ? मैं आपकी उपस्थिति अपने मन और तन में अनुभव करता हूँ। आप मेरे मित्र व सदगुरु हैं। आप के सिवाय मैं किसी अन्य को नहीं जानता। जिस किसी को आप अपनी देख–रेख में रख लेते हैं, गर्म हवा का ज़रा सा भी स्पर्श उसको नहीं हो सकता। आप ही साहिब हैं। आप की

शरण सुख देने वाली है। संतों की संगति में ध्यान और जाप द्वारा आप को प्रकट किया जाता है। आप सबसे ऊँचे हैं, असीम है और अनमोल हैं। आप मेरे सच्चे मालिक हैं और मैं आपका सेवक हूँ। आप मेरे सच्चे ठाकुर हैं, और नानक आप पर बलिहार जाता है।

*तूं मेरा सखा तूं ही मेरा मीतु॥ तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु॥*
*तूं मेरा पति तू है मेरा गहणा॥ तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा॥*
*तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान॥ तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान॥*
*जिउ तुम राखहु तिव ही रहना॥ जो तुम कहहु सोई मोहि करना॥*
*जह पेखउ तहा तुम बसना॥ निरभउ नामु जपउ तेरा रसना॥*
*तूं मेरी नव निधि तूं भंडारु॥ रंग रसा तूं मनहि अधारु॥*
*तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ॥ तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ॥*
*मन तन अंतरि तुही धिआइआ॥ मरमु तुमारा गुर ते पाइआ॥*
*सतिगुरु ते दृड़िआ इकु ऐकै॥ नानक दास हरि हरि हरि टेकै॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी गुआरेरी म॰5, पृ॰181)

आप ही मेरे साथी और मित्र हैं। आप मेरे प्रियतम हैं और मेरा प्यार केवल आप के लिए ही है। आप ही मेरे पति हैं, आप ही से मेरा सिंगार हैं। मैं आप के बग़ैर क्षण–मात्र भी नहीं रह सकता। आप मेरी जान की जान और प्राणों के प्राण हैं। आप मेरे सत्गुरु, मालिक और शासक हैं। मैं हमेशा ही आपके भाणे, पर निर्भर रहता हूँ और जो आप का हुक्म है, वही मुझे निभाना है। जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, आप ही दीखते हैं। मैं अपनी जिह्वा से आपके नाम का जाप करूँगा, जिसने मुझे निडर बनाया है। आप मेरा बड़ा भारी भंडार और नौ निधियाँ हैं। आप बहुत ही प्रिय हैं आप मेरे मन का आश्रय हैं। आप ही मेरी शोभा हैं, और मैं आप के ही प्यार मैं तल्लीन हूँ। आप मेरा आश्रय हैं और आप ही मेरे सहायक हैं। आपकी अपने मन और तन में ध्यान द्वारा उपासना करता हूँ। अपने सत्गुरु से मुझे इस रहस्य का अनुभव मिला है। सत्गुरु ने मुझे पक्की तरह से एक प्रभु में स्थापित कर दिया है। हे नानक! सेवक को हमेशा केवल प्रभु का ही सहारा है।

अपनी अधोगति और असमर्थता बता कर मालिक से प्रार्थना कर कि तू हमारा उद्धार कर :

*अपने सेवक कउ कबहु न बिसारहु॥*
*उरि लागहु सुआमी प्रभ मेरे पूरब प्रीति गोबिंद बीचारहु॥ रहाउ॥*
*पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारो हमरे दोख रिदै मत धारहु॥*
*जीवन प्रान हरि धनु सुखु तुम ही हउमै पटलु क्रिपा करि जारहु॥*
*जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहनु कत बारो॥*
*जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेखि दरसु सुआमी सुख सारो॥*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰5, पृ॰829)

कृपया अपने दास को कभी भी मत भुलना। हे प्रभो स्वामी! अगर अन्य कुछ नहीं, तो मेरे पहले प्यार के लिए विचार करके ही मेरे हृदय में निवास करो। आप कृपालु और पतितों के प्रभो! आप मेरी आत्मा हैं, मेरा प्राण व साँस हैं। आप ही मेरी दौलत तथा खुशियाँ हैं। कृपा करके मेरे अहंकार के पर्दे को जला दें। मछली बग़ैर पानी के जीवित कैसे रह सकती है? और बालक दूध के बिना कैसे जीवित रह सकता है? गुरु नानक कहते हैं कि उन्हें प्रभु के चरण–कमलों को देखने की प्यास हैं। उनके दर्शन से ही हर तरह का सुख और ख़ुशी मिल जाती है।

*धनि उह प्रीति चरन संगि लागी॥*
*कोटि जाप ताप सुख पाए आइ मिले पूरन बडभागी॥*
*मोहि अनाथु दासु जनु तेरा अवर ओट सगली मोहि तिआगी॥*
*भोर भरम काटे प्रभ सिमरत गिआन अंजन मिलि सोवत जागी॥*
*तू अथाहु अति बडो सुआमी क्रिपा सिंधु पूरन रतनागी॥*
*नानकु जाचकु हरि हरि नामु माँगै मसतकु आनि धरिओ प्रभ पागी॥*

– आदि ग्रंथ (कानड़ा म॰5, पृ॰1301)

वह प्यार धन्य है, जो प्रभु के चरण–कमलों में लगता है। बड़े भाग्यों से मुझे सत्गुरु मिल गये हैं, जिससे मुझे करोड़ों जपों और तपों का फल मिल गया। मैं आपका ग़रीब दास हूँ और केवल आप पर ही निर्भर हूँ तथा मैंने दूसरे सभी सहारे त्याग दिए हैं। प्रभु के नाम सुमिरन करने से मेरे तमाम भय समाप्त हो गया है और आप के लगातार ध्यान से मैं अज्ञान की नींद से जाग गया हूँ। हे स्वामी आप अनन्त और महान हैं। आप दया के समुद्र हैं और तमाम रत्नों के भंडार हैं। गुरु नानक कहते हैं कि मैं आपसे दिव्य नाम माँगता हूँ तथा प्रभु के चरण–कमलों पर सदा नमस्कार करता हूँ।

*राखहु अपनी सरणि प्रभ मोहि किरपा धारे॥*
*सेवा कछू न जानऊ नीचु मूरखारे॥*
*मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे॥*
*हम अपराधी सद भूलते तुम्ह बखसनहारे॥ रहाउ ॥*
*हम अवगन करह असंख नीति तुम्ह निरगुन दातारे॥*
*दासी संगति प्रभू तिआगि ए करम हमारे॥*
*तुम्ह देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे॥*
*लागि परे तेरे दान सिउ नह चिति खसमारे॥*
*तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे॥*
*कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध उधारे॥*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰5, पृ॰809)

हे प्रभु! कृपा करो और मुझे अपनी शरण में रखो। क्योंकि मैं नहीं जानता कि आप की सेवा कैसे करूँ, मैं बड़ा नीच और अज्ञानी हूँ। हे मेरे प्रियतम प्यारे मुझे आपके ऊपर मान है। हम अपराधी गलतियाँ करते रहते हैं, जबकि आप बख़्शनहार हैं। हम अवगुणों से भरे गुणहीनों के आप ही सहारे हैं। हम माया के पीछे भागते हैं और अपने प्रभु की तरफ़ से पीठ किये रहते हैं, क्योंकि हमारे कर्म ही ऐसे हैं। अपनी कृपा–दया से आप हमें सभी कुछ देते हैं, जबकि हम बहुत कृतघ्न हैं और शुक्राना नहीं करते। आप की दातों में हम उलझ जाते हैं और देने वाले दाता परमात्मा को भूल जाते हैं। हे मेरे मुक्तिदाता! आप से आगे कुछ भी अन्य नहीं है। गुरु नानक कहते हैं कि आप दयालु हैं, मैं आपकी शरण में आया हूँ। मुझ मूढ़ का भी उद्धार कीजिए।

*हरि जू राखि लेहु पति मेरी॥*
*जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरन गही किरपा निधि तेरी॥ रहाउ ॥*
*महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा॥*
*भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा॥*
*कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ॥*
*घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ॥*
*नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै॥*
*नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै॥*

– आदि ग्रंथ (जैतसरी म॰9, पृ॰703)

हे हरि! मेरी लाज रखो। क्योंकि मैं यमराज से बहुत ज़्यादा डरा हुआ हूँ। हे कृपा के सागर! मैं आपकी शरण में आया हूँ। मैं मूर्ख हूँ, लालची हूँ। पाप कर कर के अपने आपे को समाप्त ही कर बैठा हूँ और पापस्वरूप हो गया हूँ। मौत का डर मुझे हर वक़्त सताता रहता है और इसी चिन्ता में मैं जल कर भस्म हो रहा हूँ। मैंने बहुत से इलाज किये मुक्ति पाने के लिये– दशों दिशाओं में तलाशता रहा हूँ। फिर भी हृदय के अंदर जो परमात्मा निवास करता है, उसका रहस्य मुझे किसी ने नहीं बतलाया। मैं तमाम गुणों से हीन हूँ, न ही मैंने कोई जप, तप किया है, अब मैं भला क्या करूँ? हे नानक! अब जीव हार कर आपकी शरण में आया है, इसे अभय (निर्भयता) का दान दीजिये।

*सुनहु बेनन्तीआ सुआमी मेरे राम॥*
*कोटि अप्राध भरे भी तेरे चेरे राम॥*
*दुख हरन किरपा करन मोहन कलि कलेसह भंजना॥*
*सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरब मै निरंजना॥*
*सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभ नेरहू ते नेरे॥*
*अरदासि नानक सुनि सुआमी रखि लेहु घर के चेरे॥*
*तू समरथु सदा हम दीन भेखारी राम॥*
*माइआ मोहि मगनु कढि लेहु मुरारी राम॥*
*लोभि मोहि बिकारि बाधिओ अनिक दोख कमावने॥*
*अलिपत बंधन रहत करता कीआ अपना पावने॥*
*करि अनुग्रहु पतित पावन बहु जोनि भ्रमते हारी॥*
*बिनवंति नानक दासु हरि का प्रभ जीअ प्रान अधारी॥*
*तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम॥*
*पालहि अकिरतघना पूरन द्रिसटि तेरी राम॥*
*अगाधि बोधि अपार करते मोहि नीचु कछू न जाना॥*
*रतनु तिआगि संग्रहन कउडी पसू नीच इआना॥*
*तिआगि चलती महा चंचलि दोख करि करि जोरी॥*
*नानक सरणि समरथ सुआमी पैज राखहु मोरी॥*

– आदि ग्रंथ (बिहागड़ा म॰5, पृ॰547)

हे प्रभु स्वामी! मेरी प्रार्थना को सुनो। चाहे पापों से भरा हूँ, फिर भी मैं आपका ही शिष्य हूँ। आप तमाम पापों व बुराइयों के नाश करने में समर्थ

हैं, हमेशा कृपालु हैं और तमाम कष्टों और दुखों के निवारक हैं। अपने चरणों में मुझे शरण दो और मेरी रक्षा करो। हे सर्वव्यापी परिपूर्ण प्रभो! तमाम जीवों के हृदय में आप विराजमान हैं। आप सब कुछ देख व सुन रहे हैं, क्योंकि आप सबसे निकट से भी निकटतम हैं। गुरु नानक कहते हैं कि मेरी प्रार्थना सुनकर, हे स्वामी! आपने मुझे अपना दास बना लिया है। आप हमेशा समर्थता वाले हैं जबकि हम सभी ग़रीब भिखारी हैं और माया मोह में ही मग्न हैं। हे प्रभु! हमें इस मृग–मरीचिका से बाहर निकालो। हम लोभ मोह विकार में बंधे हुए अनेक दुख कमा रहे हैं। क्योंकि हम अपनी ग़लतियों की सज़ा व दंड हर क्षण भुगत रहे हैं। हे मेरे कर्तार! आप तो स्वतंत्र और निर्बाध हैं। तमाम रागों व सीमाओं से परे हैं। अब मैं अनेक योनियों में भटकते हुए हार गया हूँ। हे सत्गुरु! मेरे ऊपर अब कृपा करो। गुरु नानक प्रार्थना करते हैं कि मैं प्रभु–हरि का दास हूँ और परमात्मा ही मेरे जीवन व प्राणों का आधार है।

आप सर्वशक्तिमान हैं जबकि मैं मंदबुद्धि हूँ, हे प्रभो! आप कृतघ्न लोगों के लिये भरण–पोषण का इंतज़ाम करते हैं। आप परिपूर्ण हैं और सभी पर कृपा दृष्टि रखते हैं। हे सृष्टा! आप को तमाम ज्ञानों के द्वारा भी नहीं समझा जा सकता। आप असीम हैं, जबकि मैं नीच और अल्प हूँ। मोतियों की तरफ़ मैंने पीठ की हुई है और कौड़ी बटोर रहा हूँ। मैं कितना क्रूर, नीच और अज्ञानी हूँ! तमाम बुरे तरीक़ों से माया, धन दौलत इकट्ठी कर ली है, जो क्षणभंगुर और नाशवान है और पलक झपकते ही ग़ायब हो जाती है। गुरु नानक कहते हैं कि उन्हें तो सर्वशक्तिमान प्रभु, आप का सहारा ही चाहिये। अब हे प्रभु! मेरी लाज रख लीजिए।

*हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता॥*
*हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता॥*
*माधो हम ऐसे तू ऐसा॥*
*हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा॥ रहाउ ॥*
*तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना॥*
*निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना॥*
*तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला॥*
*तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला॥*

*तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै॥*
*कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै॥*

– आदि ग्रंथ (सोरठ म॰5, पृ॰613)

हम मैले हैं, आप पवित्र हैं। हम निर्गुन हैं, आप दातार हैं। हम मूर्ख हैं आप परिपूर्ण हैं, आप सारी कलाओं के जाननहार हैं। हे माधव! हम दोनों में कितना भारी अंतर है? हम पापी हैं, आप पापों के नाशक हो, हे प्यारे प्रभो! आप सबके प्रीतम हैं। आप ही ने समस्त सृष्टि की रचना की है तथा सभी को जीवन तन और आत्मा प्रदान की है। मैं गुणरहित हूँ और किसी काम का नहीं। आप भलाई करते रहते हैं, जिसको हम प्रशंसित भी नहीं कर पाते और फिर भी आप हमेशा मेहरबान कृपालु दयालु हैं।

हे प्रभु! अपने बच्चों की रक्षा करो। आप सबके विधाता हैं और आप सदा सदा से सबके स्वामी–मालिक हैं, तमाम सृष्टि आप से ही याचना करती है। गुरु नानक कहते हैं कि हम आपके हवाले हैं हमें संतों की शरण में बनाए रखिए।

*मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ॥*
*रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ॥*
*भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ॥*
*तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ॥*
*करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ॥*

– आदि ग्रंथ (जैतसरी की वार म॰5, पृ॰709)

हे दयालु! मैंने आपकी शरण पकड़ ली है। हे दीनदयालु! मेरी संभाल करो। मुझे प्रभु से मिला दो। मैं आप की तलाश में ढूंढ़ते–ढूंढ़ते थक गया हूँ। ये आप के स्वभाव ही है कि आप अपने भक्तों को प्यार करते हैं और गिरे हुओं को उठाते हैं। मेरी प्रार्थना सुनने वाला आप के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं है। मैं प्रार्थना करता हूँ, हे कृपालु! मुझे उठाओ, उद्धार करो और संसार–सागर से बाँह पकड़ कर निकाल लो और अपने धाम ले चलो।

*सुणि नाह प्रभु जीउ एकलड़ी बन माहे॥*
*किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे॥*
*धन नाह बाझहु रहि न साकै बिखम रैणि घणेरीआ॥*
*नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि बेनन्ती मेरीआ॥*

*बाझहु पिआरे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए।।*
*नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाए।।*
*पिरि छोडिअड़ी जीउ कवणु मिलावै।।*
*रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै।।*
*सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै।।*
*सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुण सारै।।*
*सतिगुरि मेली ता पिरि रावी बिगसी अंमृत बाणी।।*
*नानक साधन ता पिरु रावे जा तिस कै मनि भाणी।।*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰1, पृ॰243)

हे मेरे प्रभु प्रियतम! सुनो! मैं अकेला जंगल में भटक रहा हूँ। हे प्रभु प्रियतम! आप के बग़ैर मुझमें धीरज कैसे हो सकता है? और मैं कैसे चिंतारहित हो सकता हूँ। पत्नी पति के बग़ैर कष्टदायक लंबी अंधेरी रातों में अकेली नहीं रह सकती। मुझे नींद की झपकी भी नहीं आती। हे प्रभो! सुनो! मुझे तो केवल आपका प्रेम भा गया है। हे प्रभु प्रियतम! आपके बग़ैर मेरे वास्ते किसी के दिल में हमदर्दी नहीं और मैं अकेला दर्द में कराह रहा हूँ। गुरु नानक कहते हैं, यदि पत्नी वास्तव में पति के वियोग का अनुभव करे, उसके बिना दुख का और अत्यंत ही बुरी दयनीय अवस्था का अनुभव करे, तो वह अपने प्रीतम को पा ही लेती है। मेरे जीवन के प्रियतम ने मुझे छोड़ दिया है। अब मुझे उससे दुबारा कौन मिला सकता है? जब प्यार जुड़ता है, तो शब्द सुहावना लगने लगता है। जब शब्द हम पर जारी होता है, तभी हमें सही रास्ता मिलता है। एक ज्योति शरीर को जगमगा देती है। हे सखी! सुनो, सब से महान सच, सनातन की प्रशंसा के गुणानुवाद गाकर ही हम वास्तव में सुंदर बनते हैं। जब सत्गुरु ने मुझे अपने प्रभु प्रियतम से जोड़ा, तो मुझे उसकी संगति का आनंद मिला। और दिव्य शब्द ने जो अमृत से भरा है, मुझे प्रसन्न और प्रफुल्लित कर दिया है। गुरु नानक कहते हैं कि एक पत्नी के लिए सच्ची प्रसन्नता की बात है, यदि वह प्रीतम के मन को भा गई हो।

*जे भुली जे चुकी साईं भी तहिंजी काढीआ।।*
*जिन्हा नेहु दूजाणे लगा झूरि मरहु से वाढीआ।।*
*हउ न छोडउ कंत पासरा।।*
*सदा रंगीला लालु पिआरा एहु महिंजा आसरा।। रहाउ ।।*

*सजणु तूहै सैणु तू मै तुझ उपरि बहु माणीआ॥*
*जा तू अंदरि ता सुखे तूं निमाणी माणीआ॥*
*जे तू तुठा क्रिपा निधान ना दूजा वेखालि॥*
*एहा पाई मू दातड़ी नित हिरदै रखा समालि॥*
*पाव जुलाई पंध तउ नैणी दरसु दिखालि॥*
*स्रवणी सुणी कहाणीआ जे गुरु थीवै किरपालि॥*
*किती लख करोड़ि पिरीए रोम न पुजनि तेरिआ॥*
*तू साही हू साहु हउ कहि न सका गुण तेरिआ॥*
*सहीआ तऊ असंख मंञहु हभि वधाणीआ॥*
*हिक भोरी नदरि निहालि देहि दरसु रंगु माणीआ॥*
*जै डिठे मनु धीरीऐ किलविख वंञन्हि दूरे॥*
*सो किउ विसरै माउ मै जो रहिआ भरपूरे॥*
*होइ निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइ॥*
*पूरबि लिखिआ पाइआ नानक संत सहाइ॥*

– आदि ग्रंथ (सूही काफी म॰5, पृ॰761)

हे प्रभु! यद्यपि हम भूलनहार हैं, अवसरों को चूक जाते हैं। फिर भी, मुझे ये मान है कि मैं आपका हूँ। जिसका प्यार कहीं और लग रहा हो, ऐसा करने की ग़लती की अपराध भावना के अफ़सोस से वह जल्दी मर जायेगा। मैं अपने प्रियतम का दामन कैसे छोड़ सकता हूँ, जबकि मैं उसका प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा हूँ कि वह ही मेरी आत्मा को आधार दे रहा है?

आप मेरे मित्र और संबंधी हैं, और मुझे आप पर बड़ा भारी मान है। जब आप मेरे अंतर में हैं, मैं प्रसन्न हूँ और आपका अनुभव करता हूँ। मेरी ग़रीब आत्मा को मान मिल गया है। अब क्योंकि आप मेरे पर बड़े कृपालु हुए हो, अब मुझे किसी दूसरी ओर न देखना पड़े और आपकी याद की दात मेरे दिल में बसी रहे। आप के प्यार भरे दर्शन व दृष्टि पाने के लिए मैं कोसों दूर नंगे पैर भी जाऊँगा। मैं आप की प्यारभरी कहानियाँ, जिससे आप प्रसन्न हो, सुनना पसंद करूँगा। आप के एक बाल की शान की बराबरी लाखों चाँद–सूरज भी नहीं कर सकते। आप महान से भी महान हैं, अवर्णनीय और निरंजन हैं। मैं पूरी तरह से आप के असंख्य गुणों की प्रशंसा भी नहीं कर पा रहा हूँ। आप के लाखों मित्र हैं और सभी मेरे से श्रेष्ठतर हैं। कृपया मेरी ओर एक कृपाभरी नज़र डालो, जिससे मैं आपके सुख का

अनुभव कर सकूँ। आपके देखने से मन संपूर्ण शांति से भर जाता है और तमाम मानसिक कष्ट और बुराइयाँ भाग जाती हैं। मैं उसे कैसे भूल सकता हूँ, जो मुझे अपनी दिव्य उपस्थिति से आनंद व सराबोर करता रहता है। दास भाव से मैंने अपने आप को आपके चरण–कमलों में डाल दिया है। नानकदेव कहते हैं कि एक संत की सहायता व कृपा से मुझे परमात्मा की प्राप्ति हुई, क्योंकि ऐसा प्रारब्ध में लिखा हुआ था।

*तू मेरा पिता तू है मेरा माता॥ तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता॥*
*तू मेरा ठाकुरु हउ दासु तेरा॥ तुझ बिनु अवरु नही को मेरा॥*
*करि किरपा करहु प्रभ दाति॥ तुम्हरी उसतति करउ दिन राति॥ रहाउ॥*
*हम तेरे जंत तू बजावनहारा॥ हम तेरे भिखारी दानु देहि दातारा॥*
*तउ परसादि रंग रस माणे॥ घट घट अंतरि तुमहि समाणे॥*
*तुम्हरी कृपा ते जपीऐ नाउ॥ साधसंगि तुमरे गुण गाउ॥*
*तुम्हरी दइआ ते होइ दरद बिनासु॥ तुमरी मइआ ते कमल बिगासु॥*
*हउ बलिहारि जाउ गुरदेव॥ सफल दरसनु जा की निरमल सेव॥*
*दइआ करहु ठाकुर प्रभ मेरे॥ गुण गावै नानकु नित तेरे॥*

– आदि ग्रंथ (भैरउ म॰5, पृ॰1144)

आप ही मेरे पिता और माता हैं। आप मेरी आत्मा और जीवन हैं। और आप ही सुख के दाता हैं आप मेरे मालिक स्वामी हैं और मैं आपका दास हूँ, और आप के अतिरिक्त मेरा अन्य कोई नहीं है। मुझे ये दात दीजिए कि मैं आपके गुणानुवाद दिनरात गाता रहूँ। हम आपके वाद्ययंत्र हैं और आप उसके वादक हो। आपके द्वार पर हम भिखारी हैं। हे दाता! हमें नाम की दात बख़्शो। आप की कृपा से मैं आंतरिक आनंद को पाकर आनंदित होता रहूँ, क्योंकि आप प्रत्येक दिल में नादध्वनि के रूप में समा रहे हो। आप की कृपा से ही मैं पवित्र नाम का उच्चारण करता हूँ और आप के प्यारे संतों की संगति में जाकर आप के गुणानुवाद गाता हूँ। आप की कृपा से ही हमारे दुख–दर्द समाप्त होते हैं। आप की कृपा से ही हृदय के कमल खिल उठते हैं। मैं प्यार से अपने गुरुदेव के चरण–कमलों में अपने आप को न्यौछावर करता हूँ, जिसके दर्शन फलदाई हैं और जिसकी सेवा महान पवित्रता देने वाली है। गुरु नानक देव कहते हैं कि हे मेरे प्रभु! दया करो, ताकि मैं लगातार, बग़ैर रुकावट के आपके गुणानुवाद गा सकूँ।

*प्रभ जी मोहि कवनु अनाथु बिचारा।।*
*कवन मूल ते मानुखु करिआ इहु परतापु तुहारा।। रहाउ ।।*
*जीअ प्राण सरब के दाते गुण कहे न जाहि अपारा।।*
*सभ के प्रीतम स्रब प्रतिपालक सरब घटाँ आधारा।।*
*कोइ न जाणै तुमरी गति मिति आपहि एक पसारा।।*
*साध नाव बैठावहु नानक भव सागरु पारि उतारा।।*

– आदि ग्रंथ (सारंग म॰5, पृ॰1220)

हे प्रभु! मैं कैसा असहाय प्राणी हूँ? आप ने, बड़े नीच जन्म से उद्धार करके, मुझे इंसान के रूप में पैदा किया, यही आपकी महानता है। आप सभी के मालिक हैं, सभी को आत्मा और प्राणों की दात देते हैं। आपके अनंत गुणों का कोई भी वर्णन नहीं कर सकता। आप सभी के प्यारे हैं, आप सभी का पालन करते हैं। आप संसार में सभी जीवों के जीवनदाता और स्थितिकर्ता पोषक हैं। तमाम विश्व आपका ही प्रकटस्वरूप है। आप इतने विस्तृत ब्रह्मांडों तक फैले हुए है कि आपके रहस्यों को कोई भी नहीं जानता, फिर भी आप ही सर्वत्र प्रस्फुटित हैं। गुरु नानक प्रार्थना करते हैं कि मुझे संतों की नाव प्रदान करो, ताकि उस पर बैठ कर जीवन–मरण के समुद्र को पार कर सकूँ।

*जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे।।*
*हम भूल विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए।।*
*हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए।।*
*जनु नानकु दासु हरि काँढिआ हरि पैज रखाए।।*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰4, पृ॰450)

जैसे आप चाहें वैसा हमें रखें। हम आप की शरण में आ गए हैं। हम दिन–रात अपराध व ग़लतियाँ करते हैं और मालिक–स्वामी, आप हमें कृपा करके हमारी आन–मान की लाज रखते रहते हैं। हम हमेशा ग़लतियाँ करते रहने वाले आपके बालक हैं और आप हमारे गुरु और पिता हैं। हे प्रभु! आप समझ का दान दें। गुरु नानक कहते हैं कि हम आप के सेवक हैं और आप हम पर अपनी दयाधारा बख़्शते रहें।

## नाम और नाम की कमाई के लिये प्रार्थना

*सतिगुर आइओ सरणि तुहारी॥*
*मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी॥ रहाउ ॥*
*अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी॥*
*लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी॥*
*सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी॥*
*नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी॥*

– आदि ग्रंथ (टोडी म॰5, पृ॰713)

हे सत्गुरु! मैं आप के चरण–कमलों में आया हूँ। मुझे 'नाम' का सुख और प्रभु की शोभा प्राप्त हो। मेरी तमाम चिंताओं को दूर कर दो। कोई भी आश्रय–स्थल अब नहीं सूझता, हारकर मैं आप के द्वार पर आया हूँ। चाहे मैं इस के योग्य हूँ या नहीं, मुझे कृपा करके उभार लें, क्योंकि आप ही समर्थ हैं। मेरे अंदर कोई भी गुण नहीं है। आप सदा बख़्शनहार हैं, सदा मेहरबान और सभी जीवों के आधार हैं। गुरु नानक कहते हैं कि मैंने संतों की शरण ली है, कृपा करके इस बार तो बचा लीजिए।

*दरसनु देखि जीवा गुर तेरा॥ पूरन करमु होइ प्रभ मेरा॥*
*इह बेनन्ती सुणि प्रभ मेरे॥ देहि नामु करि अपणे चेरे॥ रहाउ ॥*
*अपणी सरणि राखु प्रभ दाते॥ गुर प्रसादि किनै विरलै जाते॥*
*सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता॥ चरण कमल वसहि मेरै चीता॥*
*नानकु एक करै अरदासि॥ विसरु नाही पूरन गुणतासि॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰741)

हे गुरु! आप के दिव्य नूरानी स्वरूप के दर्शन से मुझे असली जीवन प्राप्त होता है, और मैं अपने आप को बड़ा ही भाग्यशाली समझता हूँ। मेरे प्रभु! मेरी यह प्रार्थना सुन लो। मुझे नाम देकर अपने चरणों में लगा लो। हे दाता! मुझे अपनी ही शरण में रखना।

जो गुरु की कृपा की प्रशंसा करते हैं, वे वास्तव में बहुत विरले लोग होते हैं। हे प्रभु! मेरे सच्चे मित्र! मेरी प्रार्थना सुन लो। अपने चरण–कमलों

सहित आप मेरे दिल में वास करें। गुरु नानक देव कहते हैं कि मेरी एक प्रार्थना है, हे प्रभु! मेरे हृदय में से आपका स्मरण कभी समाप्त न हो।

*प्रभ कीजै कृपा निधान हम हरि गुन गावहगे॥*
*हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे॥ रहाउ॥*
*हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे॥*
*सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे॥*
*जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे॥*
*मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे॥*
*जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे॥*
*जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे॥*
*हरि आपे होइ क्रिपालु आपि लिव लावहिगे॥*
*जनु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे॥*

– आदि ग्रंथ (कलिआन म॰4, पृ॰1321)

आप तमाम सद्‌गुणों के सागर हैं। हे मालिक–हे प्रभो। कृपा करो और ये आशीर्वाद दो कि हम आपके गुणानुवाद गाते रहें। हम रोज़ आप ही की आस करें। हे प्रभु! ऐसा समय कब आयेगा, जब आप मुझे अपने हृदय से लगा लेंगे?

हम नादान बालक हैं और अज्ञान के अंधेरे में भटक रहे हैं। आप हमारे पिता हैं, हमें रास्ता दिखायें और ज्ञान दें। हम आपके बच्चे बारंबार ग़लतियाँ करते हैं और सबके पिता बार–बार ही मुआफ़ करते रहते हैं क्योंकि आप को हम सभी प्यारे हैं। हे मालिक! जो कुछ भी आप हमें देते हो, हम ख़ुशी–ख़ुशी उसे मंजूर करते हैं, क्योंकि हमारे पास कोई अन्यत्र आश्रय नहीं, जहाँ जाकर शरण पा सकें। जो भक्त प्रभु के प्यारे हैं, परमात्मा उन्हीं को प्यारा होगा। आप की कृपा से ही केवल हम आप से लगातार लिव लगा सकते हैं। आप की कृपा से हम भी आप के अंदर समा जायेंगे। गुरु नानक देव कहते हैं कि मैं हरि के द्वार पर आया हूँ, आप ही हमारी लाज रखेंगे।

# संतों की सेवा के लिए प्रार्थना

*हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ।।*
*नउ निधि पाई राजु जीवा बोलिआ।।*
*अंमृत नामु निधानु दासा घरि घणा।।*
*तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा।।*
*कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ।।*
*पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ।।*
*आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ।।*
*मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धरम सालीऐ।।*

– आदि ग्रंथ (गूजरी वार म॰5, पृ॰518)

हे कृपालु प्रभु! मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अपने सेवकों का दास बना लें। जब आप मुझ से बात करते हैं, तो मैं अपने आप को जीवित अनुभव करता हूँ और तमाम दौलतों यानी नौ निधियों की प्राप्ति मुझे हो जाती है।

परमात्मा के भक्तों के हृदय में नाम का अमृत भरपूर रहता है। उन की संगति में मैं उस प्रभु के गुणानुवाद सुनता हूँ तो बहुत ऊँची अवस्था को पा जाता हूँ। उनकी सेवा से मेरा शरीर पवित्र हो जाता है। मैं उनके लिए पानी लाता हूँ, पँखा करता हूँ, उनके अनाज को पीसता हूँ और उनके पैर धोकर के प्रसन्नता को प्राप्त करता हूँ। मैं स्वयं तो कुछ भी नहीं कर सकता। हे प्रभु! मुझ पर अपनी कृपा करो। दिव्य संतों की संगति में रहने के लिये मुझे आश्रय दो।

*करि किरपा अपना दरसु दीजै जसु गावउ निसि अरु भोर।।*
*केस संगि दासु पग झारउ इहै मनोरथ मोर।।*
*ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर।।*
*चिति चितवहु हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर।। रहाउ।।*
*दइआल पुरख सरब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि।।*
*नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर।।*

– आदि ग्रंथ (गूजरी म॰5, पृ॰500)

हे प्रभु! मुझे अपना कृपालु दयालु चेहरा दिखाओ, ताकि मैं सवेरे–शाम आप के गीत गा सकूँ, ये मेरी आंतरिक इच्छा है। आप के सेवकों के पैर अपने सिर के बालों से धो व पौंछ सकूँ। हे सत्गुरु! आप के अलावा ऐसा कोई नहीं जिसे मैं देखता रहूँ और ध्यान करता रहूँ। हे दयालु प्रभु! आप सभी के स्वामी हैं। दोनों हाथ जोड़कर मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। गुरु नानक कहते हैं कि मैं आपका सेवक आप का नाम स्मरण करता रहता हूँ और पलक झपकते ही मैं स्थूल शरीर त्याग कर अगली दुनिया में, परलोक में उड़ जाता हूँ।

*प्रभ इहै मनोरथु मेरा।।*
*क्रिपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा।। रहाउ ।।*
*प्रातहकाल लागउ जन चरनी निस बासुर दरसु पावउ।।*
*तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ।।*
*सासि सासि सिमरउ प्रभु अपुना संतसंगि नित रहीऐ।।*
*एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीऐ।।*

– आदि ग्रंथ (देवगंधारी म॰5, पृ॰533)

हे प्रभु! मेरी यह इच्छा है। हे कृपानिधान! हे दया के सागर! मुझे अपने संतों का दास बना दो। अलख सुबह आपके चरणों में लग जाऊँ और दिन रात आप का ही दर्शन पाऊँ और अपने तन मन को आपकी सेवा में अर्पित कर दूँ। अपनी जिह्वा से हमेशा परमात्मा के गुणानुवाद गाता रहूँ। और हर साँस में मैं प्रभु का स्मरण करूँ तथा संतों की संगति में प्रतिदिन रहूँ। मेरी एकमात्र आधार और दौलत आपका दिव्य 'नाम' है। इस तरह से गुरु नानक कहते हैं कि मैं असली आनंद का उपभोग करता हूँ।

*ऐसी किरपा मोहि करहु।।*
*संतह चरण हमारो माथा नैन दरसु तनि धूरि परहु।। रहाउ ।।*
*गुर को सबदु मेरै हीअरै बासै हरि नामा मन संगि धरहु।।*
*तसकर पंच निवारहु ठाकुर सगलो भरमा होमि जरहु।।*
*जो तुम्ह करहु सोई भल मानै भावनु दुबिधा दूरि टरहु।।*
*नानक के प्रभ तुम ही दाते संतसंगि ले मोहि उधरहु।।*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰5, पृ॰828)

मेरे ऊपर ऐसी कृपा करो कि मेरा मस्तक हमेशा संतों के चरणों में झुका रहे। मेरी आँखों में उन संतों का दिव्य दर्शन हो। मेरा तन उनकी दिव्य चरण–रज में पड़ा रहे। गुरु का शब्द मेरे दिल में वास करे। परमात्मा का नाम मेरे अंदर निवास करता रहे। मुझे पाँच घातक पापों– काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से आज़ाद करो। और हे सत्गुरु! मेरे तमाम भ्रमों और भुलावों को जलाकर नष्ट कर दो। जो कुछ आप करें, वही हम अपने लिये अच्छा समझें। हे प्रभु! गुरु नानक कहते हैं कि आप ही दाता हैं। अतः अपने संतों की संगति द्वारा आप मेरा उद्धार करें।

## पाँच विकारों से बचने के लिए प्रार्थना

*राखु पिता प्रभ मेरे॥ मोहि निरगुनु सभ गुन तेरे॥ रहाउ ॥*
*पंच बिखादी एकु गरीबा राखहु राखनहारे॥*
*खेदु करहि अरु बहुतु संतावहि आइओ सरनि तुहारे॥*
*करि करि हारिओ अनिक बहु भाती छोडहि कतहूं नाही॥*
*एक बात सुनि ताकी ओटा साधसंगि मिटि जाही॥*
*करि किरपा संत मिले मोहि तिन ते धीरजु पाइआ॥*
*संती मंतु दीओ मोहि निरभउ गुर का सबदु कमाइआ॥*
*जीति लए ओइ महा बिखादी सहज सुहेली बाणी॥*
*कहु नानक मन भइआ परगासा पाइआ पदु निरबाणी॥*

– आदि ग्रंथ (गउड़ी म॰5, पृ॰205)

मेरे पिता मुझे बचाओ। मुझ में कोई गुण नहीं हैं, आप सभी गुणों के भंडार हैं। मैं अकेला हूँ, पाँच शत्रुओं का मुक़ाबला करना है। हे मेरे रक्षक! मेरी रक्षा करो। शत्रु मुझे नरक में धकेल रहे हैं और भयंकर रूप से सता रहे हैं। इसलिये आपकी शरण में आ गया हूँ। मैंने तमाम साधन किये, परंतु वे मेरा पिंड नहीं छोड़ते। आप संतों की रक्षात्मक शक्ति के बारे में सुनकर मैं आपकी शरण में आया हूँ, ताकि मुझे कुछ सहारा मिल सके। बड़ी कृपा से आप संत मुझे मिल गए हैं और आप से मुझे बड़ा भारी धीरज मिल गया है। आप संतों ने मुझे सच्चा मार्ग सिखा दिया है। मैंने निर्भय होकर आपके

नाम की कमाई की है। इस तरह आनंददायक वाणी (आध्यात्मिक शब्द धुनि) द्वारा मैंने तमाम महाशत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली है। गुरु नानक कहते हैं कि मेरे अन्दर प्रभु का प्रकाश हो गया है और मैंने निर्वाण पद पा लिया है।

*काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इन ते आपि छडावहु।।*
*इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु।।*
*अपुनी बिधि आपि जनावहु।। हरि जन मंगल गावहु।। रहाउ ।।*
*बिसरु नाही कबहू हीए ते इह बिधि मन महि पावहु।।*
*गुरु पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु।।*

– आदि ग्रंथ (सोरठ म॰5, पृ॰617)

काम, क्रोध, लोभ, झूठ और निन्दा से आप ही छुड़ा सकते हैं। इन सब को मुझ से बाहर कर दो और मुझे अपने पास बुला लो। किस तरह आप यह सब करते हैं, यह केवल आप ही जानते हैं। हे प्रभु! मुझे ऐसी विधि दे दो जिससे मैं क्षण मात्र भी आप को भुला न सकूँ। गुरु नानक कहते हैं कि बड़े भारी भागों से मुझे पूरे सत्गुरु से मिले और मेरे मन की भटकन हमेशा के लिये समाप्त हो गई है।

*तुझ बिनु अवरु नाही मै दूजा तूं मेरे मन माही।।*
*तूं साजनु संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही।।*
*तुमरी ओट तुमारी आसा।।*
*बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा।। रहाउ ।।*
*राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनि सागर विकराला।।*
*नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला।।*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰5, पृ॰378)

आप के अलावा मैं अन्य किसी को नहीं जानता। आप मेरे साथ हैं। आप मेरे मित्र और साथी हैं, हे प्रभु! जब आप मेरी आशा और सहारे हैं, तो मुझे क्या डर हो सकता है? एक क्षण के लिए भी मैं आप को न भूलूँ, चाहे मैं खड़ा हूँ या बैठा हूँ, सो रहा हूँ या जाग रहा हूँ। कभी किसी हालत में मैं आप को ना भूलूँ, मुझे ऐसा वर दो। मुझे हमेशा अपनी शरण में रखो, क्योंकि ये संसार भंयकर आग का महासागर है। गुरु नानक कहते हैं कि हे सत्गुरु! आप हर सच्ची ख़ुशी के दाता हैं। हम सभी आप के बच्चे हैं।

# जनसाधारण की ओर से प्रार्थना

*जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी।।*
*हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी।।*
*हरि गुण कहि न सकउ बनवारी।।*
*हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी।। रहाउ ।।*
*जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी।।*
*जिउ कंचनु बैसंतरि ताइओ मलु काटी कटित उतारी।।*
*हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती जपि हरि हरि हरि हरि उरि धारी।।*
*हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी।।*
*हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपरंपर पुरख अपारी।।*
*जन कउ कृपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी।।*

– आदि ग्रंथ (धनासरी म॰4, पृ॰666)

संत के भक्तों के तमाम पाप, परमात्मा की सेवा करने से नष्ट हो जाते हैं। हे स्वामी! हमारे ऊपर कृपा करके अपने प्यारों की संगति में रखो। मेरे मालिक! आपके गुणों का मैं वर्णन नहीं कर सकता। हम अपने पापों के भारी पत्थरों के बोझे से इस संसार रूपी समुद्र में डूब रहे थे। कृपा करके आपने हम पत्थरों को तार दिया है। अनेक जन्मों में हम सांसारिक प्रलोभनों में फंसे हुए थे, लेकिन जब से हम संतों के संपर्क में आये हैं संभल गए हैं। जैसे सोना तपाने से शुद्ध होता है, इसी तरह से हमारे मन की गंदगी साफ़ करके इसे शुद्ध बना दिया जाता है। दिन–रात ही उस का नाम सुमिरन करूँ और इस प्रकार उसे अपने हृदय में धारण करूँ। उसका नाम इस संसार में एक पक्की औषधि है जो तमाम रोगों व बुराइयों की दवा है। उस के पवित्र शब्द (नाद) की शक्ति से अहंकार नष्ट हो जाता है। प्रभु अगम, अगाध और हमारी बुद्धि की पकड़ से बाहर है। हे जगजीवन! अपने सेवक पर कृपा करो। गुरु नानक कहते हैं, हम आपकी शरणागति में आये हैं।

*हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली।।*
*सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली।।*

– आदि ग्रंथ (धनासरी म॰4, पृ॰667)

हम अंधे है और अंधेपन के अंदर ही इंद्रियों के भोगों रसों में उलझे हुए हैं। गुरु के पथ का हम कैसे अनुसरण कर सकते हैं? सत्गुरु की कृपा से ही वे संभव है और हम उसकी छत्रछाया में आ सकते हैं।

*हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै।।*
*बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै।।*
*हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने।। कारन कवन अबोल।। रहाउ।।*
*बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे।।*
*कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे।।*

– आदि ग्रंथ (धनासरी भगत रविदास, पृ॰694)

मेरे जैसा ग़रीब कोई नहीं है और आप जैसा कृपालु दयालु भी कोई नहीं है। तो फिर क्या चाहिये? तेरे बचन मेरे हृदय में बसे और पूरे संत से मिला दिया, मैं आप पर न्यौछावर हो गया हूँ। तो हे प्रभु! आप अब क्यों नहीं बोलते? हे माधव! बहुत जन्मों के हम प्रभु से बिछुड़े हुए हैं, लेकिन इस जन्म मैं आप के लेखे में आ गया हूँ। गुरु रविदास जी कहते हैं कि आपके पवित्र दर्शनों की आसा लग गई है, आपको देखे मुद्दत हो गई है।

*हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे।।*
*हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो।।*
*हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो।।*
*जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो।।*
*जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे।।*
*हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए।।*
*हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए।।*
*जनु नानकु दासु हरि काँढिआ हरि पैज रखाए।।*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰4, पृ॰450)

आपके किन गुणों का बखान करें? हे सदगुरु स्वामी! आप असीम हैं ऊँचे हैं और प्रभु की बादशाहत वाले हैं। हम आप के नाम की प्रशंसा दिनरात करते हैं और ये ही हमारी केवल मात्र आधार है। हम अज्ञानी हैं और नहीं जानते कि आप के लिए इस संसार सागर को कैसे पार करें? नानक परमात्मा का दास है और पानी भरने वाला है। जैसे आप की इच्छा हो, वैसे ही हमें रखो, क्योंकि अब हम आपकी शरण में आए हैं। दिन–रात

हम हर क़दम पर ग़लती करते हैं, लेकिन आप क्षमावन्त हैं और हमारी आन–मान के रक्षक हैं। हम आपके अज्ञानी बालक हैं और आप हमारे पिता और स्वामी हैं। हे प्रभु! हमें अपने रास्ते पर लगाओ। गुरु नानक कहते हैं कि परमात्मा ने मुझे साधारण लोगों में से अलग छाँट कर, अपना बनाना मंजूर कर अपना बना लिया है।

*अपणी कृपा करहु गुर पूरे आपे लैहु मिलाई॥*
*हम लोह गुर नाव बोहिथा नानक पारि लंघाई॥*

– आदि ग्रंथ (मलार म॰4, पृ॰1265)

*गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुन्ने राम राजे॥*
*मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिन्ने॥*

– आदि ग्रंथ (आसा म॰4, पृ॰449)

*सगल तिआगि गुर सरणी आइआ राखहु राखनहारे॥*
*जितु तू लावहि तितु हम लागह किआ एहि जंत विचारे॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰750)

*हरि के जन सतिगुर सत पुरखा बिनउ करउ गुर पासि॥*
*हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि॥*

– आदि ग्रंथ (गूजरी म॰4, पृ॰492)

*एहु जगु जलता देखि कै भजि पए हरि सरणाई राम॥*
*अरदासि करी गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम॥*

– आदि ग्रंथ (वडहंस म॰3, पृ॰571)

*तउ मै आइआ सरनी आइआ॥ भरोसै आइआ किरपा आइआ॥*
*जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी मारगु गुरहि पठाइआ॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰746)

*नानक सरणि तुम्हारी करते तूं प्रभ प्रान अधार॥*
*होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु॥*

– आदि ग्रंथ (गूजरी म॰5, पृ॰500)

*सतिगुरि अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ॥*
*साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ॥*

– आदि ग्रंथ (सिरी राग म॰1, पृ॰55)

*करउ बेनती साधसंगति हरि भगति वछल सुणि आइओ॥*
*नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ॥*

– आदि ग्रंथ (टोडी म॰5, पृ॰712)

*हरि हरि अंमृत नामु देहु पिआरे॥*
*जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ तिन के काज सवारे॥*

– आदि ग्रंथ (सारंग म॰4, पृ॰1199)

*करउ बेनती संतन पासे॥ मेलि लैहु नानक अरदासे॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰759)

*सतिगुर आइओ सरणि तुहारी॥*
*मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी॥*

– आदि ग्रंथ (टोडी म॰5, पृ॰713)

*दरसनु देखि जीवा गुर तेरा॥ पूरन करमु होइ प्रभ मेरा॥*
*इह बेनन्ती सुणि प्रभ मेरे॥ देहि नामु करि अपणे चेरे॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰5, पृ॰742)

*ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा॥ तुम्हरो धिआनु तुम्हारो रंगा॥*

– आदि ग्रंथ (बिलावल म॰5, पृ॰828)

*सतिगुर भीखिआ देहि मै तूं संम्रथु दातारु॥*
*हउमै गरबु निवारीऐ कामु क्रोधु अहंकारु॥*

– आदि ग्रंथ (सूही म॰1, पृ॰790)

## ‘सांझी प्रार्थना की पुस्तक’ से

**निम्न** प्रार्थनाएँ 'चर्च ऑफ़ इग्लैंड' मे पादरियों एवं जनसामान्य द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली "सांझी प्रार्थना की पुस्तक" ‘Book of Common Prayer’ से चुनी गई हैं। ये सर्वोच्च सृष्टिकर्ता के लिए आध्यात्मिक भाव, पूजा, नम्रता, विनती और प्रशंसा का प्रेरणादायक उदाहरण पेश करती हैं। ऐसा उन्नत प्रयोजन सभी धर्मों में स्वभाविक तौर पर मिलता है, जो कि

उस एक सांझे स्त्रोत की सर्वव्यापकता को और सारी मनुष्य जाति के भाग्य को स्थापित करता है।

हे प्रभु! जो अपना विश्वास आप में प्रकट करते हैं, आप उनका बल हैं। दया करके हमारी प्राथनाएँ स्वीकार करो। हम परिवर्तनीय प्रकृति की कमज़ोरी के कारण, बिना आपके कोई भला कार्य नहीं कर सकते। हम पर अपनी दयाधारा की सहायता प्रदान करो, ताकि हम आपके आदेशों को, पूरी इच्छा शक्ति और कर्म के द्वारा अपना कर, आपको प्रसन्न कर सकें। हमारे स्वामी ईसा मसीह द्वारा आप यह कृपा प्रदान करें। आमीन (प्रार्थना स्वीकार हो)।

हे प्रभु! जो सहायता करने में कभी नहीं चूकते है और न ही उन पर शासन करते हैं, जिन्हें तू अपने दृढ़ भय और प्रेम में लाता है। हम भी वही प्रार्थना करते हैं कि आप हमें उस प्रभुरूप की छत्र-छाया में रख और हमें भी अपने पवित्र नाम का दृढ़ भय और प्रेम दें। हमारे स्वामी ईसा मसीह द्वारा यह सब प्रदान करें। आमीन।

हे प्रभु! हम आप ही से विनती करते हैं, दया करके हमारी सुनें और वह सब हमें प्रदान करें, जिसको हमने दिल से प्रार्थना में माँगा है। हे सर्वशक्तिमान! आपकी सहायता ही सब ख़तरों और विपत्तियों में रक्षक और आराम देने वाली है। ऐसा हमारे स्वामी ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन।

हे प्रभु! सब के रक्षक! जो आप ही में विश्वास रखते हैं कि आपके बिना कुछ भी ताक़तवर नहीं, कुछ भी पवित्र नहीं, आप अपनी दया-मेहर हम पर कई गुणा बढ़ा दो। हमारे शासक और मार्गदर्शक बनकर, हमें अस्थिर वस्तुओं से गुज़ार दो, ताकि हम हमेशा रहने वाली वस्तुओं को न खोयें। ऐ आसमानों के पिता! यह सब हमें, हमारे प्रभु ईसा मसीह के द्वारा प्रदान करें। आमीन!

हे प्रभु! हम प्रार्थना करते हैं कि इस संसार का कार्य, बड़ी शान्तिपूर्वक आपके शासक के हुक्म में चले, आपके गिरजे प्रभु के आनंद में भरकर ख़ुशी से आपकी सेवा करें। ऐसा हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन।

हे प्रभु! जिन्होंने अपने आपको मानव की विचार-धारा से गुज़रने वाली सभी चीज़ों के प्रति प्यार के लिए तैयार कर लिया है, उसी प्रकार का प्यार उस सब चीज़ों के प्रति हमारे हृदय में भी डालें, क्योंकि हम इन चीज़ों को प्यार करते हुए, आपके वायदे को निभा सकते हैं, जो हमारी अपनी इच्छा से भी कहीं अधिक है। हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा ऐसा हो। आमीन!

सारी शक्तियों और सामर्थ्य के स्वामी, आप भाग्य के लिखने वाले हैं और सभी भली वस्तुओं के दाता हैं, आप अपने नाम के लिए प्यार हमारे हृदयों में अंकित कर दो, सत् धर्म में हमें आगे ले जाओ, सारी प्रभुता के साथ हमारी पालना करो और अपनी महान दया-धारा हम पर बनाए रखो। ऐसा हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

हे प्रभु! जो आपके सर्वसामर्थ्य बल को मुख्य रखते हुए, दया और दीनता में उद्घोषणा करता है, हमें भी उसकी दया का एक ऐसा मापक कृपा करके प्रदान करो कि हम आपके वचनों की राह पर दौड़ पड़ें तथा स्वार्गिक ख़ज़ानों को पा सकें। यह हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

सर्वशक्तिमान और हमेशा रहने वाले प्रभु, आप सदा हमारी प्रार्थना सुनने को इतने अधिक तत्पर हैं, जितने हम प्रार्थना करने के लिए भी नहीं, और आप हमारे सामर्थ्य और योग्यता से अधिक देने को तत्पर हैं। हमारी इच्छा और अधिकार से भी अधिक की, ये दया आप बनाये रखें। ऐसी चीज़ों को हम में से भुला दें

जिनके कारण हमारी बुद्धि में डर है, और वे सभी अच्छी चीज़ें हमें दे, जिनके हम माँगने योग्य नहीं हैं। लेकिन, हमारे प्रभु, आपके पुत्र ईसा मसीह की विशिष्टता और ध्यान द्वारा यह हो। आमीन।

सर्वशक्तिमान और दयावान प्रभु, आपकी दात मिलने से ही आपकी आज्ञा में रहने वाले लोग, सच्ची और सराहनीय सेवा करते हैं। हमें भी यह प्रदान करो, हम इसके लिए विनती करते हैं, ताकि हम भी उसी विश्वास से जीवन में सेवा कर सकें, जिससे हम आपके आलौकिक वायदे को पाने के लिए अन्ततः सफल हो जायें। हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा यह हो। आमीन!

सर्वशक्तिमान! हमेशा रहने वाले प्रभु, तब तक हमारे विश्वास, उम्मीद और पवित्रता में वृद्धि दो। जब तक हमें आपका वादा प्राप्त न हो, जो आपका हुक्म है, उसके प्रति हमारा प्यार बनाएँ। हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा यह हो। आमीन!

हे प्रभु! रक्षा करो, हम आपसे प्रार्थना करते हैं, आपके गिरजे आपकी हमेशा रहने वाली दया के साथ रहें। क्योंकि मनुष्य कमज़ोर है और आपकी कृपा के बग़ैर कुछ नहीं कर सकता, बल्कि असफल ही रहता है, हमारे ऊपर अपनी कृपा दृष्टि हमेशा बनाये रखो। उन सब चीज़ों से, जो घातक हैं, अपनी सहायता द्वारा हमें रक्षा प्रदान करो, और हमें उन चीज़ों की तरफ़ ले चलो, जो हमारी मुक्ति में लाभप्रद हों। हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा यह हो। आमीन!

हे प्रभु! हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप निरन्तर दया करके अपने गिरजे की पवित्रता और रक्षा बनाये रखें, क्योंकि आपकी सहायता के बिना यह निरन्तर सुरक्षित नहीं रह सकता। अपनी प्रभु सत्ता और सहायता के द्वारा इसे हमेशा के लिए सुरक्षित कर दो। यह सब हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

हे प्रभु! हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपने लोगों को वरदान दें, ताकि वे सांसारिक और शारीरिक प्रलोभन और दुष्ट व्यक्तियों को रोक सकें, और अपने शुद्ध हृदयों और मन से, केवल आपके पीछे ही चलें। ऐसा हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

हे प्रभु! आपके बिना, हम आपको अधिक से अधिक प्रसन्न नहीं कर सकते। हमें वरदान दो कि आपकी 'पवित्र आत्मा' (Holy Spirit) सारी चीज़ों में स्पष्ट हो और हमारे दिलों पर शासन करे। ऐसा हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

हे सर्वशक्तिमान और अत्याधिक दयावान प्रभु, आप अपना उदार सद्गुण हम पर बनाये रखें। हम आनन्दपूर्वक दोनों- शरीर और आत्मा करके- उन चीज़ों की पूर्ति कर सकें, जिनको आप करवाना चाहते हो। यह हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

हे दयावान प्रभु! हम आपसे प्रार्थना करते हैं, आप अपने आज्ञाकारी इंसानों के लिये माफ़ी और शान्ति दें। वे सब पापों से मुक्त हो जायें और शांत मन से आपकी सेवा करें। यह हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

हे प्रभु! हम तुझसे प्रार्थना करते है कि आपका गिरजा परिवार निरंतर धर्म सेवा में लगा रहे, आपकी छत्र-छाया में यह सभी विपत्तियों से मुक्त रहे और आपके नाम की महानता में, आपके शुभ कार्य में भक्ति-भाव से समर्पित हो। ऐसा हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो आमीन!

हे प्रभु! हमें शरण और बल देने वाले, आप सभी भलाइयों के विधाता हैं, हम आप से प्रार्थना करते हैं, आप अपने चर्च की भक्ति प्रार्थनाओं को सुनने के लिए, तैयार हो जाएँ, और जिनको हम विनीत भाव से माँगते हैं, उन चीज़ों को प्रदान करें, जिससे हम लाभान्वित हो सकें। ये सब हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

हे प्रभु! हम आप से प्रार्थना करते हैं, कि आप अपने मनुष्यों को अपराधों से मुक्त कर दो। हम सभी को उन पापों के बदले आपके उदार सद्‌गुण प्राप्त हो, जिन्हें हमने अपनी निर्बलता में किए हैं, और जिनको हम स्वीकारते हैं। हे आसमानों के पिता! हमारे पवित्र प्रभु और उद्धारक ईसा मसीह, से प्राप्ति हो, ऐसा हमें प्रदान करो। आमीन!

## निःस्वार्थ बनाने के लिए प्रार्थना

हे प्रभु! मुझे अपनी शान्ति का यंत्र बना ले। जहाँ पर घृणा है वहाँ पर मुझे प्यार, जहाँ पर घात है वहाँ क्षमा, जहाँ सन्देह है वहाँ विश्वास, जहाँ निराशा है वहाँ आशा, जहाँ अन्धकार है वहाँ प्रकाश, और जहाँ उदासी है वहाँ प्रसन्नता उत्पन्न करने दे।

हे दिव्य गुरु! मुझे ऐसा वर दो कि सांत्वना देने में, मैं इतनी अधिक सांत्वना नहीं चाहूँ, दूसरों को समझ देने में समझदार न समझा जाऊँ, प्यार के बदले इतना अधिक प्यार न चाहूँ, क्योंकि देने में ही लेना छुपा है, दूसरों की क्षमा में ही अपनी क्षमा है, यह मरने ही में है कि हम अमर जीवन में जन्म लेते हैं।

— सेंट फ़्रान्सिस ऑफ़ आसीसी

## सोने के समय की प्रार्थना

हे आसमानों के पिता! जो जीवित प्राणी है, उन सभी की रक्षा कर और सभी को आशीर्वाद दें, सभी बुराइयों से उनकी रक्षा कर और उन्हें शान्ति में सोने दे।

— एल्बर्ट श्वाइट्ज़र

# बसंत समय की प्रार्थना

अब शरद ऋतु चली गई है और बसंत का आगमन है। छोटी छोटी पत्तियां, मनोहर फूल, खेतों में भेड़ बकरियों के बच्चे, और छोटे-छोटे अनेक अन्य बच्चे कलियाँ, जो चटककर फूल बन रही हैं, सब मेरे चारों ओर हैं। मुझे सभ्यता सिखाओ, ताकि मैं भी, प्रभु, आप को ख़ुश कर सकूँ। सारी कमज़ोर और छोटी वस्तुओं का भी ध्यान रख सकूँ, सबको प्यार करते हुए मैं दृढ़, बहादुर और सहायक बन जाऊँ।

— अनजान

निम्न दी गई कुछ प्रार्थनाओं के साथ हम इस खण्ड को समाप्त कर सकते हैं।

हे सर्वशक्तिमान प्रभु! आपके लिए सभी हृदय खुले हैं, सभी इच्छाओं से आप परिचित हैं, और कोई भी रहस्य आपसे छुपा हुआ नहीं है। आप अपनी 'पवित्र आत्मा' की प्रेरणा द्वारा हमारे हृदय के विचारों को साफ़ कर दो, जिससे हम आपको पूर्ण रूप में प्यार कर सकें, और अपनी योग्यता के अनुसार आपके 'पवित्र नाम' को बढ़ा सकें। यह सब हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

हे प्रभु ईसा मसीह! आपके विश्वास सिपाही, द्विजन्मा दिन पर आपको समर्पित हैं और प्रार्थना कर रहें हैं कि यह हमारे जीवन की माला में शुद्ध मोती बनकर आपकी सेवा में चमकता रहे। हे प्यार के महान बादशाह! आपकी ही प्रशंसा हो और आप ही हमेशा पूजें जाएँ। आमीन!

हे प्रभु! हमें शिक्षित करो, हम आपकी पृथ्वी के सभी मनुष्यों में, सभी प्राणियों में आपके जीवन का अनुभव

करें और इस तरह आपके नियमों के अन्तर्गत राष्ट्र का मार्ग दर्शन करें, ताकि पृथ्वी पर शान्ति और मंगलमय शासन हो। ऐसा हमारे प्रभु ईसा मसीह द्वारा हो। आमीन!

सर्वाधिक पवित्र और पूजनीय त्रिमूर्तियाँ— पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, तीनों रूप, एक प्रभु ईसा मसीह हमारे स्वामी! आप एक मात्र बुद्धिमान उपदेशक, शान्ति के राजकुमार हैं, सात समर्थ आत्माओं के आगे आप का तख़्त है, और उस सुशोभित सभा को ये पूर्ण पुरुष शोभायमान कर रहे हैं। देखने वालों की, संत-महात्माओं की, सभी पवित्र आत्माओं की, प्रत्येक जीवित प्राणी द्वारा अबाध्य प्रशंसा हो, आपका सम्मान, सामर्थ्य और शान बढ़ती जाए और हमेशा के लिए बना रहे। आमीन!

प्रभु की शान्ति, हमारी सारी विचारधारा से गुज़रे, हमारे सब के दिल और दिमाग में प्रभु का ज्ञान और प्यार बसे, और आपके पुत्र ईसा मसीह हमारे प्रभु सर्वशक्तिमान प्रभु की दया धारा— पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हमारे बीच में रहे और सदा-सदा साथ रहे। आमीन!

आपकी घूमती शक्ति के बीच खड़ा हूँ। हर तरफ़ पाता हूँ मैं हाथ आपका। चाहे जागा रहूँ, या रहूँ सोचा, घर पर रहूँ या रहूँ बाहर, हर जगह पाता हूँ घिरा आपसे। ये भाव मेरे हृदय में रहें, अब चाहे घूमूँ, चाहे करूँ आराम, मेरी विषय वासनाएँ मुझ दुर्बल पर कभी साहस न कर पाए, पापों को अपने स्वीकारूँ, क्योंकि प्रभु है मेरे अब अंग संग।

# विभिन्न धर्मों से ली गई प्रार्थनाएँ

## हिन्दू धर्मग्रन्थों से

---

*सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्रपात्।*
*स भूमि विश्वतो वृत्वऽत्यतिष्ठद्दशाङ्.गुलम्।।*

*पुरुष एवेदं सर्व यदभू तं यच्च् भव्यम्।*
*उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति।।*
*एतावानस्य महिमा तो ज्यायांश्च पुरुषा।*
*पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृत दिवि।।*

— ऋग्वेद, पुरुष सूक्त (10.7.90.1-3)

हज़ार सिर वाला, हज़ार आँखों वाला, हज़ार पैरों वाला पुरुष, यह होते हुए भी व सम्पूर्ण जगत को सभी और से आवृत करके, इस परिमाण से वह दस अगुंल अतिक्रान्त करके स्थित है।

यह सब कुछ केवल पुरुष है जो सत्ता में आता रहा है और जो सत्ता में आता रहेगा। इससे भी अधिक वह अमृत्व का संचालक है, और यहाँ पर अन्न से बढ़ने वाले जगत के रूप में अपने आप को प्रकट करता है।

इस पुरुष की महिमा इतनी ही नहीं है, बल्कि कहीं अधिक है जितनी कि वर्णन की गई है। उसका एक चौथाई भाग सारी रचना की उत्पत्ति के रूप में है और उसका तीन चौथाई अमृत्व भाग (ऊपर के मंडलों) में है।

❧ एक परमात्मा प्रत्येक जीवन के अन्दर छिपा बैठा है, सबमें व्याप्त है, सब जीवों की अंतर आत्मा है, सभी कर्मों का दृष्टा है, तमाम सृष्टि की वस्तुओं में निहित है, साक्षी है, हृदय है, परिपूर्ण है, सर्वगुणातीत है।

❧ एक अंत:स्थित, अपने आप में नियंत्रित, जिसने एक बीज को अनेक में विभक्त किया, जो कि उनकी आत्मा है, जो उनकी आत्मा के साथ विराजमान है और निश्चित रूप में देखी जा सकती है। जो ऐसा देखते हैं, केवल उन्हीं को हमेशा का आनन्द प्राप्त होता है, दूसरों को नहीं।

❧ हम उसकी कृपा–दृष्टि को इस प्रकार चुनते हैं, ताकि हम बलिदान के उद्देश्यों और बलिदान के स्वामी का गुणगान कर सकें। दिव्य आशीर्वाद हमें प्राप्त हो मनुष्य के बच्चों पर दयादृष्टि हो। अच्छे संस्कार जो ऊपर उठाने वाले हों हमेशा उनका गुणगान हो। हम दो पैर वालों पर आपकी दया बनी रहे, चौपायों पर दया बनी रहे।

ॐ शान्ति :। शान्ति :। शान्ति :।

# ज़रथुस्ती धर्मग्रन्थों से

1. सब कुछ जानने वाले प्रभु, जीवन के स्वामी, हम महान आनन्द के लिए प्रार्थना करते हैं। लाभप्रद पवित्रता सबसे उत्तम कृपा है। यह ही सच्ची ख़ुशी का स्रोत्र है। यह ख़ुशी उसी के लिए है, जो शुद्ध हृदय से सत्य निष्ठ है।

2. हे प्रभु! पवित्रता के लाभदायक और सर्वश्रेष्ठ मार्ग के द्वारा ही हम आपको देख सकेंगे, साक्षात्कार कर सकेंगे। तभी हम आपके विभिन्न पहलुओं को अनुभव कर सकेंगे, और अंत में आपकी सुख देने वाली उपस्थिति में लीन हो सकेंगे।

3. हे सर्वदृष्टा और अत्याधिक उदार आत्मा! आप मेरी आत्मा को शुद्ध करो। पूर्ण विवेक द्वारा मुझे बल प्रदान करो, भक्ति द्वारा प्रभुता प्रदान करो, धर्म-परायण द्वारा हमें साहस प्रदान करो और परोपकारी मन द्वारा नेतृत्व प्रदान करो। दूसरों को निर्देश देने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान मुझे प्राप्त हो। उस शक्ति को प्रदान करो, जिससे निश्चित रूप से मुझे परोपकारी प्रभु का आशीर्वाद, परिणाम स्वरूप प्राप्त हो। शुद्ध हृदय और मन के द्वारा धर्म के नियमों को मेरे सामने प्रकट करो। तभी ज़रथुस्त पवित्रता में पूर्ण हितैषी विवेक के होते हुए भी अपने आप के जीवन को, उस सर्वदृष्टा प्रभु को समर्पित करेगा। वह अपने बोलने और कर्म की शक्ति, 'आशा' (पवित्र दिव्य आत्मा) और 'सरोशा' (प्रेरणा के देवता) को समर्पित करता है।

4. जैसे 'आहू' (उच्च शासक) अपने इरादे में परिपूर्ण है, वैसा ही आध्यात्मिक गुरु 'रतु' धर्म-परायणता के नियमों द्वारा अपने अधिकार का प्रयोग करता

है। अच्छे कर्मों का पारितोषिक परमात्मा को समर्पित किया जाता है, जो कि उदार मन की भेंट है। जो कोई ज़रूरतमंद को मदद देता है, वह सृष्टिकर्ता से शक्ति पाने का अधिकारी बन जाता है।

5. हे सर्वदर्शी प्रभो! जब मलीन हृदयी मनुष्य मुझे नुकसान पहुँचाना चाह रहे हों, तो भला मेरे अन्दर निहित दिव्य प्रकाश और बुद्धिमत्ता के अलावा मेरी रक्षा कौन करेगा? हे प्रभु! मुझे ऐसे श्रेष्ठ कर्म बताओ, जिन से इस संसार में सत्यता का प्रसार हो, दृढ़ विश्वास की शिक्षाओं को मैं दूसरों को समझा सकूँ। इस लिये हे प्रभु! मुझे बतलाओ कि बुरी शक्तियों पर कैसे विजय पाई जाये? निश्चय ही आपके वे रक्षात्मक शब्द, जो प्रभु की इच्छा से प्रचलित हैं। मुझे 'गुरु' का दान दो, जो ज्ञान के भन्डार से पूर्ण हो, और दोनों जहानों के ज्ञान में पारंगत हो। वह इतना भोला भाला भी हो, ताकि प्रेरणा का देवदूत (सरोशा) अपनी प्यार भरी विचारधारा से मिलता रहे। एक सच्चा गुरु आपका प्यारा प्रतिनिधि है।

6. हे अमर देवों के देव! मैं मन वचन और कर्म द्वारा अपना बलिदान और भक्ति भाव आपको पेश करता हूँ और पूरे हृदय से मैं अपनी इस ज़िन्दगी के अस्तित्व को समर्पित करता हूँ। मैं पवित्रता के मार्ग को प्यार करता हूँ।

7. जीवित प्राणियों में जो कोई भी प्रेम भरे बलिदान में सबसे आगे हैं, वह हमेशा अपने सत्य आचरण के कारण परमात्मा की दृष्टि में रहता है। हम ऐसे तमाम नर-नारियों को, जिन्होंने सेवा को चाहा है, अपनी श्रद्धा पेश करते हैं।

## जैन धर्मग्रन्थों से

*णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं,*
*णमो आयरियाणं,*
*णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वाहूणं*
*एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।*
*मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।*

अरिहन्त (शत्रुओं का नाश करने वाले) को नमस्कार, सिद्धों को नमस्कार, संघों के प्रधान (आचार्य) को नमस्कार, उपाध्याय को नमस्कार, लोक में स्थित सभी सन्यासियों को नमस्कार।

ये पाँचों ही नमस्कार करने योग्य हैं, ये सभी पापों से बचाने वाले हैं और सब मंगलों में प्रधान एवं श्रेष्ठ हैं।

## हीब्रू धर्मग्रंथों से

हे इज़राइल! स्वामी ही हमारा प्रभु है, और स्वामी एक है। ये आप की भी इच्छा है। हे स्वामी! हमारे प्रभु और हमारे पिताओं की भी, ताकि हम आपके सिद्धान्तों पर चलें और आपके आदेशों का पालन करें। हम पाप कर्मों में न जाएँ, प्रलोभनों और घृणा से बचें, दूसरों के अधिकार न छीनें। तमाम बुरी भावनाों को हमारे मनों से हटा लो और हमें सद्कर्म में प्रेरित करो। हे प्रभु! आप अपनी नज़रों में और सभी देखने वालों की नज़रों में, जो हमें देख रहे हैं, दया, भलाई और कृपा प्रदान करो। हम पर दया भाव रखो। वो पवित्र हैं, जो अपने धर्मपरायण लोगों पर दया भरा भाव रखते हैं। आमीन!

'ISRAEL' शब्द 'ISR' (धर्मपरायण) तथा 'EL' (सर्वशक्तिमान) से मिलकर बना है, इसलिए इसका अर्थ है– वह व्यक्ति जो परमात्मा के सिद्धान्तों के अनुसार जीवन व्यतीत करता है।

## बौद्ध धर्मग्रंथों से

**नमस्कार :**

*नमो तस्य भगवतो अर्हतो सम्मासम्बुद्धस्थ- 3*

अर्थात उस भगवान को नमस्कार हो जो पवित्र और ज्ञान से परिपूर्ण है। (इसको तीन बार कहा जाता है)

*त्रिशरण : बुद्धं शरण गच्छामि।।1।।*
*धम्मं शरण गच्छामि।।2।।*
*संघं शरण गच्छामि।।3।।*

*द्विप्वयामि त्रिशरण* : अर्थात दूसरी बार कहकर पुनः इसकी आवृत्ति है।

*तृत्यामि त्रिशरण* : अर्थात तीसरी बार कहकर फिर पुनः इसकी आवृत्ति है।

**पंचशील :**

*पाणातिपाता वेरमणी सिक्खा पदं सादियामि।।1।।*

अर्थात मैं किसी भी प्राणी की हिंसा न करने का व्रत लेता हूँ।

*आदिझदाना वेरमणी सिक्खा पदम् समादियामी।।2।।*

अर्थात मैं चोरी के उद्देश्य से कोई भी वस्तु न लेने का व्रत लेता हूँ।

*कामेशुभेच्छा चारा वेरमणी सिक्खा पदामि समादियामी।।3।।*

अर्थात मैं शारीरिक वासनाओं की बुरी प्रवृत्तियों से बचने का व्रत लेता हूँ।

*मुसावाद्य वेरमणी सिक्खा पदस्सयादियामी।।4।।*

अर्थात मैं असत्यता से बच कर रहने का व्रत लेता हूँ।

*सुरामेमयज्ज पयादिहाम बेरमणी सिक्खा पदं समादियामी।।5।।*

अर्थात मैं शराब और अन्य सभी नशीले पदार्थों से बचकर रहने का व्रत लेता हूँ।

# थियोसॉफ़ी से

## सभी के लिए प्रेरणादायक प्रार्थना :

हे गुप्त जीवन! आप प्रत्येक कण-कण में हिलोर ले रहे हैं।
हे गुप्त ज्योति! आपकी चमक प्रत्येक रचना में है।
हे गुप्त प्रेम! आप सबको गले लगाये हुए हैं।
जो कोई भी अपने आप को, आप के साथ एकरूप
अनुभव करता है।
वह भी हमारे में से ही है ऐसा जानें।

— एनी बैसैंट

# संक्षिप्त जीवनी
# परम संत कृपाल सिंह जी महाराज

*संत कृपाल सिंह जी महाराज* 6 फ़रवरी, 1894 ई. में, ज़िला रावलपिंडी के एक छोटे से गाँव, सय्यद कसराँ में एक संभ्रात सिक्ख घराने में पैदा हुए। रखने वालों ने नाम भी चुन कर रखा– 'कृपाल', जिसने दयामेहर के ख़ज़ाने दोनों हाथों से लुटाये और रूहानियत (आत्मज्ञान) को दौलत से दुनिया को मालामाल कर दिया।

## अध्ययनशील विद्यार्थी

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।' बचपन ही से महापुरुषों के लक्षण आप में दिखाई देने लगे थे। घर से खाने–पीने की जो चीज़ें इन्हें मिलतीं, वे सब अपने साथी बालकों को बाँट देते और आप किसी एकांत स्थान में जाकर ध्यान में लीन हो जाते। इनका बचपन का ज़माना अनगिनत चमत्कारों से भरा पड़ा है, जिसके कारण 6 वर्ष की आयु से ही लोग इन्हें संत मानने लगे थे। इनका विद्यार्थी जीवन ज्ञान प्राप्ति और अध्ययनशीलता की अथक लगन का नमूना था। स्कूल की पढ़ाई के ज़माने में कॉलिज की पूरी लायब्रेरी की किताबें आपने पढ़ डाली थीं।

## ज्ञान प्राप्ति की अनन्य लगन

आप मिशन स्कूल में पढ़ते थे, जहाँ ईसाई पादरी अक्सर लैक्चर देने आया करते थे। एक बार एक पादरी साहब स्कूल में आए और एक एक कक्षा में जाकर विद्यार्थियों से उनकी इच्छाओं–आकांक्षाओं और जीवन के आदर्श के बारे में कई सवाल पूछे। जब इनकी (कृपाल सिंह जी की) कक्षा में पहुँचे तो पादरी साहब ने पूछा, "बच्चों! तुम किस लिए पढ़ रहे हो? पढ़–लिख कर तुम क्या बनना चाहते हो?" अपनी–अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न उत्तर लड़कों ने दिए। किसी ने कहा, मैं पढ़ाई ख़त्म करके डॉक्टर बनूँगा, किसी ने कहा, मैं इंजीनियर बनूँगा, किसी ने कुछ, किसी ने कुछ

कहा। रस्मी से जवाब थे जिनके पीछे एक ही उद्देश्य था कि पढ़–लिख कर रोज़ी पैदा की जाए। जब कृपाल सिंह जी की बारी आई तो उन्होंने कहा, “I read for the sake of knowledge,” अर्थात मैं ज्ञान प्राप्ति के लिए पढ़ रहा हूँ। पादरी साहब ये जवाब सुनकर बहुत ख़ुश हुए और भविष्य–वाणी की कि ये लड़का एक दिन दुनिया में नाम पैदा करेगा।

यह जवाब ज्ञान प्राप्ति के लिए अनन्य लगन का परिचायक था, जो इन्हें उस परम ज्ञान की मंज़िल तक ले गयी, जिसको पाकर सब कुछ जाना हुआ और पाया हुआ हो जाता है।

## जन-कल्याण की प्रेरणा

संत कृपाल सिंह जी ने पूर्व और पश्चिम के परमार्थाभिलाषियों के पथ–प्रदर्शन के लिए अनेकों ग्रंथ लिखे हैं, लेकिन सबसे बड़ा ग्रंथ उनका अपना जीवन है, जिसके महत्त्वपूर्ण दृष्टांत अंधेरी रात में चमकते तारों के समान जीवन पथ के यात्री को रास्ता दिखाते हैं। 12 वर्ष की आयु में श्री रामानुज के जीवन वृत्तांत में उन्होंने पढ़ा कि जब वे गुरु से दीक्षा लेकर वापस घर लौटे, तो गाँव के लोगों को इकट्ठा करके गुप्त मंत्र, जो गुरु से मिला था, उन्हें बताने लगे। लोगों ने टोका कि यह तुम क्या कर रहे हो, गुरुमंत्र बताना महापाप है, नरकों में जाओगे। रामानुज ने कहा, ″अकेला मैं ही नरकों में जाऊँगा ना! यह सारे लोग तो बच जाएँगे।″ आप फ़रमाते हैं, ″यह वृत्तांत पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ और मैंने सोचा कि यदि यह आत्मज्ञान की यह दात कभी मेरे हाथ आई तो मैं भी उसे इसी तरह मुफ़्त लुटा दूँगा।″

## जीवन का लक्ष्य

1911 ई० में आपने मैट्रीकुलेशन परीक्षा पास की। उस वक़्त आपकी आयु 17 वर्ष की थी। अब यह सवाल सामने आया, जो पढ़ाई ख़त्म होने पर हरेक विद्यार्थी के सामने आता है, कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? मुझे ज़िंदगी में क्या काम करना है? आप फ़रमाते हैं कि ″पूरे सात दिन मैंने इस सोच में गुज़ार दिए और अंत में फ़ैसला किया कि मेरे लिए परमात्मा पहले है, दुनिया बाद में।″ फिर सारा जीवन इस आदर्श– प्रभु प्राप्ति में लगा दिया।

## महान जीवन की तैयारी

महाराज कृपाल सिंह जी के बचपन और विद्यार्थी जीवन से यह तथ्य दिन के उजाले की तरह सामने आता है कि उन्हें शुरू ही से उस महान कार्य का, जो आगे चलकर उन्हें करना था, पूर्ण आभास था। बचपन ही से उनका हर क़दम उस महान जीवन की तैयारी के लिए उठता रहा। उस जीवन के लिए असाधारण संस्कार एवं क्षमताएँ आप लेकर आए थे। चार वर्ष की आयु मे ही वो ध्यानास्थित होकर अन्तर दिव्य मंडलों में विचरने लगे थे। आप फ़रमाते थे कि सुरत अर्थात आत्मा के सिमट जाने से नींद का काम पूरा हो जाता है। आत्मा पिण्ड (स्थूल शरीर) को छोड़ ऊपर दिव्य मण्डलों की सैर करके वापस आती है तो शरीर recharge जाता है अर्थात नया जीवन प्राप्त करता है। ये उच्च प्रवृत्तियाँ और संस्कार आप में जन्मजात थे और इनसे आप ने जीव–कल्याण के महान कार्य में बड़ा काम लिया।

## प्रभु–प्राप्ति की ओर

उन्हीं दिनों एक घटना घटी जिसने प्रभु की तलाश की चिंगारी को, जो इनके हृदय में सुलग रही थी, एक धधकती ज्वाला बना दिया। लाहौर में आप एक जवान औरत का हाल देखने गए, जो बीमार थी और जीवन के अंतिम स्वाँस ले रही थी। सहसा वह अपने रिश्तेदारों से कहने लगी, "मेरा कहा–सुना माफ़ करना, मैं जा रही हूँ," यह कहकर प्राण त्याग दिए। ये दृश्य देखकर आप सोचने लगे, वह क्या चीज़ थी जो इस औरत के शरीर से निकल गई है, जिससे यह मुर्दा पड़ी है और हममें वह चीज़ अभी मौजूद है? वह कौन–सी ताक़त है, जो हाड़–माँस के इस शरीर को चलाती है और जब इससे निकल जाती है, तो मिट्टी का ढ़ेर बाक़ी रह जाता है? शव के साथ आप श्मशान भूमि पहुँचे। वहाँ उस जवान औरत की चिता के पास ही एक बूढ़े आदमी की लाश पड़ी थी। यह दृश्य देखकर ख़्याल आया कि मौत जवानी और बुढ़ापे में कोई फ़र्क नहीं देखती। थोड़ी दूर आगे एक स्मारक पर लिखा था– "ओ जाने वाले, कभी हम भी तेरी तरह चलते फिरते थे, लेकिन आज मिट्टी का ढ़ेर होके पाँव तले पड़े हैं।" एक के बाद एक, यह तीन दृश्य देखकर दिल को चोट लगी। इसके बाद रातों की नींद

उड़ गई। प्रभु प्रियतम के वियोग में यह अवस्था बनी कि रात को आँसुओं से सारा तकिया भीग जाता। इस तलाश ने कई रंग दिखाये। किताबें पढ़ी, हरेक समाज के धर्मग्रंथ पढ़े। साधु महात्माओं से मिले– क्या क्या नहीं किया? यह सवाल आख़िर हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के चरणों में जाकर हल हुआ।

जीवन की पवित्रता, आत्म–निरीक्षण और निरन्तर अभ्यास से आपको त्रिकालदर्शिता प्राप्त हो गई– पीछे क्या हुआ, आगे क्या होने वाला है, सभी बातें साफ़ दिखाई देने लगीं। आपने प्रार्थना की, "हे प्रभु! मैं तो तुझे पाना चाहता हूँ। ये दैवी शक्तियाँ जो तूने दया करके मुझे प्रदान की हैं, इनका शुक्रिया! इन्हें अपने पास रख। तुझसे यही माँगता हूँ कि मेरा जीवन एक साधारण व्यक्ति की तरह गुज़रे। दूसरे यह कि यदि मेरे हाथों किसी का भला हो तो मुझे उसका कोई अहसास न हो।" यह दो प्रार्थनायें 'कृपाल' के विशाल, प्रभु प्रेम और विश्व प्रेम से ओत–प्रोत हृदय की अनुपम झाँकी प्रस्तुत करती हैं।

## सत्गुरु दयाल से भेंट

धर्मग्रंथों के अध्ययन से आप इस निष्कर्ष पर तो पहुँच चुके थे कि परमार्थ में सफलता के लिए गुरु का मिलना ज़रूरी है, पर हर वक़्त मन में यह धड़का लगा रहता था कि किसी अधूरे से वास्ता न पड़ जाए, सारा जीवन बर्बाद न चला जाए। इनके हृदय की सच्ची पुकार प्रभु ने सुनी और वक़्त के संत–सत्गुरु, श्री हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज का दिव्य स्वरूप इन्हें अंतर में आने लगा। यह 1917 ई० की बात है, हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज जी के चरणों में जाने से सात साल पहले की। बाबा सावन सिंह जी महाराज से मुलाकात भी एक विचित्र संयोग था। 1924 ई० की बात है, आप लाहौर में मिलिट्री अकाउन्ट्स के दफ़्तर में काम करते थे। नदी का तट देखने का शौक़ आपको ब्यास ले गया। हुज़ूर बाबा सावन सिंह महाराज के चरणों में पहुँचे, तो देखा कि ये तो वही महापुरुष हैं, जिनका दिव्य स्वरूप साल साल से अंतर में पथ–प्रदर्शन करता रहा था। पूछा, "हुज़ूर, श्री चरणों में लाने में इतनी देर क्यों की?" हुज़ूर महाराज मुस्करा दिये। कहने लगे, "यही वक़्त मुनासिब था।"

## आदर्श शिष्य

गुरु की तलाश में कड़ी से कड़ी कसौटी आपने अपने सामने रखी। जब वह मिल गया तो तन, मन, धन सब कुछ गुरु को अर्पण कर दिया। गुरु भक्ति की और ऐसी की कि गुरु में अभेद हो गये। इनके महान कल्याणकारी जीवन की मोटी–मोटी बातों को भी बयान करने की यहाँ गुंजाइश नहीं है। वह करन–कारण प्रभु–सत्ता, उसे नाम कहो, शब्द कहो, जो मानव तन में प्रकट होकर जीवों का कल्याण करती चली आई है, इनके अन्तर में प्रकट होकर पूर्व से पश्चिम तक जीवों का प्रभु से जोड़ती रही। यह उसका प्रताप था कि भारत के सभी वर्गों जातियों व समाजों के अतिरिक्त यूरोप और अमरीका में सभी मतों के ईसाइयों, इसराइल के यहूदियों, भारत, पाकिस्तान और अरब देशों के मुसलमानों, अफ़्रीका और अमरीका के हब्शियों, तिब्बत, मलाया व अन्य पूर्वी देशों के बौद्धों का प्रेम प्यार व सम्मान उनको प्राप्त था। इनके दीक्षितों में विश्व के लगभग सभी देशों, जातियों, विचारधाराओं तथा समाजों के लोग शामिल हैं।

महाराज कृपाल सिंह जी को पुरबले संस्कारों तथा गुरु कृपा के प्रताप से देह स्वरूप में गुरु (परम संत श्री हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) से मिलाप होने से सात साल पहले ही गुरुमुख की अवस्था प्राप्त हो चुकी थी। लम्बी खोज के बाद जब देह स्वरूप में सत्गुरु दयाल के दर्शन हुए तो बरबस इनके मुख से निकला, "हुजूर! अपने चरणों में लाने में इतनी देर क्यों की?" कोई पूछ–ताछ नहीं, कोई सवाल–जवाब नहीं, सात साल से अंतर दिव्य मण्डलों में जो महापुरुष मार्गदर्शन करते रहे, उनसे सवाल–जवाब की गुंजाइश ही कहाँ रह गयी थी? शिष्य के सवाल के पीछे लंबी खोज की, विरह वेदना की, लंबी कहानी थी। गुरु के उत्तर में उसकी (गुरु के मानव तन में काम करने वाली प्रभु–सत्ता की) मौज या इच्छा का इशारा था, स्पष्ट संकेत था इस बात का कि इस सारी क्रिया में इंसानी कोशिशों का दख़ल नहीं, यह उस परम सत्ता का काम है, जो गुरु के चोले में प्रकट होकर जीवों का उद्धार अर्थात उन्हें तन–मन से ऊपर लाकर प्रभु से जोड़ने और मिलाने का काम करती है। गुरु शिष्य की कहानी उस पहली मुलाक़ात ही में अपनी चरम सीमा में पहुँच गयी, किन्तु प्रभु रूप महापुरुषों

का जीवन अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए हुआ करता है, वे ज़िंदगी की कलम से लिखी एक खुली किताब होते है, जीवन पथ के यात्रियों के मार्गदर्शन के लिए। अपनी जीवन यात्रा में वे जिज्ञासुओं के लिए पदचिन्ह छोड़ जाते हैं, इस लिए उनकी कहानी चरम पर पहुँच कर भी एक शुरूआत बन जाती है। जैसे अध्यापक प्राइमरी में प्राइमरी की, मिडिल में मिडिल की और एम. ए. में एम. ए. की योग्यता दर्शाता है, इसी तरह महापुरुष पूर्ण होते हुए भी गृहस्थी, जिज्ञासु, सेवक और शिष्य– सारे आदर्शों को अपने जीवन में प्रस्तुत करते हैं।

## गुरु और गुरुमुख की कहानी

ग्रहणशीलता से पिता–पूत की, गुरु और गुरुमुख की कहानी शुरू होती है जो विकास की विभिन्न स्थितियों से गुज़र कर उस मंज़िल पर पहुँचती है जहाँ पिता–पूत में, गुरु और शिष्य में कोई अंतर नहीं रह जाता और वह (शिष्य) सेंट पॉल के शब्दों में पुकार उठता है :

"It is I, not now I, it is Christ but lives in me."

अर्थात "यद्यपि मैं वही हूँ, परन्तु अब 'मै' नहीं रहा, क्योंकि अब मेरे अन्तर में निवास करने वाला मसीह है।" यह प्रेम की पुरातन परंपरा है।

प्रेम गली अति सांकरी जा में दो न समांहि।

यहाँ दो से एक होकर चलना पड़ता है। शिष्य अपना अस्तित्व गुरु में लीन कर देता है। सूफ़ियों की परिभाषा में वह फ़ना–फ़िलशेख़ हो जाता है, गुरु में समा जाता है। जो प्रभु में समा गया वो (सूफ़ियों की इस्तेलाह या परिभाषा में) फ़ना–फ़िल्लाह हो जाता है, प्रभु में समा जाता है। महाराज कृपाल सिंह जी के शब्दों में "गुरु God-man (प्रभु में अभेद) है, अर्थात, God (परमात्मा) जमा इंसान। जो Guru-man अर्थात गुरुमुख बन गया, प्रभु उस में आ गया कि नहीं?"

Receptivity या ग्रहणशीलता (गुरु से) जो संत कृपाल सिंह जी महाराज को पुरबले संस्कारों और गुरु कृपा की देन थी, उसे कैसे पैदा किया जाए? एक ऐसा शिष्य जिसकी पिछली background या पृष्ठभूमि नहीं, उसे कैसे प्राप्त कर सकता है? इस संदर्भ में महाराज कृपाल सिंह जी का मशहूर कथन सामने आता है, "एक इंसान ने जो किया, वही काम

अन्य दूसरा इंसान भी कर सकता है यदि उसे सही मार्गदर्शन और मदद मिले।" उन के गुरुपद काल ही में नहीं शिष्यत्व काल में भी इस बारे में (गुरु से दिल से दिल को राह बनाने के बारे में) बहुत लोगों ने उनके मार्गदर्शन और सहायता से लाभ उठाया। अपने प्रवचनों और लिखतों में गुरु से यक़दिली बनाने का मज़मून का (जिसे वो परमार्थ का मूल और आधार मानते थे) ऐसा सुविस्तार और बोधगम्य स्पष्टीकरण उन्होंने किया है और ऐसी पते की बातें बताई हैं, कि अध्यात्म के पूरे साहित्य में कोई मिसाल नहीं मिलती। इस सिलसिले में गुरु दर्शन पर वे बड़ा ज़ोर देते थे। गुरु दर्शन के बारे में बड़ी गूढ़ बातें आप बताया करते थे। दर्शन के प्रसंग में अपने सत्संग प्रवचनों में हुज़ूरे–पुरनूर उपासना का आदर्श प्रस्तुत करते थे (उप–आसन) अर्थात पास बैठना। पास बैठना ये नहीं हैं कि,

दिल दिया कहीं और ही, तन साधु के संग।

साधु संग, अर्थात साधु के पास बैठना यह है कि दर्शन में इतना लीन हो जाए कि तन–मन की सुधि भूल जाए। अपने जीवन का दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए फ़र्माया करते थे :

"हुज़ूर अपने काम में लीन होते, मैं चुप–चाप बैठा देखता रहता। अभिनेता होता है ना, उसकी हर बात में अभिनय होता है, खाने–पीने में, उठने–बैठने में, बोलने–चालने में। एक तो उसका वास्तविक स्वरूप, जो वह स्वयं आप है (अर्थात परमात्मा), एक जो वो बन के आया है, जो पार्ट वह करता है (अर्थात इन्सान)। हमारी तरह ही मानव देह वह रखता है, लेकिन वह कुछ और भी है। वह सदेह–परमात्मा है। चित्तवृत्ति एकाग्र कर के चुप–चाप बैठे देखते रहो, तो God-in-man की, प्रभु–सत्ता जो गुरु के मानव तन में काम करती है, उसकी झलक मिलती है।"

जब आप श्री हुज़ूर महाराज जी के चरणों में जाते तो 'दीदा शौ यक़सर' अर्थात सर्वथा आँख बन जाते, अपलक नेत्रों से चुप–चाप देखते रहते। दर्शन में ऐसे लीन हो जाते कि तन–बदन की सुधि न रहती। पास बैठे लोगों को एक आनन्द की अनुभूति होती, मुफ़्त नशा मिल जाता। एक दिन आप सत्गुरु दयाल के दर्शनों में लीन थे, कोई और वहाँ मौजूद न था। एक भक्त महिला ने देखा, तो शोर मचा दिया, "मैंने आप दोनों की

चोरी पकड़ ली है।" सत्गुरु दयाल हंसकर कहने लगे, "क्या चोरी पकड़ ली है?" "आप दोनों देह में नहीं हो, उठकर आँखों में आ गए हो।"

ऐसे कई दृष्टान्त उनकी जीवन गाथा में मिलते हैं जिन पर अमर जीवन की मुहर लगी हुई है, जो उन्होंने ख़ुद पाया और जिस का अंश दुनिया भर के परमार्थभिलाषियों को देते रहे। उनकी हर लिखत, हर कथन उनका, उस जीवन का, abundance of heart का, उनके करुणामय हृदय के अनन्त स्रोत का, रंग और असर लिए हुए है। उदाहरणार्थ उपरोक्त विषय (अर्थात परमार्थ में रसाई, जो गुरु से एकात्मता की देन है), पर उनका ये सारगर्भित कथन, "मैंने सत्गुरु दयाल से कभी कोई सवाल नहीं किया। बस चुप–चाप बैठे दर्शन करता रहता। देखने–देखने में मुझे सब कुछ मिल गया, बिन मांगे मिल गया।"

## जीवन की पड़ताल

जीवन की पड़ताल की डायरी जो परमार्थाभिलाषियों तथा सतपथ के यात्रियों को संत कृपाल सिंह जी महाराज की ख़ास देन है तथा यह उनके अपने जीवन, अनुभव और विश्व के सारे धर्मों–मज़हबों–मतों की शिक्षाओं के तुलनात्मक अध्ययन का निचोड़ है। उन्होने स्वयं सात साल की उम्र में डायरी रखना शुरू कर दिया था, जिसमें दिन भर की ग़लतियों की कड़ाई और बेलिहाज़ी से लिखते और आगे के लिए उन ग़लतियों से बचने का यत्न करते। आगे चल कर जब उन्होंने गुरु पद पर कार्य शुरू किया तो आत्म–निरीक्षण की डायरी को एक ऐसा वैज्ञानिक रूप दिया जिसमें दुनिया के सारे धर्मग्रंथों और आज तक आए सारे महापुरुषों की शिक्षाओं का निचोड़ डायरी में प्रस्तुत कर दिया और अपने शिष्यों और सत्संगीजनों को डायरी के द्वारा अपनी त्रुटियों को चुन–चुन कर बाहर निकालने पर ज़ोर देते रहे। डायरी के विषय में आप फ़रमाते थे कि इंसान कुछ भी न करे, सच्चाई के साथ केवल डायरी भरना शुरू कर दे, तो उसका जीवन पलटा खा जाएगा और दिल का दर्पण साफ़ हो कर सत्य की झलक उसमें पड़ने लगेगी। डायरी के बारे में हुज़ूर महाराज जी ने विस्तार के साथ कहा और लिखा है। यहाँ उनका एक ही कथन दोहराना काफ़ी है कि "हमें पता ही नहीं हम कहाँ खड़े हैं। यह पता हो कि हम गंदगी में बैठे हैं तो उससे निकलने

की कोशिश भी करेंगे। हमें पता ही नहीं हममें क्या त्रुटियाँ है। अपनी त्रुटियों को देखें, तभी पता चले। अपनी तरफ़ नज़र मार कर देखें तो दूसरों के दोष निकालने की फ़ुर्सत ही न मिले।"

अपने व्यस्त–अति–व्यस्त जीवन में उन्होंने कई किताबें लिखी जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण किताब, वर्तमान युग का महान धर्मग्रंथ, 'गुरुमत सिंद्धात' है। यह अमर रचना, जो गुरुमुखी भाषा में है, दो भागों में, दो हज़ार पृष्ठों में फैली हुई है। इसमें गुरुग्रंथ साहिब और दुनिया के सभी समाजों के धर्मग्रंथों के प्रमाण देकर सिद्ध किया गया है कि धर्मग्रंथ, जो आज तक लिखे गये और महापुरुष, जो आज दिन तक आए, सबकी मूलभूत तालीम एक ही है। इस महान ग्रंथ में दुनिया के सारे धर्मग्रंथों का सार प्रस्तुत किया गया है। पश्चिम के परमार्थाभिलाषियों के लिए आपने अंग्रेज़ी भाषा में कई ग्रंथ रचे। आपकी पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश, इण्डोनेशियन, रूसी और ग्रीक (भारत के अतिरिक्त विश्व की कुल 14 भाषाओं में) हो चुका है।

## अध्यात्म का सार्वभौम प्रसार

36 वर्ष की सरकारी नौकरी के बाद, मार्च 1947 ई॰ में, आप डिप्टी ंअसिस्टेन्ट कन्ट्रोलर ऑफ़ मिलिट्री एकाउन्ट्स के पद पर रिटायर हुए और उसके बाद, सत्गुरु दयाल हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के मिशन को पूरा करने में लगे रहे, जो 2 अप्रैल, 1948 ई॰ को अपना रूहानियत का, अर्थात जीवों के कल्याण का काम, आपको सौंप कर परमधाम सिधार गये। गुरु के आदेशानुसार आपने 1948 ई॰ में रूहानी सत्संग और 1951 में दिल्ली में 'सावन–आश्रम' की स्थापना की, जहाँ जात–पात, रंग–वर्ण, देश व समाज के भेद–भाव के बग़ैर हरेक परमार्थाभिलाषी को, आत्मतत्व का व्यक्तिगत अनुभव उन्होंने प्रदान किया। धर्म को और प्रभु को मानने वाले लोगों को– वो किसी भी धर्म, देश, जाति, नस्ल के हों– आपस में जोड़ने और मिलाने की साँझी धरती, common ground, जो हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के ज़माने में क़ायम हो चुकी थी और जिसके रूहानी फैज़ (पारमार्थिक लाभ) का सिलसिला (अर्थात परमार्थाभिलाषियों को मन–इन्द्रियों से ऊपर लाकर आत्मानुभव

प्रदान करने के कार्य का सिलसिला) जो भारत के कोने–कोने में और भारत से बाहर यूरोप, इंग्लैंड और अमरीका तक फैल चुका था, उस काम को उन्होंने अपने 26 वर्ष की पल–पल कार्यरत, व्यस्त–अति–व्यस्त रूहानी पादशाही में और आगे बढ़ाया और इतना आगे फैलाया कि यूरोप के लगभग सभी मुल्कों, अफ़्रीका के विभिन्न देशों, इंग्लैंड, अमरीका (उत्तरी और दक्षिणी अमरीका) कैनेडा, पूर्व में मलाया, कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया आदि देशों में रूहानी सत्संग की 250 से ऊपर शाखायें उनके जीवन काल में स्थापित हो चुकी थीं।

## विश्व यात्राएँ

1955 में उन्होंने पश्चिम–यूरोप, इंग्लैंड, अमरीका आदि की यात्रा की और लोगों को आत्मानुभव की दात दी। उस ऐतिहासिक विदेश यात्रा में उन्होंने, जो महान कार्य सार्वभौमिक स्तर पर उन्हें करना था, उसकी पक्की नींव रखी और अपने महान सत्गुरु की रूहानी दात के डंके सारी दुनिया में बजा दिये। पश्चिमी देशों में भाषण पर टिकट लगता है, जिसका एक हिस्सा वक़्ता को मिलता है। महाराज जी ने हर जगह free talks (मुफ़्त व्याख्यान) दीं। लोगों ने उन्हें धन देना चाहा तो उन्होंने कहा, "कुदरत की सारी दातें– रोशनी, पानी, हवा– मुफ़्त हैं और सबके लिए हैं। रूहानियत (आत्मज्ञान) भी कुदरत की देन है। वह सब के लिए है और सबको मुफ़्त मिलेगी।" दो वर्ष पश्चात, 1957 में दिल्ली में वे सर्व–सम्मति से 'World Fellowship of Religions' (विश्व सर्वधर्म संघ) के प्रधान चुने गये, जिसे उसके संयोजक, मुनि सुशील कुमार जी महाराज एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का रूप देना चाहते थे। संत जी ने उसका संविधान बनाया और उस संस्था के अन्तर्गत जो चार विश्व सम्मेलन, 1957 में दिल्ली में, 1960 में कलकत्ता में और 1963 और 1970 में फिर दिल्ली मे हुए, वे सब उनकी अध्यक्षता में हुए। इन सम्मेलनों के फलस्वरूप धर्मों का एक शक्तिशाली common platform या सयुंक्त मंच बना, विभिन्न धर्मों के लोगों के एक जगह मिल बैठने और विचार–विमर्श करने की प्रथा चली, जिससे आपस की ग़लतफ़हमियाँ दूर हुईं और लोग एक–दूसरे के क़रीब आने लगे, भेद–भाव दूर हुए, धर्मांधता, तास्सुब, तंगदिली, कम हुई और

समन्वय और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा मिला। मगर उसके साथ ही लोगों में अपने–अपने समाज को आगे बढ़ाने की भावना बनी रही, बल्कि और मज़बूत हुई और ऐसी आवाज़ें सुनाई देने लगीं, "दुनिया भर के हिन्दुओं, एक हो जाओ, मुसलमानों, एक हो जाओ।" इस चीज़ को देखकर महाराज जी इस नतीजे पर पहुँचे कि अब इसके बाद एक और क्रान्तिकारी क़दम आगे बढ़ाना होगा।

धर्मों और मज़हबों का– सभी समाजों का– उद्देश्य तो यही है न कि इंसान नेक–पाक–सदाचारी बनें, सही मानों में इंसान बनें। यह सोचकर उन्होंने एक महान क्रान्तिकारी क़दम उठाने का फ़ैसला किया, जो मानव केन्द्र की स्थापना और 'विश्व मानव एकता सम्मेलन' के रूप में दुनिया के सामने आया।

1962 में ईसाईयों की डेढ़ हज़ार वर्ष पुरानी धर्म संस्था, 'Sovereign Order of St. John of Jerusalem, Knights of Malta' ने, जो मुस्लिम–ईसाई धर्मग्रंथों में 'Knight Templars' कहलाते थे, उन्होंने महाराज जी को 'Grand Commander' की उपाधि से सम्मानित किया। इसके लिए उन्हें अपने डेढ़ हज़ार वर्ष पुराने संविधान में संशोधन करना पड़ा। सिक्ख समाज के एक महापुरुष को धर्मवीर मानकर उन्होंने स्वीकार किया कि धर्म और आस्तिकता ईसाईयों का एकाधिकार नहीं। कैथोलिक ईसाईयों के धर्मगुरु पोप ने आपसे भेंट करने के बाद ग़ैर–ईसाइयों से मेल–जोल बढ़ाने की घोषणा की और इस हेतु जो सलाहकार समिति बनायी, उसमें महाराज कृपाल सिंह जी का नाम भी शामिल किया।

1963 में हुज़ूर दूसरी बार विश्व यात्रा पर गये। तब तक रूहानी सत्संग की दो सौ शाखायें सारी दुनिया में फैल चुकी थीं। इस यात्रा में उन्होंने रूहानी सत्संग की शाखाओं का गठन किया, नई शाखायें स्थापित कीं, नए परमार्थाभिलाषियों को नामदान दिया और साथ ही मानव एकता और विश्व सर्वधर्म सम्मेलन के common platform का संदेश लोगों को दिया। दूसरी विश्व यात्रा में हुज़ूर महाराज जी ने विभिन्न स्तरों पर काम किया। वे हुक़्मरानों (विभिन्न देशों के सत्ताधीशों) से मिले और उन्हें बताया कि प्रभु ने लाखों लोगों की सुरक्षा और कल्याण का जो काम उन्हें सौंपा है, उसे पूरी ईमानदारी के साथ पूरा करें। यदि पड़ोसी देश अव्यवस्थित

या कमज़ोर पड़ जाए, तो वे उसकी मजबूरी का लाभ उठा कर उसका शोषण न करे, बल्कि उसकी सहायता करें। वे राजनीतिज्ञों, जन–नायकों, धर्माचार्यों, सभी से मिले। ईसाई समाज की प्राचीनतम धर्म संस्था से सम्मान प्राप्त करने के कारण उनके लिए सारे गिरजों के दरवाज़े खोल दिए गए थे और इस यात्रा की अधिकतर talks (प्रवचन) उन्होंने गिरजों में दी, बल्कि नामदान तक गिरजों में दिया। ये बात आज तक नहीं हुई थी। अगस्त 1972 से जनवरी 1973 तक, पाँच महीने की अपनी तीसरी और आख़िरी विश्व यात्रा में, हुज़ूर महाराज ने सिर्फ़ एक काम किया– खुले आम लोगों को नामदान देने का काम। उपदेश–प्रवचन के बाद अगले दिन सबको भजन पर बिठा दिया जाता और नामदान अभिलाषियों को, हरेक को नामदान दिया जाता।

## मानव केन्द्र की स्थापना

1969 में हुज़ूर महाराज जी की हीरक जयन्ती सब समाजों ने मिल कर मनायी। विश्व एकता और राष्ट्र नवचेतना के अग्रदूत और मार्गदर्शक का इससे बढ़कर अभिनन्दन नहीं हो सकता था कि उनकी हीरक जयन्ती का वर्ष राष्ट्रीय एकता वर्ष के रूप में मनाया गया। सभी समाजों ने उस वर्ष राष्ट्रीय एकता के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने का प्रण किया। महाराज जी मंच पर भाषण करके संतुष्ट हो जाने वाले नहीं थे। उसी वर्ष उन्होंने मानव केन्द्र की योजना बनायी। उसमें श्री काका साहिब कालेलकर, प० दीनानाथ दिनेश और अन्य महापुरुषों को साथ लिया और 1970 में, देहरादून में मानव केन्द्र का भव्य स्वरूप, भारत का सबसे बड़ा पक्का अण्डाकार सरोवर, बाग़, अस्पताल आदि बनकर तैयार हो गये। हीरक जयन्ती के अवसर पर अपनी जन्मतिथि, छः फ़रवरी के अनुरूप, छः शब्दों में उन्होंने अपनी तालीम का जो निचोड़ पेश किया था, 'भले बनो, भला करो, एक रहो'– 'मानव–केन्द्र' उसका साकार स्वरूप था।

## विश्व मानव एकता सम्मेलन

विश्व सर्वधर्म सम्मेलन के महान कार्य और उसके व्यापक प्रभाव का उन्हें पूरा अहसास था। लेकिन उन्होंने देखा और अपने प्रवचनों और किताबों में कहा और लिखा कि समाजों के विवेकवान लोग (नेतागण,

धर्माचार्य) तो बहुत हद तक एक हो गए है और भेद–भाव से ऊपर उठ गए हैं, लेकिन उनके अनुयायियों में वो बात पैदा नहीं हुई। तभी उन्होंने धर्म की बजाय मानव और मानवता के आधार पर एकता सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया। विश्व के इतिहास में अपने ढंग का यह पहला प्रयास था। इससे पहले सम्राट अशोक और हर्ष के ज़माने में जो सम्मेलन हुए, वे धर्म के आधार पर हुए थे। दिल्ली और पूरे देश में इतना बड़ा विश्व स्तर का सम्मेलन इससे पहले कभी नहीं हुआ था। विभिन्न देशों के पाँच सौ से अधिक प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए। भारत के प्रतिनिधि उनके अतिरिक्त थे। इस सम्मेलन की एक बड़ी विशेषता यह थी कि यद्यपि इसके लिए धन और साधन रूहानी–सत्संग ने जुटाये, लेकिन महाराज जी ने ये सम्मेलन रूहानी–सत्संग की तरफ़ से नहीं किया, बल्कि सब समाजों के सम्मिलित तत्वावधान में किया। उन्होंने सम्मेलन के आठ सचिव नियुक्त किए जो विभिन्न समाजों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। महाराज जी के शब्दों में, "परमात्मा ने इंसान बनाये। उसने मुहर (ठप्पा) लगा के नहीं भेजा कि यह हिन्दू है, यह मुसलमान। समाजें इंसान ने बनाईं, इसलिए कि इंसान सही मा'नों में इंसान बने, नेक–पाक–सदाचारी बने, इंसान इंसान के काम आये, जिससे उसकी जीवन यात्रा सुख से व्यतीत हो और फिर सब मिलकर, जहाँ जिस समाज में कोई है, उसमें रहते हुए और अपनी–अपनी समाज मर्यादा का पालन करते हुए, उस लक्ष्य को पाये जो मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य और सब समाजों का साँझा आदर्श है। समाजें इंसान के लिए बनी, इंसान समाजों के लिए नहीं बना था। मगर वह मक़सद किनारे रह गया। हम समाजों के उद्देश्य (मानव निर्माण और प्रभु प्राप्ति) को भूलकर अपने–अपने समाजों को ही बनाने–सँवारने में लग गए।" विश्व मानव एकता सम्मेलन में हुज़ूर महाराज जी ने इंसान और इंसानियत के आधार पर एकता का आदर्श पेश किया। उन्होंने कहा कि, "इंसान सब एक है। बाहर की और अंदर की बनावट सबकी एक है। एक ही तरह से सब पैदा होते हैं और मरते हैं। वह हक़ीक़त सबमें हैं, सबकी पैदा करने वाली, प्रतिपालक और जीवनाधार है। एकता तो आगे ही मौजूद है, मगर हम भूल गए हैं।" उस व्यापक जन्मजात एकता के आधार पर उन्होंने इंसान इंसान को मिलाने का ये महान प्रयास किया।

पहली अगस्त 1974 में (महाप्रयाण से 20 दिन पहले) भारत के संसद भवन में उनके सम्मान में एक सभा आयोजित की गयी जिसमें उनका मानपत्र प्रस्तुत किया गया। इस सभा की अध्यक्षता संसद के स्पीकर श्री गुरदयाल सिंह ढिल्लों ने की। संसद के इतिहास में ये पहला मौक़ा था जब संसद सदस्यों की ओर से संसद भवन में एक आध्यात्मिक महापुरुष को सम्मानित किया गया।

संत कृपाल सिंह जी महाराज ने विभिन्न स्तरों पर और दिशाओं में विश्व में नव जाग्रति और नव चेतना के जो बीज बोए, वे एक दिन फल लायेंगे और वह वक़्त आ गया है। जैसा कि वे आख़िरी दिनों में कहा करते थे, "सतयुग कोई आसमानों से फट पड़ने वाला नहीं, कलयुग के घोर अंधकार ही से उसका अभ्युदय होगा और वह दिन दूर नहीं। यह जो नयी चेतना, नयी जाग्रति सब समाजों में दिखाई दे रही है, यह प्रभु प्रेरणा से है और सतयुग के अभ्युदय की निशानी है।"

## सावन-कृपाल दयाधारा का नया दौर

हुजूर संत कृपाल सिंह जी महाराज अपने जीवन की संध्या–बेला अक़्सर कहा करते थे कि मेरा मिशन मेरे बाद भी जारी रहेगा और दिनों–दिन आगे बढ़ेगा और फैलेगा। आज, उनके अनामी पद लीन होने के दस साल बाद, "सावन–कृपाल रूहानी मिशन" के अंतर्गत हम इन दो महापुरुषों की विशाल दयाधारा को नयी–नयी दिशाओं में बढ़ते–फैलते देख रहे हैं। इतनी तेज़ी से काम आगे बढ़ा–फैला है कि देख कर बुद्धि चकरा जाती है। आज वही कार्य संत दर्शनसिंह जी महाराज के उत्तराधिकारी, संत राजिन्दर सिंह जी महाराज की देखरेख में फल–फूल रहा है।